दुर्गानन्द मण्डल

संचयिका

हम पुछैत छी- मुन्नाजी
शब्दक जादूगर मैथिली समीक्षाक प्रखर

दृष्टिदर्शी एवं फरिछाएल कथाकार श्री
दुर्गानन्द मंडलजी सँ युवा लघुकथाकार
मुन्नाजीसँ भेँटवर्ताक सारांश अहाँ सबहक
आगाँ राखल जा रहल अछि-

मुन्ना जी- अहाँ मैथिलीक रचना कोना आ कहिया प्रारंम्भ केलौं, एतेक दिन धरि हेराएल वा नुकाएल किए रहलौं?

दुर्गानन्द मंडल- जी हम मैथिलीक रचना श्री जगदीश प्रसाद मंडल जीक स्नेहाशील अजस प्रेरणाक बले 2009मे शुरू कएलहुँ। जहाँतक नुकाएल वा हेराएलक भाव अछि तँ हम कहए चाहब जे हम नै तँ नुकाएल रही आ ने हेराएल रही, हँ तखन अल्हुआ जकाँ झपाएल जरूर रही।

मुन्ना जी- अहाँक कथाक गढ़नि बड़ड ठोस होइछ जेना सोनारक एक-एक गाँथल मोती जकाँ अहाँ एहेन शब्द प्रयोग कोना कऽ पबै छी, स्वभाविक रूपेँ वा शब्द संगोर मात्र कऽ रचना करै छी?

दुर्गानन्द मंडल- कथाक गढ़नि प्रयुक्त शब्द स्वभाविक रूपेँ रहैत अछि। संगोरसँ ततबेक दूर जते की गदहाक माथमे सींग।

मुन्ना जी- अहाँ कथा पाठ करबाकाल सेहो एक-एक शब्दकेँ फरिछा श्रोताक सेझाँ राखि ओकर अस्तित्वकेँ फरिछा दैत छी एकर की ध्येय?

दुर्गानन्द मंडल- कथा पाठ करबाकाल एक-एक शब्द श्रोता बन्धूक सोंझा राखब ओकरा अस्तित्केँ फरिछा देब, कथाकेँ सोझरा दैत अछि। कथा श्रवणीए भऽ जाइत अछि आ श्रोता बन्धू श्रवण करैमे सेहो आनन्दक अनूभव निश्चित रूपेँ होइत छन्हि। जे एकटा फरिछाएल कथाकारक कथाक सार्थकता थिक।

मुन्ना जी- गैर बाभन वर्गसँ कतिएल रचनाकारक कतियेवाक वा नुकएल रहवाक की कारण अपन रचनाक सामर्थ्यहीनता वा आर कोनो विशेष कारण?

दुर्गानन्द मंडल- गएर बाभन वर्गक कतिआएल रचनाकारक कतियेबाक वा नुकाएल रहबाक कोनो एक-आधटा कारण नै अछि। जँ विस्तृत रूपसँ चर्च कएल जाए तँ मैथिली साहित्यक क्षेत्र वा ओकर विस्तार मात्र एकटा जाति वा वर्ग विशेषसँ देखल जाइत रहल। जेकरा ओ लोकनि अपन पूर्वजक धरोहरिक रूपमे अमानति बुझैत रहलाह। मुदा आइ मैथिली साहित्यक विस्तार ओ अपन सभ परिसिमनसँ बहरेबाक लेल औना रहल छलीह। मुदा वर्ग विशेषक खिंचल एकटा सीमा-रेखा जेकरा लांघि कऽ बाहर भऽ जाएब बड्ड कठीन छल। ने सिर्फ छल आइयो अछि। जेना जँ कोनो गएर-ब्रह्मण-कर्ण-कायस्थ वर्गक लोककेँ साहित्यसँ अनुराग होइ तँ सभसँ पहिने अपन मातृभाषाक प्रति हेबाक चाही। मुदा जखन ओ मातृभाषा (मैथिली)मे लिखए लेल कलम उठबैत छथि तँ बैरिअर जकाँ ओहन-ओहन शब्द सभ आबि ठाढ़ भऽ जाइत अछि जे ओ अपना जीवनमे तँ अपने नहिये बाजल छलाह अपितु किनको मुँहेँ कखनो-कहियो सुननहुँ नै छलाह। तँ हमर कहबाक भाव मुन्नाजी अपने करीब-करीब बुझि गेल हएब। एतबे नै समए-कुसमए मैथिली साहित्य लेखनमे नीकसँ नीक कथाकारक पदार्पण भेल मुदा ओइ कथाकार लोकनिमे सँ अधिकांशकेँ वर्ग-विशेष पर्दाक पाछाँ रखलनि। मात्र किछु गिनल-चुनल कथाकार लोकनिकेँ पर्दापर आनल गेल। जे वर्ग-विशेषक कोनो ने कोनो रूपमे पछिलग्गु वा मुँहलग्गु बनि हुनकहि शब्द आ बोलीकेँ (जे मात्र लिखल जाइत, बाजल नै) प्रश्रय दैत रहला। ओना ई अलग बात जे आजुक परिस्थिति थोड़ैक बदलल सन बुझाइत अछि। तहु लेल हमर कहब हएत जे बदलैत परिस्थितिकेँ देख गएर ब्राह्मण वा जिनका दऽ अपने कहऽ चाहै छी ओ सभ आगाँ आबि रहला अछि। आ आरो एता से विश्वास अछि।

मुन्ना जी- अहाँ समीक्षा सेहो लिखै छी, समीक्षाक प्रमुख आधार की रखै छी, रचनाकारक व्यक्तित्व विश्लेषण वा कृतित्व विवेचन?

दुर्गानन्द मंडल- मुन्नाजी, ओना हम कोनो समीक्ष नै छी। आ ने समीक्षा करबाक हमरा सामर्थ्य अछि। समीक्षा जगतमे एकसँ एक, पैघ समीक्षक सभसँ अपनेक भेँट-घाँट भेल हएत। जे प्रखर समीक्षकक रूपमे जानल जाइत रहलाहेँ। तखन समए पाबि जे किछु एक-आधटा लिखलौं। तैसँ हमरा समीक्षक नै मानल जाए। तखन, अपनेक प्रश्न- समीक्षामे व्यक्तित्व विश्लेषण वा कृतित्व विवेचन- तँ विचारनीय अछि। समीक्षाक प्रमुख आधार कोनो एकटाकेँ नै मानि दुनूकेँ आधार बनाओल जाए। किएक तँ कथाकारक कोनो कथाक समीक्षाक आधार जतबए हुनकर व्यक्तित्व विश्लेशन रहै छन्हि ततबाए कृतित्व विवेचन सेहो। तखन खगता ऐ बातक अछि,जे किछु ओ कथाक मादे पाठककेँ देमए चाहै छथिन ओकरा ओ अपना जीवनमे कतेक अनुशरण करै छथि?

मुन्ना जी- अहाँक कथाक मुख्य विन्दु की होइछ, कोनो कथाक कथानक कतए केन्द्रित रहैछ?

दुर्गानन्द मंडल- कथाक मुख्य बिन्दु गाम-घर, सर-समाजसँ जुड़ल समस्या आ निदानक संग अपन सभ्यता-संस्कृतिकेँ यथावत रखनाइ। आ से सभ बिन्दुपर।

मुन्ना जी- गैरबाभन रचनाकारक उपस्थितिक भविष्य अहाँ केहेन देखै छी, बाभन वा जमल रचनाकारसँ उखरि हेरा जाएब वा अपन फरिछएल दृष्टिएँ ओइसँ आगु डेग बढ़ा स्थापित हएब सन?

दुर्गानन्द मंडल- हिनकर सबहक भविष्य एकदम सवर्णिम अछि। कारण अहाँ नीकसँ जनै छी जे अपन समाजमे अखनो वैदिक व्यवहार-चालि-चलन विद्यमान अछि आ से हुनके सबहक बीच अहाँ देखब। निश्चित रूपेँ अपने ऐपर विश्वास करी जे जँ ओ इमानदारी पूर्वक रचना करता तँ सत्यक समीप रहैक कारणे ओ किनकोसँ फरिछाएल दूष्टिएँ सोझा औताह। तखन खगता ऐ बातक अछि जे ऐ कर्मकेँ ओ अपन तपस्या बुझथि। पूर्ण निष्ठा आ लगनसँ लेखनीकेँ अनवरत रूपेँ साधथि।

मुन्ना जी- अहाँक कथेपर केन्द्रित रचनाक मूल उद्देश्य की अछि, एकर अतिरिक्त आर की सभ रचना करैत छी?

दुर्गानन्द मंडल- कथापर केन्द्रित रचनाक मूल उद्देश्य पाठक बन्धुकेँ पूर्ण मनोरंजनक संग समाज बीच व्याप्त आराजक्ता, अंधविश्वास, जाति-पाति आदिकेँ दूर करैत एकटा मानवीय मूल्यकेँ स्थापित करब। जहाँधरि आर-आर रचनाक प्रश्न अछि। मुन्ना बाबू तै सम्बन्धमे हम ई कहब जे शुरूहेँसँ अर्थात् जहियासँ पाटीपर लिखब छोड़लहुँ पोथीक अध्ययन

करब शुरू केलहुँ तहियेसँ साहित्यक विधा- कथा, उपन्यास,कविता आदिसँ बड्ड सिनेह रहल। कहियो काल लघुकथा, कविता सेहो लिखैत रहलौं। विश्वास अछि जे आगाँ और लिखब। विदेह पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुर जीक सिनेहसँ हमरा अपनामे सृजनात्मक शक्तिक संचार भेल। बहुत रास एहेन शब्द सभ जे मैथिली साहित्यमे अप्रयुक्त छल। जेकरा ठेंठ कहल जाइ छलै ओ जखन ठाकुर जीक लिखल पोथी कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक पढ़ि देलखहुँ आ जनलहुँ तँ आरो विश्वास भऽ गेल।

मुन्ना जी- भविष्यमे अपन जाति-बिरादरी (पिछड़ल कोनो जातिक) लोकक उपस्थितिक निरन्तरता बनेने रहबाले अहाँ कोनो डेग उठाएब वा एकरा अनठिया देब उचित बुझब?

दुर्गानन्द मंडल- भविष्यमे अपन जाति-बिरादरी (पिछड़ल जातिक) उपस्थितिक निरन्तरता बनौने रहबा लेल एकरा अनठिया देब उचिन नै अपितु समए-समएपर नवसँ लऽ कऽ पुरान कथाकार लोकनिक बीच ठाम-ठाम चर्चा, परिचर्चा, पाँच-दस कथाकार मिल कथा गोष्ठिक आयोजन, कथा-पाठ आदिपर उचित समीक्षादि करब। जइठाम मैथिली पत्र-पत्रिकाक अनुपलब्धता अछि ओइठाम दस-बीस पाठक बना पत्र-पत्रिका वा पोथी आदि मंगाएब। ओकरा अपनहुँ पढ़ि दोसरोकेँ पढ़बाक आग्रह करब। किछु लिखबा-पढ़बाक प्रेरणा देब हम उचित बूझब।

मुन्नाजी अपने हमरा...... बुझलहुँ। ऐ लेल धन्यवाद।
हम दुर्गानन्द मंडल।

दुर्गानन्द मंडल, सहायक शिक्षक, उबनगावाँ-झिटकी .वि ., मधुबनी ।(बिहार)

कथा

डाक्टर कर्मवीर

मोन पड़ैत अछि छः जून 2003। जहि दिन तय ई छल जे भारतक प्रधानमंत्री मिथिलांचलक घरती निरमली जे सभ तरहें), सभ दृष्टिकोणसँ सभ मामलामे किछु बेसिये पिछड़ल अछि औताह। आ (कोशीमे बनऽ बला रेल पुलक शिलान्यास करताह।

जेठक दुपहरिया, सभठाम लोक सभ गर्मीगुमाड़सँ अफसेआंत-, सबहक देह धामे-हरान-वतर मुदा सभ केओ मंत्रीजीकेँ देखवाक लेल ओतवे हरो-पसीने तर, ओतवे फिरिशान। एहन बुझना जाईत छल जे खेतपथाड़-, बाधवोनसॅ आगि उठिरहल -

अछि, सड़कपर धुरावि-ड़ोक रुप लैत, सनसन हवा आ लू चलैत। -सन सन-
तखनो ओहि दिन परोपट्टाक लोक सबहक उजाहि उठल, सगर बाजार, बाजारक
चारु कातक, जे पूर्ण रुपेण अतिक्रमित छल, प्रशासनक चुस्तीदुरुस्तीसँ एकदम -
सुथड़ा। ऐना-साफ, जेना ऐना झकझक करैत।-
खूव प्रचारप्रसार भेल-, जगहपोस्टर-जगह पर्चा- साटल गेल, उद्धेश्य अधिकसँ
अधिक लोक आवि मंत्री जीक भाषणसँ लाभ उठावथि। ओहि दिनक रौदो ऐहन
बुझना जाईत छल जेना छाहरियो रौद आ गर्मीसँ फिरिशान भऽ कतऊ छाहरि ताकि
रहल अछि।
किछुए कालक वाद ऐहन बुझना गेल जे चारुकातक वाट कॉलेजेक फिल्ड दिस
मुड़ि गेल हो जाहिठाम मंत्रीजीक प्रोग्राम तय छल। जेम्हरे ताकू मुड़ीए मुड़ी-,
कपारेकपार-, लोकहिपर लोक, लोकक मुड़ि छोड़ि आर किछु नहि। सभ एक
दोसराकेँ धकियबैत, आँगा बढ़वाक अथक प्रयास करैत, किछु सफलो भेलाह, आ
असफल वेशी। सॉझपड़ैत लोकक लेल गदमिशान उठऽ लागल। जे जतहि -पड़ैत-
रहथि से ओतहि रहि गेलाह। एको मिशियाआगू या पाछु हेवाक साहस नहि कऽ -
सकलाह। एतबहिमे सबहक आँखि अकाशमे हहाईत किदुनपर परलैक। किदुन तऽ
कोप्टर। -हँ मोन पड़ल हेली-बढ़िया नाम छै ओकर। किदुन तऽ कहै छै हँ-बढ़
सभसँ पहिने उतरलाह सेनाक जवान वाद ओकर प्रधान मंत्री जी, जोरजोरसँ हल्ला -
-होमय लागल"इन्कलाव जिन्दावाद!" "जिन्दावादजिन्दावाद।-"
-"आज का नेता कैसा हो?"
.... जैसा हो।"
ततपश्चात शुरु भेल भाषण -भूषणक कार्यक्रम सभ क्यो कान पोति सुनऽ लगलाह-
जिन्द-जिन्दावाद। जिन्दावाद-बीचमे फेरि वएह नारावाजी। इन्कलाव-बीचावाद।। एहि
तरहें एहि सबहक मध्य भाषणक कर्यक्रम समाप्त भेल। सभ अपनअपन घरक बाट -
पैर धोइत जाकि -धेलैन्हि। हुनकहि सबहक संग हमहूँ अपन वासापर अयलहूँ। हाथ
पता पुछैत अवैत छथि आ -खुरसीपर वैसलहूँ देखैत छी एकटा व्यक्ति हमर अता
श्रीमान् संभवत -अपन परिचय एहि तरहें दैत छथिः अपने हमरा नहि चिन्ह
सकलहूँहम कने अकचकाईत पुछलियैन्हि !, से की? अपने पहिने वैसल तऽ जाउ,
सामने राखल विरिंचपर वैसतहि ओ बजलाह -"हम छी कर्मवीर।"
एतवहि सुनितहि करेज सूपसन चाकर भऽ गेल। हृदय आनन्दातिरेकसँ झुमि -
उठल। नहि जानि किएक ऑखिसँ दू ठोप नोर खसि पड़ल। ओबजलाह -"श्रीमान्

अपने कनैत किऐक छी?
हम कहलियैन्हि -‘‘तो नहि बुझबहक। तोरा देखिते हम अपने आपकँ नहि रोकि सकलहूँ, आ ई नोर तऽ खुशीक थिक। आई ऐहन सौभाग्य जे पाहुन वनि एहिठाम अयलह, अहो भाग्य हमर। ओ तऽ अवाक। किछु नहि बजलाह, बजलाह किछुकालक पश्चात जे -‘‘श्रीमान् हमरा चरि वज्जी गाड़ी छुटि गेल। हम आई अपनहि अहिठाम रहव आ भोजनो करब। सुनितहि हर्ष भेल जे कर्मवीर कमे उमेर मे ऐतेक स्पस्ट वादी, सभ किछु खोइलचा छोड़ा कऽ वजनिहार, जे चाहे अहाँकँ कष्ट हुअए वा खुशी।
कनेक कालक वाद हमरा लोकनि चाहपान करऽ लेल चैक दिस विदा भेलहूँ। -गामक चैक। बड़कीटा पाखरीक गाछ चारुकात चबुतरासँ घेरल। गामक अधिकांश लोक चाहपरात ओतहि आवथि। वगलमे छल फुसियाही -पान पीवाक लेल साँझ-गहुम पीसऽ वाला मीशील-दूसाधक धान, आ घोघना मियांक कोटाक दोकान। सटले छल मुनेसराक कनिएटा नोनतेलक दोकान। आ वगलहिमे छल रामा मुखियाक -मुरही, कचड़ी, मटर, घुघनी आ इचना माछक चखना वला एकचारी देल दोकान। दसे डेग हटिकँ छल अगहनियाँ पसीनीयाँक ताड़ीक दोकान, जाहि ठाम दर्जनो घैल ताड़ीसँ भरल, पूव मुहे राखल आ घैलसँ वहरा रहल छल जे बुलबुला, बुलवुला- बुलवुलाकँ ससरि घैलक पेन तरमे राखल बीड़वापर खसैत छल। किछुपीयाकक आँगामे राखल छलै दू बेचाही ताड़ी, मुरही, कचड़ी आ इचना माछक चखना। लोकसभ ताड़ी पीवि झुमय, मने मस्त छलै सवहक आ समवेग स्वरमे गवैत छल ई गीत -‘‘ताड़ी वाली ताड़ी पी आ दऽ .....ताड़ वाला ताड़ी दऽ खजूर वाला कम....... !ताड़ीवाली ताड़ी पिआ दऽ। दृश्ये छल लाजवाव
सभ किछु देखैत हमरा लोकनि पहूँचलहूँ ठको काकाक चाहक दोकानपर। एकेटा चाहक दोकान आ ढ़ेर रास लोक चाह पीविनिहार।
पाखरीक गाछक चबुतरापर वैसेत हम हाक देल -‘‘ठको कक्का दू कप चाह हमरो सवके दिहहकरीब दस मिन्टक वाद ठको कक्का डंटी विहिन कप.., जे कोरहूँपर कने फुटले छले नेने आयल चाह। ऐह चाह तँ चाह छलमहीसिक दूधक अगव ! चाह, एको ठोप पैनिक छुति नहि, मीठगरो ततवे, ठोरमे ठोर सटऽ वाला चाह। अर्थात् चाहक चाह।
चाह पीवि कैंचा दऽ हमरा लोकनि बढ़लहुँ बौआ काकाक पान दोकान दिशि। लग पहुँचति कहलियनि -‘‘गोड़ लगै छी कक्का कने दू सीक्की पान देब’’।

कठघारामे बैसल बौआ कक्का पुछलनि -''हौउ नीके छह किने? बहुत दिनक बाद देखलियह, कहऽ कोना की हालचाल छह अरविन्दक आ घौलुक? पुछैत पान लगबए लगलाह। हँ कक्का सभ अहॉ सबहक अशीर्वाद छी। सभ कियो नीकेसुखे - छी, बौआ कक्का पान लगा आगा बढ़ौलैन्हि। हमरा लोकनि पानक आनन्द लेबए लगलहुँ। पानो ततबे सुअदगर। कियेक तँ शुद्ध देशी पान छल। ताहूँमे बेरमा बरैबक। एक तँ मिथिला दोसर मैथिल ऊपरसँ बेरमा बरैबक पान, बौआ काकाक लगाओल। अपूर्व!

गप्प सप्पक क्रमे लोक सभसँ भेंट भेल, कुशलदोसराक हाल चाल -छेम सभ एक - पुछैत सभसँ कर्मवीरक परिचय करौलियैन्हि। नहि जानि जे हिनकामे कोन ऐहेन गुण छलैक जे जिनकेसँ परिचय करवयैन्हि सभ हुनकासँ प्रभावित भऽ जाइथ। अकानि नहि सकलहूँ जे कर्मवीरक मनमे कोन कल्पना जन्म लऽ रहल छलैक। ओ तँ जकरा हम कल्पना मात्र बुझैत छलहूँसे तँ साकार करक प्रवल संभावना लैत राति खेवाक काल बजलाह।...

दुनू गोटाक आँगामे दूटा थारी राखल छल, जाहिमे कनिएटा कटोरी, आ कटोरीमे घीड़ाक तीमन खेड़हीक दालि देल, दू फॉक पिआउज आ नान्हिऐटा टुकड़ी छल अचाड़क, आर छल कॉच मेरचाई एकएक प्रति-, प्रति थाड़ीमे। लोटा आ गिलास जलसँ भरल छल, आ दुनू गोटे वैसल रही खेवाक लेल, ततवहिमे अरविन्द आ घौलू दुनू वौआ टीशन पढ़िकेँ आयल। कर्मवीर जीकेँ गोड़ लागि आशीर्वाद लऽ अपनअपन छिपलीमे रोटी लऽ खैए लगलाह।-

भोजनक क्रमे किछु काल धरि गुम्म -सुम्म रहलाक वाद कर्मवीर जी बजलाह- ''श्रीमान् मोन होइत अछि जे जँ अपने आदेश दी तऽ हमहूँ एकटा क्लीनिक खोलि प्रैक्टिस करितहूँ। सुनि मन हर्ष भेल जे हिनकामे किछु करवाक उत्साह छैन्हि। आ गामक प्रति एतेक सिनेह जे कतहूँ आन ठाम नहि जा कए वल्कि गामहिमे सेवा करताह। नहि तँ प्रायः परदेश खटऽ वालाक तँ उजाहि उठल छैक। ऐहेन सन वुझना जाईछ जे सभ सुख परदेशेमे छैमुदा ई तँ हमरा लोकनिक धोखा थिक ! धोखाहम कहए चाहैत छी जे जँ देहमे खुन अछि तँ गामोमे कियो भुखे नहि ! रहताह। एक तँ साधारणो मजुरी80 टाकासँ 150 टाका धरि अछि, ताहूपर जन-मजदूरक अभावे। दस दिन खुशामद करिऔक तखन एक दिन आवि काज कए बाप-देत। ओतवहि नहि माय, भायभौजाई-, परबच्चाक संग रहवाक -परिवार बाल-सुखकतए पाएव गामहिमे ने? आ कि परदेशमे? उत्तर एकेटा भेटतगामहिमे -,

तखन अहीं सभ कहूँ जे परदेश खटबै कथी लेल? की एहि लेल जे ऐवा काल सनेशमे एड्स लेने आएव।
हम तँ सप्पत दऽ कहऽ चाहैत छी, जे गामक माटिकादोमे सभ सुख -पानि आ थाल- अछि। कोनो गामसँ चिक्कन अप्पन गाम, आ कोनो धामसँ चिक्कन मिथिलाधाम। अहूँ सभ अप्पनअप्पन करेजपर हाथ राखि कहू जे हम फुसि कहै छी-? आव प्रश्न ई उठैत अछि जे जखन सभ कियो परदेशे खटवै तखन गामक विकाश हेते कोना? मुदा कर्मवीर जीमे हमरा भेटल जे ओ गामहिमे रहि गामक आ समाजक विकाश करवाक भावना हुनका हृदयमे हिलकोर मारि रहल छल। मन गदगद भऽ उठल। - सप्प करैत हमरा लोकनि सुति रहलौ। प्रातः किछु गोटा-आर किछु काल गप्प सँ भेंट करौलियैन्हि (मेडिकल लाईनसँ जुड़ल), ततपश्चात एकटा नीक दिन तका हिनक क्लिनिकक उद्घाटन सम्पन भेल।
जीवनक दोसर रुप संधर्ष होयत छैक। मुदा ताहिसँ कर्मवीर जी धबरेला नहि वल्कि जीवनक लेल संधर्ष करए लगलाह। से ताहि तरहें जे काल्हुक कारी झामड़ सुखलसाखल देह-, पिचकलपुचकल गाल-, धसलधसल ऑखि पेट पाँजरमे सटल - खपटासन, कोनो पहिरलहे पेन्ट आ वुशर्ट पहिरि पुरानेधुराने जूता आ चप्पलसँ - समय खैपऽ वाला, जीवनकेँ ऐतेक लगसँ देखऽ वाला कर्मवीर, हमरा आईयो हुनक ई वात मोन पड़ैत अछि जे ओ पुछने रहथि -“श्रीमान् की अपने कहियो रातिकेँ भुखले सुतल छी? माथमे नहि घुसल ई बात जे हुनक प्रश्नक भाव की छैन्हि? मुदा सत बात तँ ई छल जे ओ काल्हुक राति उपासे रहलाह, भुखले सुति रहलाह। भरि राति धरि निन्न नहि भेलैन्हि, कोनो तरहे कछमछाकेँ राति वितौलैन्हि। प्रातः भेंट भेलापर हुनक धसल ऑखि आ भुखल पेट हमरा किछु पुछि रहल छल। मुदा हम छलहुँ निःशब्द।
काल क्रमे समयक संग मेहनत रंग देखौलक। रोगी सभ आबए लगलैन्हि, भगवती जस लगवैत गेलथिन्ह। गुजरवसर करए लगलाह तँ कनियोंकेँ लए अनलैन्हि- आ आनन्दसँ रहए लगलाह। भोला बावाक कृपासँ दिन दूना आ राति चैगुना आमदनी होमय लगलैन्हि। आई ओ दस धूर जमीन लए घर बना वाल-बच्चाक संग हंसी- .खुशीसँ छथि। एकटा सफल व्यक्तिक रुपमे आ सफल डॉक्टरक रुपमे। डॉ कर्मवीर।
कहियो कताल हमरो हुनका घरपर जेबाक मौका लगैत अछि। एक डिब्बा बटर- बेक बिस्कुटक संग। डॉक्टर साहेवक दुनू बच्चा निछोह दौड़ल अवैत अछि एहि

अंकल जी आए। तात घरसँ बहार -मम्मी अंकल जी आए-आवाजक संग मम्मी पूनम-साहेवक कनिआ .होइत छथि डॉ, जेहने नामतेहने पुनमक चाँन सन मुँह। - देहो दशा !आँखि चोन्हिआ जाईत अछि। बेश पाँच हाथ ऊँचखूब भरलपूरल। - कनेक श्याम रंग, कलकत्तिया आमक फारा सनसन आँखि-, बादामी नाक, औंठिया केश कारी भौर, दुनू कात जूट्टी गुहल आ ताहि जूट्टीकेँ धुमा कऽ खोपा बन्हने, कसलकसल वाँहि-, आ पाकल तिलकोरक फड़ सन दुनू ठोर। जतवे देखऽ मे सुन्दर, ततवे मीठनम्हर हाथ आ-मीठ बोल। नम्हर- दुनू हाथमे रहन्हि भरिभरि हाथ -चुड़ी। हाथक आँगूरमे बेश कीमती पाथड़क अंगूठी। सुगा पंखी रंगक ब्लाउज आ साड़ी पहिरने, माथपर साड़ी लैत, आँचर सम्हारि दुनू हाथ जोड़ि, पएर छुबि गोर लगैत छथि। सौभाग्यवती भवः आशीर्वाद दैत आँखि नोड़ा जाइत अछि। मन पड़ैत छथि डॉकर्मवी .र छह फीट छह इंच उँच, भरलपुरल देह-, मोती जैंका झलकैत दाँत, क्लीन सेभ, कनेक बहरायल पेट आ हँसैत ई अभिवादन -''प्रणाम श्रीमान् कुशल थिकहुँ की ने? अन्तर स्पस्ट भए जाईत अछि कॉल्हुका कर्मवीरआजुक - कर्मवीर। .डॉ

दुर्गानन्द मण्डल

समीक्षा- जीवनसंघर्ष-

मैथिली साहित्याकाशमे एकटा एहेन नक्षत्र जे अद्रा नक्षत्र जकाँ सुधी पाठककेँ सभ तरहेँ मनोरंजनसँ लऽ आदर्शवादी समाज, व्यक्ति, व्याक्तिक कुत्सिष्त एवं दमित भावना, मनमे उठैत विभिन्न प्रकारक समस्या आ ओकर निदानक रूपमे भरिपोख मार्ग दर्शन करैत अछि, जीवनसंघर्ष। जी-वन संघर्ष थिक आ संघर्षे जीवन। जौं जीवन अछि आ जीवनमे संघर्ष नै तँ ओ जीवन जीवन नै। तहिना जदी संघर्ष अछि तँ ओ संघर्षे जीवन थिक। एकना दुनू शब्द अक्षुण्न सन बुझना दोसराक बि-नै सकै छी आ जौं संघर्षेकेँ तँ संघर्षसँ अपने बचि । जीवन अछिजाइत अछि ल जीवन मानिब जीवन थिक। अर्थात् जीवनसंघर्ष उपन्यास अपन संज्ञाक अनुसार -ओ छथि । सम्पूर्ण उपन्यासमे जे पात्र लोकनिखड़ा उतरल अछि सँ अंत धरिआदि । जे संघर्षकेँ स्वीरकार कऽ लेलन्हि कखनो संघर्षसँ अलग नै भऽ सकला अछि

हुनका जीवनक लेल एक नै अनेको बाट स्वागतार्थ प्रकृतिक संग नैसर्गिक सुख लऽ उपस्थित भेल।

उपन्यासकार एकटा लब्ध प्रतिष्ठित जाहुरी जकाँ विभिन्न प्रकारक संघर्षकेँ जे देखौलन्हि तँ ओकर समाधानो तकबामे कतौ पाछाँ नै रहला। जीवनमे संघर्षक समाधाने तँ जीवनक अभिप्राय थिक। ऐ बातकेँ स्पष्ट करबामे उपन्यासकार शत-प्रतिशत सफल भेलाह। उपन्यासक आदियेमे उपन्यासकार बँसपुरा गामक एक गोट नवविवाहित यौवना जे जीवनक आ यौवनक सुआद मात्र बुझने हेतीह। गामक सटले आयोजित दुर्गापूजाक मेला देखए गेलीह। गनगनाइत मेला चहुओर लॉडस्पीकरक गगनभेदी आबाज चरिकोसिक नीन्न उड़ेने, गामक तीनटा लफुआ छौड़ा बहलाफुसला - । समाजक सामंतवादी .....कऽ भनडार घर लऽ जा हुनका संग बलत्कार र ऐ तरहक जे बेवस्थाक। आखिव्यवस्थाक ज्वलंत उदाहरण अछि हमरा समाजक बीच बालनक संग बलात्कारक संग प्रस्तुत हुअए बहि-जे माए बच्चामे व्याप्त अछि-पाओत तखन इज्जत केकर बँचि? के इज्जतदार रहताह? एकटा प्रश्नचिन्ह छोड़बामे उपन्या्सकार पूर्णत ।सफल भेलाह अछि :

समाजमे व्याप्त ई जे कुबेवस्था अखनो अछि निश्तुकी ओ हमरा सभकेँ लज्जित करबामे कनियो धोखाजे समाजक ऐ कुबेवस्थासँ धड़ी नै। जइसँ संभव अछि-त बहए लागत। उपन्यक बदला शोनिघरक धारमे पानि-गामासकारक उपन्यासक उदाहरणसँ स्पाष्ट जे पत्नी -केँ कहलकसुनैत पति-बेटीक मुँहक बात सुनैत-“जहिना हमर बेटीक इज्जत सिसौनीबला लुटलक तहिना सिसौनीक दुर्गास्थानमे मनुखक बलि परत।”

मुदा बाहसौनीबलाकेँ कचरमबध कऽ जखन सम्पूर्ण बँसपुराबला सि !रे उपन्यासकार- लहाशक ढेरीआ शोनितक बहबैले तैयार रणक लेल शंखनादक ध्वनि, लाठी, फरसा, ग्रांस लऽ मरै आ मारैले सिसौनी दिस बिदा भेल तखन गामक सभसँ बेसी उमेरक मनधन बाबा द्वारा रस्तापर चेन्ह दऽ ई कहब -“ऐ ढाँहिसँ जौं कियो एक्को डेग पएर आगाँ बढ़ेबह तँ हम एत्ते प्राण गमा देब।”

मनधन बाबाक ई एक वाक्य, आगिमे पानिक काज केलक। सभ शान्त भऽ जाइ छथि।

तखन सिसौनी दुर्गापूजाक प्रतिरूप बँसपुरामे कालीपूजा ठानल गेल। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष चुनल गेलाह। एक्कैस आदमीक कमिटी बनाओल गेल। कोनो काज हुअए ओ सर्वसम्मपतिसँ हुअए। ऐठाम उपन्यासकार सामाजिक सद्भावनाकेँ स्पष्ट करबामे शतउन्नत समाजवादी क कालक मध्यशत सफल भेलाह। जे उत्तर आधुनिप्रति-भेल। समाजकेँ आगाँ बढ़ेबामे दसगर्दा काज दर्शनक कसौटीक झलक सहजहि झुकाउ नै हेतैक ताधरि लोकक मनमे दसनामा काजक प्रति । जाधरिजरूरी अछि समाज आगू मुँहेँ बढ़त केना? समाजेक बीच मंगल सन सोझमतिया लोक अछि तँ गणेश सन ठकहर सेहो। जइ संबंधमे उपन्यासकार कहए चाहैत छथि- ‘‘एक्के कुम्हारक बनाओल पनिपीबा घैल सेहो छी आ छुतहरो। मुदा देखैमे दुनू एक्के रंग होइ छै।’’

उपन्यासकारक नजरि लगिचाइत अमवसिया दिन साँझे दिवाली आ निशा रातिमे कालीपूजा। गाममे आएल धीसरहोजि-नसँ बेसी साइरेबहि-, तहूमे परदेशिया सारि-देलक। मेलाक लेल मुजफ्फरपुरसँ नाटक कऽ गामक तँ रंगे बदलि आबि सरहोजि न्त्र प्रकारक भिसोंथाक नाचक आयोजनक संग विमेल कौव्वालीसँ लऽ महिफि-आ मेल न्त्र पभिसेहो छन्हि। मेलामे वि दोकान सभपर नजरि्रकारक दोकानक बीच, चेस्टरबला दोकान सेहो उपन्यानसकारक नजरिसँ नै बचि सकल तँ दोसर दिस रमेसरा सन लोकक ई कथन -‘‘धूर बूड़ि दिल्लीस तँ हौआ छिऐ।’’

अर्थात् पलायनवादी संस्कारकेँ चुनौती दैत गामेमे आयोजित कालीपूजामे बाजार देखि चारिपाँच हजारक समान बनौलक। जे नो-कर नै बनि मालिक बनबकतेक पैघ ! चायक अछिमानक परिस्वाभि? एवं प्रकारे विभिन्न प्रकारक जाति विशेषसँ जुड़ल व्यवसायपर बल दऽ ग्रामीण उद्योगकेँ बढ़ाबा देलन्हि , जे सम्राज्यवादी प्रदुषणकेँ साफ करैत अछि।

ऐ प्रकारे उपन्यासक सार समस्त मिथिला आ मैथिल समाजक समस्याकक चित्रण करै छथि। समाजक बीच व्याप्त विभिन्न प्रकारक समस्या जे खाहे पलायनवादी होइ वा किसान मजदूरक। सरकारी मसोमातक होइ वा सामाजिक मसोमातक। विभिन्न प्रकारक जाति विशेषसँ जुड़ल व्यवसायसँ हुअए वा कोसी कहरक समस्या। हमरा समाजक बीच धर्मक आड़िमे राजनैतिक समस्या सभपर उपन्यासकारक दूर दृष्टि छन्हि। खास कऽ विधवाक लेल कएल गेल प्रयासक पाछाँ बूझना जाइत अछि जे उपन्यासकार कोनोधवाक वि । चूँकिकामे होथिकोनो रूपमे नायकक भूमि-ने-कालब साधारण या समाधान निसमस्याकँ एतेक लगसँ देखब आ ओतेक बढ़ि व्यक्तिक लेल संभब नै। अधंविश्वासक आड़िमे भगति खेला केकरो शीलभंग करब आ जहल खटब, सेहो उपन्यासकारक नजरिसँ नै बचि सकल। समाजेक मंगलक विचार जोगिन्दारकँ नीक लागब आ सामाजिक विधवाक सहायताक उपाए करब, किनको नीक लागि सकैत अछि। एतबे नै, दुखनीक विचारकँ दुखनियेक शब्दमे उपन्यासकार लिखलन्हि -“हमहूँ तँ पाइयेबला ऐठीन रहलौं मुदा सभ सुखधा सुवि-तो ओकरा एहेन नीन कहाँ होइ छै।रहि” देखै छी जे पेट खपटा जकाँ खलपट छै, भरिसक खेबो केने अछि कि नै। तखन जोगिन्दिर घुट्टी हिलबैत बाजल -

“काकी, काकी।....” आ मोटरी खोलि जोगिन्दनर जोर भरि साड़ी, साया आ एकटा आंगीक संग दसटा दस टकही आगूमे राखि देलक। ऐ तरहक समाजक दबल, कुचलक मसोमात वर्गक सेवाधारीक रूपमे हुनक यथार्थ सेवा भावना ओहिना झलकि रहल अछि, जे ओ कतेक पैघ समाजसेवी छथि।

ऐ तरहेँ उपन्यासक एक संघर्षक सार्थकताकँ-जीवन एक पाँति-प्रमाणित करैत अछि। पाठककँ उपन्यास। प्रस्तुत जीवन एकटा संघर्षक रूपमे बुझना जाइत अछि - हँसब -उपन्यासमे सभ तरहक उदाहरण, बाजब, कानब, मारिसँ लऽ पीट इत्यादि-हनव उत्सा, नव चेतना आ नव दिशा भेटैत अछि। आन कोनो ओझराएल उपन्यासकार जकाँ जिनगीकँ कोनो चौबट्टीपर नै छोड़ि बल्कि एकटा नव सृजनात्मक रास्ता खोजि पाठकक संग समाजोक लोककँ देखौलन्हि अछि। जहिना नदीक पानि अपना जीवनमे अनेको उतार बनबैत अछि चढ़ाबकँ पार करैत अपन बाट अपने-न्न भेल समस्याक समाधान करैत समाजोकँ एकटा ना प्रस्तुत उपन्यासमे उत्पतहि

मार प्रशस्त्ग देखबैत निर्विरोध आगाँ बढ़ल जा रहल अछि। उपन्यासमे एकटा समस्या नै अपितु अनेको समस्या उपस्थित होइत अछि मुदा ओइ समस्याक स्वत : । समाजक सभ वर्ग चाहे ओ कलैत अछिदान सेहो समस्येसँ निवेक द्वारा निवि-बुधि त्रीपवि दुखनी हुअए आकि, श्यामा हुअए आकि तमोरियावाली भौजी। नारीक एकटा सशक्त शक्तिक रूपमे देखा उपन्यासकार एकटा कृत केलन्हि अछि। सम्पूर्ण उपन्याससमे उपन्यासकार मिथिला समाजक सभ्यता एवं मान्यताकेँ देखाएब सेहो नै बिसरला अछि। मैथिल बेटीक प्रेम माएश्यामा द्वारा आनल गेल पाँच गो बापक प्रति-पुरीदलि, एक धारा चाउर, सेर तीनियेक खेसारी दालि, एकटा उदाहरण अछि। ओतबए नै, मसोमात दुखनीक बेटा भुखना द्वारा आनल रूपैयाक गड्डी देखि ई बाजब आ सोचब -

“झाँपहतँ बेटे छी र ढहलेलो अछिलेतह। आखि झाँपह नै तँ लोक सभ देखि-ने।कि” मने -बाजल मन भगवानकेँ गोड़ लागि-“भगवान केकरो अधलाह नै करै छथिन।”

उपन्याँस जेना। पाठक सारगर्भित भेल जा रहल अछि जेना आगाँ बढ़ैत अछि-यान नै रहिभातक धि-। उपन्यासक मादे भोजनोएकसूरे पढ़ैक लेल बाध्य छथि उपन्यासक सारक रूपमे प्रोफेसर कमलनाथ द्वारा प्रस्तुत :। अंतजाइत अछि -कथन

“रतुका घटना दुखद भेल। मुदा ओ काल्हुक भेल। कालक तीन गति, भूत, वर्त्तमान आ भविष्य । जे समए बीत गेल वएह समए वर्त्तमान आ भविष्यक रास्ता देखबैत अछि। ढंगसँ एकरा बुझैक खगता अछि। दुखक भागब माने आएब भेल।”

ऐ प्रकारे जीवनत बुझना जाइतु यथार्थपर आधारिसंघर्ष उपन्यास कल्पना नै अपि-त अछि। तँए अंतमे ई कहब जे आशाक संग जिनगीकेँ आगू मुँहेँ ठेलैत पहाड़पर चढ़ा अकाशमे फेक दियौक। स्पष्ट अछि जे जीवन संघर्ष थिक आ संघर्ष जीवन, अर्थात् जगदीश प्रसाद मण्डलक जीवननागेन्द्र कुमार झा संघर्ष। आ प्रकाशक छथि-

त्याकाशमे पोथी प्रकाशनकली साहिजे मैथि झंडा फहरा छु कहिफहरा कऽ बहुत कि-प्रकाशनक संग उपन्यासकारकेँ सेहो दुर्गानन्द तरफसँ । ऐ लेल श्रुतिरहल छथि बहुत साधुवाद।-बहुत

दुर्गानन्द मण्डल

लघुकथा-

कुकर्मा

मिथिलांचलक राजधानी जिला मधुबनी धरमपुर गाममे एकटा प्रकाण्ड विद्वान ज्योतिषी रहै छलाह। ज्योतिषी विद्यामे एकदम निपुण जइसँ भूत, वर्त्तमान आ भविष्यक नीक ज्ञाताक रूपमे जानल जाइ छलाह।

एक दिन मधेपुर प्रखण्डक लौफा गामसँ सत्यनारायण भगवानक चौपहरा पूजा करा सबेरे-सकाल गाम अबै छलाह। बाटमे, जोरला गाम जखन एलाह तँ देखलनि। हाइ स्कूल जोरलाक पाछाँ बहति मरता धारमे एकटा नरमुण्ड धारक कातमे राखल छैक। जइपर लिखल छलै “किछु कर्म भऽ गेलै आ किछु बाकी अछि। एकटाक जनम आ तीनक मृत्यु।”
ज्योतिषी जीकेँ हरलनि ने फुड़लनि, नरमुण्डकेँ उठा झोरामे रखि लेलनि। घर आबि चुपचाप, एकटा उज्जर कप्पासँ बान्हि, चिनवारमे खोँसि देलनि। मुदा पण्डिताइनकेँ ऐ संबंधमे किछु ने कहलकनि। एक-आध दिनक बाद पण्डिताइनक नजरि ओइ उज्जर कप्पापर पड़लनि। सोचथि आखिर की बात छिऐ जे आन दिन जे किछु ज्योतिषीजी लाबथि तँ हलसि कऽ कहथि जे पण्डिताइन ई लिअ उ लिअ, हे एकरा राखू ओकरा उसारू। मुदा.....।
पण्डिताइनकेँ हरलनि ने फुड़लनि ओ जिज्ञासावस कप्पामे बान्हलकेँ उतारि कऽ देलखनि, नरमुण्ड देखिते बताहि भऽ गेलीह आ तामसे ओइ नरमुण्डकेँ उक्खरिमे दऽ समाठ लऽ बढ़ियासँ कुटि बुकनी-बुकनी कऽ देलनि। आ एकटा सीसीमे ओइ बुकनीकेँ भरि भनसा घरक चारमे खोँसि देलनि। आ सगर पोखरिमे एकटा मात्र पोठी जे कहबी छै, अति सुन्नरि नाम सुनयना वएस सोलह बर्ख अपन बेटीकेँ कहलनि-
“ऐ सीसीमे माहुर अछि। एकरा कियो ने छुअए आ ने खाए, जौं खएत तँ मरि जाएत।”

सुनयना नामक अनुरूप ओतबे सुन्नरि। बेस गोरि-नारि नमगर-छड़गर-पोरगर केराक वीर जकाँ कोमल आ सुन्दर। सोल्हम साउन पार केने, अनेरे आँखियोक भाषासँ गप्प करैवाली। सुनयनाक आँखिमे धार तेहेन जे बिनु कटनहि आँखिसँ घाएल करैवाली। दिन-राति प्रेमक बोखारमे बौआइतो मुदा ज्योतिषीक मर्यादाकेँ अखन धरि बचौने। उमेरक संग जे लांछन होइ छै से एक-कान-दू-कान होइत पण्डिताइन आ ज्योतिषी जीक कानमे पहुँचए लगल। कहबियो ठीके छै जे बेटी जखन जुआन होइ छै तँ घरबैयाकेँ बादमे मुदा बहरबैयाकेँ पहिने पता लागि जाइ छै।

टोल-पड़ोसक लोक काना-फुसी करए लगल जे पण्डिताइनक बेटी तँ फल्लमाक बेटासँ बुढ़ियागाछीमे गप-सप्प करै छलै। एक-आध दिनक बाद फेर कियो गप्प उखाड़ि दइ जे ज्योतिषी जीक बेटी तँ अरूण डाक्टरसँ हँसि-हँसि कऽ काली स्थानमे गप करै छलै। एकदिन सुखेतोवाली कनिया बाजलि छलीह जे पण्डिताइनक बेटी रामदेब बाबूक खेतमे बदामक साग तोड़ै छलै। हुनक मझिला बेटा आड़िपर ठाढ़ भऽ रेडी बजबै छलै आ बड़ीकाल धरि दुनू गोटे हँसि-हँसि कऽ गप-सप्प करै छलै। अर्थात् एक-आध दिनक पछाति सुनायनासँ जुड़ल कोनो-ने-कोनो गप्प-सप्प चलिते रहैत छलै।

ज्योतिषीजी बेटीक ई किरदानी सूनि सत्यनारायण भगवानकेँ कहथिन-
''हे भगवान एक तँ एकटा कुलकन्या देलह, तहूपर एतेक मानि हानिक गप्प! ऐ सँ तँ खनदानक बड़ हानि भऽ रहल अछि। ऐसँ तँ नीक होइत जे सुनायना जहरो-माहुर खा लइतए आ ऐ दुनियाँसँ उठि जइतए।'' ई गप्प बूझू जे हरिदम ज्योतिषी जीक मुँहसँ निकलैत रहै छलनि।
सुनायना एकदिन सुनलक, दोसर दिन सुनलक आ तेसर दिन जखन सुनैत-सुनैत बरदाससँ फाजिल भऽ गेलैक तँ सोचलक जे भनसा घरक चारमे माए तँ माहुरक एकटा सीसी खोंसि रखने अछि। से आइ उ माहुर खा अपन प्राण तियागब। सुनायना ओइ राति सएह केलक।
मुदा ओ तँ जहरक सीसी छल नै। छल तँ ओइ नरमुण्डक चूर्ण जइपर लिखल छलै, किछु भऽ गेल आ किछु बाकी..।
जे खएलासँ सुनायना मरल तँ नै मुदा गर्भवती जरूर भऽ गेलीह। आब तँ दिन बीतल, मास बीतल। एक-कानसँ-दू-कान गुल-गुल हुअए लगल जे ज्योतिषीक बेटी तँ आब पेटसँ छैक। एत्ते दिन कहै छलियनि तँ ज्योतिषीजी आ पण्डिताइन मुँहपर माछियो ने बैसए दैत छल। विसबासे ने होइत छलनि। आब देखथुन अपन बेटीक किरदानी। जे बापक दुलारू धिया दूरि गेली दूरि गेली, आ माथापर तम्मा लऽ कऽ उड़ि गेली उड़ि गेली। आब देखथुन जे बेटी केहेन कुलगोरनि छन्हि। देखिते-

देखिते नओ मास बीतल आ सुनायना देलनि एकटा अति सुन्दर बालकक जन्म। जेकर भाग्यक रेखा किछु औरे कहि रहल अछि। मुदा पण्डिताइन आ ज्योतिषीजी ओकर नाओं रखलनि 'कुकर्मा'।

एक दिनक गप छी। जे ओइ राज्यक रानीकेँ माछ खएबाक मोन भेलनि। राजाक आदेश भेल, मलाह बजाओल गेल। नीकसँ-नीक माछ मारबाक आदेश दऽ देल गेल। संयोग एहेन जे कनिये कालमे निक्के माछ ऊपर भेल। मलाह राजाक आदेश पाबि सोझे रनिवास धरि गेल आ रानीक हाक देलकनि। हाक सुनि रानी महलसँ बाहर एलीह। तँ देखै छथि जे आंगनमे बड़ सुन्दर माछ राखल अछि। मुदा माछ देखि जेतबए मन प्रसन्न भेलनि मल्लाहकेँ देखि मन ततबए दुखी। किएक तँ मल्लाह रानीकेँ देखि लेलकनि। रानीकेँ तँ तामसे मन माहुर-माहुर भऽ गेलनि। मनमे उठलनि जे केहेन मुर्ख राजा छथि जे हमर इज्जतिकेँ इज्जति नै बूझि जेकरे-तेकरे महलमे पठा दैत छथि। ई तँ नीक बात नै भेल। आ तामसे मलहाकेँ, अनाप-सनाप बजैत धक्का दऽ बाहर करबा देलकनि। आंगनमे जे माछ राखल छल। ओ ई सभ खेला देखि जखन बर्दास्त नै भेलै तँ ओ माछ हँसि पड़ल। आब तँ रानीकेँ कोनो अर्थे नै लगनि जे माछ हँसल तँ किअए? आब रानी राजाकेँ कहलनि-
''ई माछ हँसल किअए, से कहू नै तँ हम अन्न-पानि तियागि देब।''
रानीक गप सुनि राजाकेँ किछु फुरबे नै करनि। असमंजसक स्थितिमे आबि राजा भरि राज्यमे ढोलहो दिआ देलखिन जे रानीकेँ देखि माछ किअए हँसल? जे ई बात बता देत ओकरा भरपुर इनाम भेटत अन्यथा छअ मासक जहल दऽ देल जाएत। राज्यक पैघसँ पैघ विद्वान, पण्डित, ज्योतिषी लोकनि एलाह। दरबार लागल। मुदा माछ किअए हँसल रहए से कारण कियो नै बता सकलाह। जइ कारणे हुनका सभकेँ छअ मासक जहल दऽ देल गेलनि। अंतमे धरमपुरक ज्योतिषीजी बजाओल गेलाह। अबेर भेने ज्योतिषीजी राजाकेँ समाद पठा देलनि जे आइ तँ आब अबेर भऽ गेल तँए आइ नै, काल्हि तरगरे आएब।
प्रात भने ज्योतिषी स्नान-धियान कऽ चानन-ठोप दऽ विदा भेला राज-दरबार दिस। कुकर्मा जे बथानपर मालक थैरमे खेलाइत छल, देखलक जे ज्योतिषीजी चलला राज-दरबार दिस। कुकर्मा बाजल-
''नाना, यौ नाना कतए जाइ छिऐ? हमहूँ जाएब यौ नाना।''
ज्योतिषीजी अनेक प्रकारे कुकर्माकेँ फुसलौलनि। मुदा तखनो कुकर्मा बात मानक हेतु तैयार नै। एक्केटा जिद्द धेने जे आइ हमहूँ जाएब अहाँ कतए जाइ छिऐ।
हारि-थाकि ज्योतिषीजी बजलाह-
''राज-दरबार।''
''किअए?'' -कुकर्मा बाजल।

ज्योतिषीजी कहलखिन-

“रानीकेँ देखि माछ किअए हँसल, राजा ऐ रहस्यकेँ जानए चाहै छथि। जे सही उत्तर देथिन तेकरा उचित इनाम भेटतैक अन्यथा छअ मासक जहल। से तूँ अखन धिया-पुता छह नै जाह।”

मुदा तैयो कुकर्मा मानैले तैयार नै। फेर बाजल-

“नाना अहाँ बुतै ऐ बातक जबाक नै देल हएत। अहाँकेँ तँ ई बुझले नै अछि जे हमर माए कोन कुकर्म केलक आ तइ दुआरे हमर नाम कुकर्मा राखल गेल। की अहाँ वा कियो देखने छेलिऐ? से नै तँ अहाँ राजाकेँ जबाक की देबै। अहाँ हमरा नेने चलू राजाकेँ हम जबाब देबै। नै तँ अहाँकेँ छअ मासक जेल हेबे करत।”

ज्योतिषीजी कुकर्माकेँ संग कऽ लेलनि। पहुँचला राज-दरबार। दरबार लागल। प्रश्नक संग शर्त राखल। सुनि ज्योतिषी बजलाह-

“ई छोट-छीन प्रश्न हमरासँ नै पूछल जाए। एकर जबाब हमर नाति कुकर्मा देत।”

राजा एक दिस कुकर्माकेँ देखथि तँ दोसर दिस प्रश्नक जटिलताकेँ। मनमे भेलनि जे आइ दुनू गोटाकेँ जलह लिखले छन्हि। प्रश्न सुनि कुकर्मा बाजल-

“राजा सहाएब, ऐ प्रश्नक रहस्यकेँ नहिये बूझू तहीमे कल्याण अछि।”

मुदा राजाक जिज्ञासा बढ़िते गेल। अंतमे राजा आदेश पाबि कुकर्मा बाजल-

“राज सहाएब, अखनो सोचि लिअ। भलाइ अहीमे अछि जे नै बुझियौ। अन्यथा अकल्याण निश्चित।”

मुदा राजा बातकेँ मानैले तैयारे नै होथि।

तखन कुकर्मा बाजल-

“जौं अपने ऐ रहस्यकेँ बुझबे करब तँ रानीकेँ राज-दरबारमे बजाओल जाए।”

राजाकेँ आदेश पाबि रानी आ हुनक दुनू दाइ सेहो बजाओल गेल।

कुकर्मा बाजल-

“राजा सहाएब, दस हाथक दुरीपर दूटा खम्हा गारल जाउ। आ भरि जाँघ ऊपरमे एक खम्हासँ दोसर खम्हामे एकटा मजगूत रस्सी बन्हबा देल जाउ।”

तहिना कएल गेल। ओकर बाद कुकर्मा रानीकेँ कहलक-

“रानी, आब अहाँ ऐ रस्सीकेँ फानू।”

रानी रस्सीकेँ फानि गेलीह। तकर बाद रानीक संग आएल एकटा दाइकेँ कहलक जे आब अहूँ ऐ रस्सीकेँ फानू। दाइ फानए लगल। तखने कुकर्मा हुनक साड़ीक एकटा खुट पकड़ि लेलक। दाइ फानल सारी खूजि गेल। भरल दरबारमे दाइ चिन्हार भऽ गेलीह जे ओ दाइक रूपमे मौगी नै मरद छल। तहिना दोसरो दाइक सएह रूप। उहो दाइ मरदे। सबहक पोल खूजि गेल। तखन कुकर्मा बाजल-

“राजा सहाएब, अखनो बुझलिऐ जे माछ किअए हँसल छलै? जइ रानीकेँ अपन प्रजाकेँ पुत्र वत्सल मानक चाही तकरा देखि ओ अनेरे क्रोधसँ आन्हर भऽ गेलीह।

आ अनेको तरहक बात कहलनि। मुदा जे स्वयं स्त्रीक भेषमे दूटा मरदकेँ अपन भजार बना मौगीक रूपमे रखने छथिन। तकर कोनो लाजे-गराइन नै। यएह सभ किरदानी देखि, तखन उ माछ हँसल छल।''

राजा सभ वृतान्त देखि सुनि म्यानसँ तलबार निकालि रानी सहित दुनू मरदकेँ दू-दू खण्ड काटि देलक। जहलमे भरल सभ विद्वान आ ज्योतिषी लोकनिकेँ मुक्त कऽ देल गेल। धरमपुरक ज्योतिषी जीकेँ उचित आदर-सम्मानक संग प्रयाप्त अशर्फी पुरस्कार स्वरूप देल गेल। ज्योतिषी जीकेँ कुकर्मा प्रतापे जय-जयकार भेल। ऐ तरहेँ ओइ मुण्डपर लिखल ई बात सत्य भऽ गेल-

जे किछु होतब से भऽ गेल, किछु बाँकी छै
एकक जन्म आ तीनक मृत्यु।

ऐ तरहेँ कुकर्मा अपनो खूब नाम कमेलक आ अपन माए सुनायनाक लाज बचेलक।

दुर्गानन्द मण्डल

१

नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि

मैथिली साहित्यक एकटा विधा नाटक अछि, जे विधा सभ दिन रौदियाहे सन रहल। गिनल-चुनल नाटककारक किछु नाटक जे आंगुरपर गनल जा सकैत अछि, दोगा-दोगी कोनो पुस्तकालयक शोभा मात्र बढ़ौलक। एकटा समए छल जइमे नाटककार जे नाटक लिखलनि तइमे वाक्-पटुता नै रहबाक कारणे वा शुद्ध-अशुद्ध उच्चारण नै भेने वा समुचित वाद-संवादक संग समदियाक अभाव सभ दिन देखल गेल। चूँकि ओना हम जत्ते-जे ढकि ली मुदा एकटा सत्यकेँ स्वीकार करए पड़त जे हम मैथिल छी। हमरालोकनिक मातृभाषा मैथिली भेल। मुदा माएकेँ माँ कहैत कनेको लाज विचार नै होइए। जेना कि आँखिसँ लाजक पानि खसि पड़ल। तात्पर्य, मैथिल होइतो दोसर भाषाक दासताक शिकार भेल छी आ ओकर भोग भोगि रहल छी, बुझाइत अछि जेना मैथिलीक लेल ऐठामक माइटिये उसाह भऽ गेल अछि,जइपर गदपुरनि मात्र उपजि सकैए। मुदा ओहेन उसाह माटिपर ''बेटीक अपमान आ छीनरदेवी'' लिखि नाटकार बेचन ठाकुर, चनौरागंज, मधुबनी, मैथिली नाट्य जगतमे एकर सफल मंचन

कऽ महावीरी झंडा गाड़ि समस्त मैथिली, मैथिल आ मिथिलाक मान-सानकेँ मात्र बढ़ेबे टा नै कलनि अपितु चारि-चाँद लगा देलनि। ऐ लेल ठाकुर जीकेँ समस्त मैथिल भाषी आ नाट्य प्रेमीक तरफसँ हम कोटिश: धन्यैवाद दैत अपार हर्ष महसूस कऽ रहल छी। हमरा विश्वास अछि जे अपने ई दुनू रचना जेकर मंचन अपने अपनहि कोचिंग संस्थानक छात्र-छात्रा लोकनिसँ करा, ई साबित कऽ देलौं जे मिथिलाक माटिमे अखनो ओतेक शक्ति बचल अछि जइपर केसरो उपजि सकैत अछि।

नाटककारक नाटकक विषय अति उत्तम छन्हि। वर्त्तमान शताब्दीक सभ मनुख ऐ बातसँ भिज्ञ अछि,सरकारी सर्वेक्षणसँ सेहो स्पष्टत अछि जे दिनानुदिन लिंगानुपात बढ़ि रहल अछि। सभ राज्यक अनुपात थोड़े ऊपर-नीचाँ भऽ सकैए मुदा कियो ऐ बातसँ मुँह नै मोड़ि सकै छथि जे प्रति हजार लड़िका-लड़िकीक बीच एकटा बड़का खाधि बढ़ैत जा रहल अछि, जइ खाधिमे लड़िकीक अनुपात निरंतर नीचाँ मुँहेँ गिड़ैत जा रहल अछि आ हमरा लोकनि कानमे तूर-तेल दऽ निचेनसँ सूतल छी। जौं ई क्रम जारी रहल तँ आगू की हएत से तँ सोचू!! ई एकटा प्रश्नवाचक चिन्ह छोड़बामे नाटककार एकदम सफल रहला अछि। एतबे नै, आजुक वैज्ञानिक युगमे यंत्रादिक सहायतासँ ई जानि जे माइक गर्भमे पलैत बच्चाक,बेटा नै बेटी छी.... निर्मम हत्या करबामे कनिक्को कलेजा नै कँपैए!! जेकर कोनो कसूर नै ओकरा कुट्टी-कुट्टी काटि खुने-खुनामे कऽ माइक गर्भसँ बहार कऽ दै छिऐ। जइ बेथे ओइ बच्चाक माए पनरह दिन धरि बिछौन धेने रहैत अछि। ऐठाम एकटा गप हम फरिछा कऽ कहि दिअ चाहै छी, ओ बेथा हुनकर ओइ बेटीक प्रतिये नै जेकर ओ हत्या करौलनि अछि, अपितु शारीरिक बेथा छन्हि जइ लेल एत्ते आ एहेन कुकर्म करै छथि। ओइ निर्दोष बच्चाक माए-बाप दुनू ततबाए दोषी छथि। ओ ई नै बूझि रहल छथि जे जइ बेटीक ओ हत्याए करौलनि जौं ओ बेटी आइ नै रहैत तँ की अपने रहितौं? जौं बेटी नै हएत तँ सृष्टिक रचना संभव अछि? जौं हँ तँ केना वा नै तँ एहेन अपराध कऽ स्वयं किएक एतेक पैघ हत्यारा साबित भऽ रहल छी। रानी झांसी, लक्ष्मीबाई, सावित्री, अहिल्या, सती अनुसुइया, इन्दिरा गांधी,मैडम क्यूरी, मदर टेरेसा..., ईहो सभ तँ बेटीये छलीह। जौं हिनको हत्या पूर्वहिमे कऽ देल गेल रहैत तँ आइ.....। तखन आँखि रहैत एना हम सभ आन्हर किएक? बुइध रहैत मुर्खाहा जकाँ काज किए करै छी? मनुक्ख तँ मनुक्ख छी ने, छागर-पाठी आकि गाए-महिंस तँ नै जे कतौ कोनो.....। तहूमे साढ़े-पारा अधिक भऽ जाए, गाए-महिंस कम, तखन की हएत? जौं हम-अहाँ ई नै सोचबै तँ के सोचताह? ऐ हत्याक पाछाँ एकटा अओर कारण अछि जेकर नाओं थिक दहेज। मुदा उहो तँ हमहीं अहाँ लेबाल आ देबालो छिऐ। अखनो समाजमे आ प्राय: गाम पाछाँ एक-आध गोटे जरूर छथि जे अपन बालकक बिआह एकटा

नीक कुल-कनियाँ ताकि आदर्श बिआह कऽ उदाहरण बनै छथि। ऐ काजक दोषीकेँ सजा नै दऽ निर्दोषकेँ जानेसँ मारि दुनू परानी ऐ पापक भागीदारी छी। छीह.......।

शास्त्रो एकटा बात बतबैत अछि जे ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता।'' मुदा ओकर पूजा की करबै, ओइ देवीक संसारमे एबाक अधिकारे छीनि होइए, जे बड़का काज केलौं।

जतए समस्त विश्व ऐ समस्यासँ जरि रहल अछि ओतए नाटककार अपना नाटकक माध्यमे एकटा साधारणो लेखक सदृश अपन लेखनीक माध्यमे समाजमे ई संदेश देबामे पूर्णत: सफल छथि जे समए रहैत जौं नै चेतब तँ नाटकक मुख्य पात्र दीपक सदृश हाल हएत। जे अंतमे कनियाँक मुइला पछाति अपनेसँ भात पसाबथि, किएक तँ हुनक कनियाँ बरोबरि गर्भपात करेबाक कारणे शोनितक कमीसँ उड़ीस भऽ मुइलीह। एतबे नै, बेटीक अभावमे नगद गीनि आ तखन पुतोहु घर अनलाह। तखन हुनका कबीर साहैबक ई पाँति मोन पड़ैत छन्हि, ''सन्तोक सभ दिन होत एक समाना।'' आबो जौं नै चेतब तँ अहिना टाका दऽ बेटी बेसाहऽ पड़त। निरंतर चीज-बौस जकाँ बेटियोक दाम बढ़ैत जाएत, जेकरा किनैत-किनैत अहाँक प्राण निकलि जाएत। किएक तँ अपना समाजमे एकटा नै कएक टा मरूकियाबला अखनो जीविते अछि, जे चारि लाख एकावन हजार टाका नगद आ सभ सरंजाम संगहि बरिआती ऊपरसँ। चेतु हेमैथिल आबो चेतु। नै तँ आब ओ दिन दूर नै जे गाड़ीपर नाव रहत। आब बेटी अपन अपमान बरदास नै कऽ सकैए।

ऐ प्रकारे नाटककार समाजक लेल एकटा पैघ संदेश दऽ रहल छथि जे गर्भपातसँ पैघ कोनो पाप नै होइत अछि। तँए ऐ पापसँ बची आ बेटीक बाप बनी। अहुना बेटा आ बेटी दुनू कोइखिक श्रृंगार होइए। ऐ तरहेँ श्री बेचन ठाकुर जी हमरा लोकनिक नीन तोड़ैमे सफल रहला। जे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीक प्रेरणापूर्ण आदर्शवादी व्यक्तिक हाथ हुनका माथपर छन्हि, हम सेहो बिनु मंगने शुभकामना दैत छियनि, रहबनि, जे अहिना नाटक लिखैत रहथु, मंचन करबैत रहथु। धन्यवादक पात्र श्रुति प्रकाशनक श्रीमती नीतू कुमारी आ नागेन्द्र झाजी कँ जे प्रकाशनक समस्त भार उठा कृतज्ञ हेबाक मौका देलखिन। जौं विदेह प्रथम पाक्षिक ई-पत्रिकाक सह सम्पादक उमेश मण्डल एवं सम्पादक गजेन्द्र बाबूकेँ, जिनक अथक सहयोगक प्रसादे प्रकाशनक रास्ता सुगम आ प्रकाशन सफल भेल, तँए नै लिखब-कहब तँ अनुचित।

२

जीवन-मरण :: दुर्गानन्द मण्डल

जीवन-मरण उपन्यास, एकटा लब्ध प्रतिष्ठित उपन्यासकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीक अनुपम कृति अइ। हुनक लिखल अनेको उपन्यास, जे एक-सँ-बढ़ि-कऽ एक अछि। जइमे उपन्यासकार द्वारा उठाओल गेल विभिन्न प्रकारक सामाजिक रूढ़िवादिताक ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत कएल गेल अछि। मात्र प्रस्तुतिकरण धरि कथा नै अपितु ओकर सामाधान तकबामे सेहो उपन्यासकार सतत् सफल रहला अछि।

प्रस्तुत उपन्यासमे मनुखक जे अपन जिनगी छै, ओकर जे अपन समाज छै, समाजक प्रति व्यक्ति विशेषक उत्तरदायित्व होइत अछि से, आ नवका पीढ़ी जे पश्चिमी सभ्यताक असभ्यतासँ ग्रसित भऽ असभ्य बनि गेला अछि तइपर उपन्यासक आरंम्भमे एकटा कसगर चोट देलनि अछि।

देवनन्दन जे बेवसायसँ डॉक्टर छथि, पत्नी शीला द्वारा जनलनि जे पिताक मृत्यु भऽ गेल तैयो घबरेला नै सोचलनि पिताक अपन समाज छन्हि जइ बीच ओ अपन जिनगी बितौलनि। तँए उचित हएत जे हुनका अपना समाजमे पहुँचा दियनि आ मृत्युक सभ कर्म सामाजेक अनुकूल बढ़ियासँ करी निर्णए लेलनि।

मोबाइलसँ नम्बर निकालि, टिपि अपन जेठ बेटा दयानन्दकेँ जनौलनि-
''बच्चा, बाबू मरि गेलाह, तँए दुनू भाँइ गाम आऊ।''
मुदा वाह रे पश्चिमी सभ्यता! देखू हमरा लोकनिकेँ केना ग्रसित केने अछि, दयानन्द बाजि उठलाह-
''बाबू, ऐ लेल गाम किअए जाएब? आब तँ बिजलीबला शबदाहमे आसानीसँ काज सम्पन्न भऽ जाइत अछि''
दयानन्दक विचार सुनि देवनन्दन कहलकनि-
''बच्चा, सभ जीव-जन्तुकेँ अपन-अपन जिनगी होइत अछि। आ जे जेहने जिनगीमे जीबैत अछि ओकरा लेल वएह जिनगी आनन्ददायक होइत अछि। जेना, चीनी, मिरचाइ आ करैला तीनूक तीन तरहक स्वाद,मीठ, कड़ू आ तीत होइए। मुदा की मरिचाइक कीड़ा आबि करैलाक कीड़ा चीनीमे जीब सकत?कथमपि नै। जखन की ओ तँ अधलाहसँ नीकमे गेल।''
पिताक बात सुनि दयानन्दकेँ आश्चर्य भेलनि, मुदा देवनन्दनक अनुसारे ऐमे आश्चर्य कोन। किएक तँ गामक दोसर नाम समाज सेहो छिऐ। जे शहर-बाजारमे नै अछि। ऐठाम उपन्यासकार समाजकेँ मानव नै मानवक जे मूल सभ्यता छै ओकरा एकैसम सदीक नव पीढ़ी लेल एकटा मिशाल देखौलनि अछि। जे वर्त्तमानमे आजुक पीढ़ी समाजकेँ नै बूझि किदैन बुझै छथिन, ओ बिसरि गेलाह जे समाज की

थिक,ओकर मान-मर्यादा कि होइ छै, सामाजिक बन्धन की छी, ओकर कानून-कायदा की छै। आजूक वर्त्तमान आधुनिक समाज जइमे सभ अपने पाछू बेहाल रहैए। ओ केकर सुख-दुख, जीवन-मरणकेँ सुनत। ओ तँ भरिपेट नीक अन्न-तीमन खाएब मात्र जनैए। मुदा तइसँ कि मन थोड़े अस्थिर भऽ सकैए। जाधरि आत्माक संतुष्टि नै हेतैक। बुझेबामे केत्तौ कोनो प्रकारक किन्तु-परन्तु नै राखि, मनुक्ख एकटा सामाजिक प्राणी होइत अछि, ओकर अपन एकटा समाज छै, जइमे सभ एक-दोसराक सुखसँ सुखी आ दुखसँ दुखी होइ छथि, देखेबामे सफल भेलाह। वर्त्तमानमे जन्म जरूर जाति-समाजमे होइ छै, मुदा लगले आँखि-पाँखि भेने हमरालोकनि अपन मूल समाजकेँ भूलि-बिसरि आन समाजमे मिलि हूलि-मालि उठेने रहै छी। केतेक दुखक बात भेल। कला आ संस्कृतिसँ दूर तँ स्वभाविक रूपे तँ छिहे ओना हम सभ कतेको नोर मंचपर किएक ने बहा ली।
दोसर दिस उपन्यासकार मिथिलानिक एकटा गजब चित्र प्रस्तुत केलनि अछि। मैथिल नारि अपन पतिकेँ परमेश्वर मानै छथि। जिनकेपर हुनका भरि मांग सेनुर आ भरि हाथ चुड़ी रहैत छन्हि। अपना पतिक प्रति कतेक निष्ठा रखै छथि स्पष्ट अछि-
‘‘अदौसँ सावित्री, अनुसुईया आदि ऐ विषयमे जगविदित छथि। देवनंदनक माए सुभद्रा जिनका चेहरापर सोग नै अपितु सिनेह उमरि रहल छन्हि। मोने-मन आनंदित जे, जहिना हाथ पकड़लनि तहिना पार-घाट लगा देलनि। भड़ल-पुड़ल फुलवाड़ी अछि कतौ हेराएल रहब।’’
मिथिलानिक महान विचार आ तियागक स्तरकेँ कतेक सुक्ष्म रूपैँ उपन्यासकार रखलनि अछि। तियागक मूर्तिक रूपमे ऐ तरहेँ स्पष्ट अछि जे पतिकेँ मुइला बादो हर्ष छन्हि जे हमरा अछेत मरलाह से नीके भेलनि। अन्यथा मोनमे लागल रहैत जे हुनक शेष दिन केहेन...।

सभ पौस-प्राणी गुनधुनमे पड़ल गाम चलल जा रहल छथि। देवनंदन सोचथि, से नै तँ आइ समाजक काज पड़त। समाजक की महत छै। मनुक्ख कोन तरहेँ सामाजिक प्राणी होइए, समाजक बीच बाबूजी केना जीबथि, कतेक परिवारसँ दोस्ती छलनि आ कतेकसँ दुश्मनी, गुनधुनमे पड़ल माएसँ पुछलखिन-
‘‘माए, कते परिवारसँ बाबूजी केँ दोस्ती छेलनि।’’ तखन माएकेँ मोन पड़लनि ओ समाज, जतए सभ मिलि कुमरम, बिआह, सामा, घरक गोसाँइसँ लऽ कऽ दुर्गा स्थानक गीत मोन पड़ए लगलनि। देवनंदनक बात सुनि माए-सुभद्रा बजलीह-
‘‘छिया, छिया। मिथिलाक समाज छी। ऐ समाजमे मुर्दा जरबैले, केकरो घरक आँगि मिझबैले, केकरो-साँप-ताप कटने रहल आकि गाछ-ताछपर सँ खसलापर

केकरो कियो कहै नै छै। ई सामाजिक काज छी। तँए, अपन काज बूझि सभ अपने तैयार भऽ जाइत अछि।"

ऐठाम उपन्यासकार मिथिला आ मैथिल समाजक एकटा विलक्षण उदाहरण द' अपन सभ्यता आ संस्कृतिक परिचए द' समाजक समुद्री रूपकेँ दर्शन करौलनि अछि। पूर्वोमे बाढ़ि एलापर करियाकाका आ देवनंदन द्वारा उठाओल गेल कदम आबैबला समाजक लेल एकटा आदर्श उपस्थित केलनि अछि। आखिर दिन बिसेक बाद सभ घूमि अपन-अपन घर आएल रहथि। ओही समाजक एकटा अभिन्न अंग देवनंदनक पिता जे समाजक प्रतिष्ठित व्यक्ति रघुनंदनक लहाश गाम पहुँचते आगू-आगू गाड़ी आ पाछू करमान लागल लोक दियादीमे सबहक चुल्हि मिझाएल।

दोसर दिस उपन्यासकार जे मर्द-पुरुखक क्रिया-कलाप, स्त्रीगण सबहक गप-सप तँ एक दिस 111 बर्खक रधिया दादी गाइक गर्दनि जकाँ लटकल चमरी, बाइस गाहीक बर्ख भेल, पूर्वमे रधुनंदनकेँ कतेको दिन दूध पिऔने रहथिन, उपस्थित क' सामाजिक आ मातृत्व प्रेमक ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत केलनि। जिनका दादी जूरशीतलमे अछिंजलसँ असिरवाद द' फगुआमे रँगो खेलाइत छलीह। से सप्तरंगी समाजक इंद्रधनुषी संबंधक एकटा विलक्षण उदाहरण अछि।

श्राद्ध-बिआह समाजेक काज होइते अछि। समाज तँ समाजे होइए तहूमे ओहेन समाज जइठाम रघुनंदनकेँ उत्तरे-दछिने सुता उज्जर दप-दप वत्रसँ छाँपि सिरहानामे धूप-गुगुल जरैत अछि। तइ बीच बचनू, चंचन,झोली, बौकू, बतहू देहपर तौनी आ डाँरमे धोती पहिरने कान्हपर कुरहरि नेने संग-मिलि कानी-गाबी आ हँसी ऐ सँ पैघ सुख केकरा कहबै? जइ सुखक लेल लोक नीच-सँ-नीच काज करैए मुदा पाबि नै पबैए। ऐठाम उपन्यासकार भौतिक सुखकेँ सुख नै मानि आत्मिक सुख, अतिइन्द्रिय सुख जइसँ आत्मिक शान्ति भेटैत छै, ओ वास्तविक सुख थिक। तँए मात्र दैहिक सुखकेँ क्षणिक आ आत्मिक सुखकेँ वास्तविक बता अपनाकेँ आध्यात्मिक हेबाक सेहो परिचय द' समाजोकेँ आध्यात्मिक बातपर चिन्तन-मनन अनुकरणक प्रेरणा देलनि अछि।

समाजक समस्त काजक जिम्मा करियाकाकापर छन्हि। समाजक ऊँच-नीच, छोट-पैघ सभ जातिक लोक, जाति-परजाति सभ मिलि रघुकाकाक काजमे पूर्ण सहयोग देबए चाहै छथि चाहे ओ किर्तनिया हुअए आकि भजनिया, लेलहा हुअए आकि बौका, सुन्दर काका होथि वा छीतन भाय दुनू परानी जे जातिक डोम छथि। जे पूर्वमे गुनापर रघुकाकाकेँ पाँचटा गीत सुनौने छलाह। जीविते छथि छीतन भाय। छितनो भायकेँ बरियातीमे हकार देब नै बिसरब, समाजक जाति-पातिक कुप्रर्थासँ निकालि मनुक्खक जे एकटा अपन समाज होइछ, मनुक्खक जे एकटा जाति होइए जइमे सभ वर्ग आ वर्णक लोक रहैए,वास्तवमे ओ ने समाज छी। ओइ जातिगत

भावनासँ ग्रसित समाजकेँ ऊपर मुँहेँ उठा स्वच्छ वातावरणमे शुद्ध साँस लेबाक बाट देखौलनि हेन। जहिना हवा अनेक गैसक मिश्रन छी तहिना तँ समाजो अनेक वर्ग आ वर्णक मिश्रण छी। जौं से नै तँ कियो एक-दोसरक बिना जीब सकत? संभव नै, मुदा से बुझैत लोक अपने स्वार्थमे आन्हर भेल रहैए। आ फल्लांमा डोम तँ फल्लांमा दुसाध ई संस्कार नैन्हियेटा सँ माए-बाप देबामे पाछू नै रहै छथि। आखिर एकटा प्रश्न हमरा तरफसँ, अहाँ प्रबुध समाजक लेल अछि,जौं समाजमे सभ जाति नै रहत तँ की समाजिक जीवन चलि सकत यदि हँ तँ केना? जौं नै तँ फेर एहेन भावना किएक? डोमसँ हम छूबल जाएब, मुदा ओकर बनाओल चीज-बौस गौसाँइ-पितरपर चढ़त तँ की इष्ट-देव नै छुऔत। जौं छुआएत तँ सनातनिये सँ किएक ने..... ? आ जौं देव-पितर नै छुआएत तँ हमरा-अहाँकेँ छुएबाक कोन आधार बनल अछि??

झाँपले परदामे उपन्यासकार जाति-प्रथाकेँ तोड़ि एकटा आदर्शवादी समाज स्थापनापर जोर देलनि। जहिना फुलवाड़ीमे जुही, चमेली फूल रहैत अछि तहिना गेना गुलाब सेहो। अधला नै तँ नीकक महत्ते की? तीत नै तँ मीठक स्वादे की? कारी नै तँ गोरे की? तहिना तँ समाजो एकटा फुलवाड़ी होइ छै। जइमे सभ तरहक लोकक अपन-अपन भूमिका होइ छैक।
विचार करबाक थिक जे वैदिक पद्धतिपर चलए बला समाजक चित्र जे जहजहि उपन्यासमे आएल अछि से तँ सहज अछि। मुदा आजुक ओहन समाज जइमे अलगाव अछि। मनुक्ख-मनुक्खमे एतेक अन्तर किएक अछि? प्रश्नक संग इशारामे उत्तर सेहो बतेबामे उपन्यासकार पाछू नै हटलथि। जेकर स्पष्ट उदाहरण रघुकाकाक बरियातीमे छीतन भाय सदृश लोककेँ अपन बाजाक संग भजन करैले चलैक लेल कहि एकटा आदर्श समाजक परिपक्व छाप छोड़लनि अछि।
ओतबे नै, एकटा कहावत अछि ‘भेल-गेलपर शिव जगरनाथ’ एहने एकटा व्यक्ति छथि फोंचभाय, पाही जमीनदारक टहलू धड़फराएल आबि छौंकए चाहै छथि ई बाजि-
‘सभ कथुक आरिऔन तँ देखै छी मुदा ससर आ घी कहाँ अछि?’
माने काज भँगठा एवं भरिया देबए चाहलनि। मुदा लेलहा फोंचभायकेँ चौहटैत ई सावित क’ देलकनि जे रघुकाका आ देवभाय सँ हमरो केकरोसँ कम अपेक्षा नै। फोंचभाय कएल काजमे केवल गलतियेटा तकैबला लोक छथि।

मुदा हाय रे उपन्यासकार, समस्त उपन्यासमे जीवन थिक तँ मरण असंभावी.., ई खेल चलिते रहैए। अही समाजक बीच लोक जनमो लइए आ मरबो करैए। पैघत्व तँ ऐ बातमे अछि जे जइ समाजमे रघुबाबू सन दाता छलाह आइ ओकरे ऋृण

चुकबए खातिर अर्थी उठबैले बुझू जे मारि भ' रहल अछि। तही बीच लेलहाक मुँहसँ अनायास निकलल जे सुनै जाउ, कान्ही लगा उठबियनु नै तँ दरद हेतनि।'सभ मानि गेल।

एक दिस आंगनसँ लहास उठल आ दोसर दिस सहनाइपर विदाइक धून। आहहा... यएह तँ सुख आ दुखक दुनियाँ छी। जीवन-मरणक सार्थकता छी। मुदा हमरालोकनि जीवनक एक्के भाग देखै आ जनै छी। जीवन आ मरण सृष्टिक चक्र छी। ऐसँ कियो बाँचल कहाँ। एक दिस करियाकाका आ दोसर दिस सुन्नरकाका रघुभायकेँ अंतिम प्रणाम कऽ डेग आगू बढ़ौलनि। पाछू-पाछू देवनंदनक हाथमे आगि आ कोहा दऽ पाछू-पाछू बरिआती सजि विदा भेल। तइ पाछू करियाकाका रेलगाड़ीक गार्ड जकाँ पाछू-पाछू। गाछी पहुँचि सभ कियो सभ कथुक जोगर अपना-अपना विवेकसँ लगा सिरहौना-पथौना रूपी औछाओनपर सुता एक-एक चेरा चढ़बैत छाती भरि ऊँच कऽ सुन्दरकाका देवक बाँहि पकड़ि धधकैत उक मुँहमे लगा देलकनि। बाँकी सभ काज समाजक निअमानुसार तेरहसँ सत्तर दिन धरि चलैत रहल। समाज तँ समाजक निअम। तही बीच हुलन दुनू परानी, जेकर आधा देह झाँपल आ आधा उघार छल, ओसरक नीच्चेसँ अपन कर्मकेँ धर्म बूझि प्रणाम केलकनि आ मने-मन सोचबो करए जे रघुबाबूक काजमे कत्ते वर्तन लागत।
ईम्हर देवबाबू जिनका गाड़ामे उतरी छन्हि हुनकोसँ बेसी चिन्ता करियाकाकाकेँ छन्हि मुदा करियाकाकासँ कम कुसुमलाल पण्डितकेँ कहाँ छै? ओकरा तँ ऐ बातक चिन्ता छै जे श्रधुआ वर्तनक काज तँ दसम-एगारहम दिन हएत, मुदा दहीक लेल?
ओतबे नै, रघुनन्दन बाबूक काजक मादे ततबेक चिन्ता राजेसर नौआकेँ सेहो। जेकर काज एक दिस पुजबैक प्रकिया तँ दोसर दिसि कर्म सम्पन्न करेबाक। मुदा एतेक सभ किछु होइतौ अपना समाजमे जे पण्डितक किरदानी छन्हि तेकरो बखिया उघारैमे कतौ कमी नै रखला अछि। जे नायकक रूपमे शिवशंकर छथि जे अदौसँ अद्यतन आन-आन श्राध-कर्मक उदाहरण दऽ जजमानक खून उड़िस जकाँ पीबैत रहलाह जेकर साक्षात् उदाहरण सिट्ठी भेल समाज सबहक सोझामे अछि।

मनुक्ख विचारसँ पैघ होइत अछि। विचार बदलल। नव पीढ़ीक प्रसादे सुन्दर आ दुधिगर गाए सभ सेहो गाममे आएल। तइ बीच चाहक संग सभ सभ अपन-अपन विचार रखलनि। जइमे सर्वसम्मतिसँ विचार यएह भेल जे पाँच गोटे विचार कऽ डेग उठाउ,

(1) श्राद्ध घरवारी आ कर्ताक अनुकूल हुअए। दानस्वरूप मात्र झरखंडी बाछा नै दागल जाए।

(1)(2) आन गामक पंच माने भोज खेनिहारसँ परहेज कऽ गामक सभ जातिकेँ खुऔल जाए आन गामक दोस्त कुटुम-दिआद तँ रहबे करता।

(1)ऐ प्रकारे उपन्यासक मादे उपन्यासकार हमरालोकनिक बीच व्याप्त विभिन्न प्रकारक नीक आ अधला प्रथा-रीति-चलनि-मान्यताक बीच विभिन्न प्रकारक लोक सबहक अमुल्य विचार आ ओही समाजक दालि-भातमे मुसलचन्दक उदाहरण दऽ ओकरासँ सावधान केलनि। सृष्टिक जे चक्र छी जीवन-मरण जइसँ कियो बँचि नै सकै छी जेकरा समाज आ कर्त्तकेँ मनोनुकूल कऽ समाजमे रचनात्मक काज करी ऐ लेल एकटा दिशा-निर्देश देलनि। जेकरा देवनन्दन जी अपने शब्दे स्वीकार कऽ पिताक निम्मिते साले-साल भोजे नै वल्कि यथासाध्य कल्याणकारी काजक प्रेरणा देलनि।

दुर्गानन्द मंडल-

कथा-

लाल भौजी  दुर्गानन्द मण्डलजीक

पछिला अड़तालिस बर्खक सभ रेकार्ड घ्वस्त करैत एहि बेरक जाड़ पाँछा छोड़ि देलक। कहबी छैक जाड़ मासमे रुइये आकि दुइये मुदा रुइ ततैक महग जे बेसाहब कठिन। जँ दाम पुछबै तँ माधो मास सौंसे देह पसीनासँ तर-बत्तर भऽ जाएत। जहाँ धरि दूइएक सवाल अवैत अछि तँ ई सुख प्रायः सबहक कपारमे लिखले नहि अछि। जँ क्यो किशोरावस्थाक बालक-बालिका छथि तँ राति सपनाइते वितैत छन्हि, आ बुढ़हा-बुढ़िक तँ कथे नहि पुछू किऐक तँ आइ ने ओ बुढ़ भेलाहहें मुदा ऐहेन कतेको जाड़ कऽ ओ लोकनि देखने छथि आ खेपने छथि। तँ फलक रुपमे केराक घोड़ जेकाँ हथ्थे-हत्थाक असथानपर गन्डाक-गन्डा धिया-पुता सोहरल छन्हि। बाल-बच्चाक समर्थ रहबाक कारणे ओकरा सभकँ तँ अपने खाए-खेलाएसँ पलखति नहि। ताहू परसँ जँ कोनो पाहुन-परख चल आबैथि तँ घरक सवर्था अभावे। सभ घरकँ बेटा-पुतोहू अलगे छेकने। तँ बुढ़ा-बुढ़िक लेल तँ माध मासक जाड़ प्राणक हार बनल रहैत छनि।

कोनो तेहन अवसरे नहि भेटि पबैत छनि जे समए सँ ओइ कहबीसँ किछु लाभ उठाबथि। तँ ओम्हर बुढ़ि कोनो कोन मे धोकरी लगा पुआर मे धोसिआइल रहैत छथि। आ ऐम्हर बुढ़हा दलानक कोनो कोनमे पोता पोतीक संग जाड़सँ सर्घष करैत रहैत छथि। कोनो तरहेँ दुनू परानी (बुढ़हा-बुढि) राति खेपक लेल मजबुर। मुदा से कते दिन धरि?

एक दिन मौका पाबि बुढ़ा बुढ़िकँ हाक दैत छथिन- ''सुनै छै हाथ-पाएर जाड़े ठिठुरि रहल अछि, कनी कोनो मालीमे लहसुन तेल पका कऽ लेने आबो तऽ। बुढ़ि आंगनेसँ उतारा दैत छथिन हँ हँ सुनै छियै एते जोरसँ किए हाक दै छै, कोनो की हम बहीर छी? लेने आबै छियै। ताबे माले घरमे आगि तापो। बुढ़हा पुनः बाजि उठैत छथि- ''हे जल्दी सँ औते हम माले घरमे छी।''

बुढ़ि करीब दस मिनटक बाद मालीमे लहसुन तेल पका दुरुखे सँ हाक दैत छथिन- ''कतए छै हइया लौ।''

बुढ़हा फेरि बाजि उठैत छथि- ''एम्हरे लेने आबो ने हइया छियै।''

बुढ़ि लग अबैत बाजि उठैत छथि- ''ई किछो नइ बुझै छै? जे बेटी-पुतोहूबला अंगना-घर भेलै। सुतौ तेल लगा दैत छियै।''

बुढ़हा पुआरक बिछौनपर ओंघरा जाइत छथि आ बुढ़ि तेलक मालीश करए लगैत छथिन। कने कालक बाद बुढ़ा तेल लगबैत गरमा जाइत छथि। प्रेमसँ बुढ़िकेँ पुछै छथिन- ''भानस भातमे देरी छै की? बच्चा सभकेँ अंगना दऽ आबौ खा पी कऽ सुइत रहतै आ ई एत्ते आगि तापो।''

बुढ़ि आंगन जा धिया-पुताकेँ पुतोहू सभकेँ दैत अपने बुढ़हा लग आबि जाइत छथि आ मालक घरमे पजरल घुरा लग बैसि आगि तापए लगैत छथि। दुनू परानीक गप्प-सप्प करैत बुढ़हा हाथ-पाएर सुग-बुगबए लगैत छथि। आ अपन दहिना हाथ बुढ़िक बामा.........

- हाथ दैत बाजि उठैत छथि एकरा एक्को रत्ती कोनो बातक घ्यान नै रहै छै। कहौ तँ कतैक जाड़ होइत छै..... कहैत बुढ़िकेँ पाँजमे उठा आ पुआरक बीछौनपर ओंधरा जाइत छथि। कनिये जा कि लट्टा-पटी होइत आकि तखने आंगनसँ पोता-पोती खा कऽ सुतैक लेल बाबा किलोल करैत मालक घर दिशि दौड़ पड़ैत अछि। बुढ़ि बाजि उठैत छथि- ''छोड़ौ ने, छोड़ौ धिया-पुता सभ आबि रहल छै।'' आ दुनू परानी माने बुढ़ा-बुढ़ि गरमाएले अवस्थामे एक-दोसरासँ धड़फड़ा कऽ अलग भऽ जाइत छथि। रहल जबान-जुआनक गप्प, जबानीक धाह पावि जाड़ो गरमाएले रहैत अछि। बुझू तँ दू परानी जबान-जुआन होथि आ उपरमे रजाइ परल हो तँ जाड़ोकेँ जाड़मे पसीना छुटए लगैत छै। मुदा प्रकृति तँ स्थिर रहत नहि। ओ तँ अपना कालक्रमे चलैत रहत। बीतल जाड़ मास आएल सरस्वती पूजा उड़ए लागल वातावरणमे रंग-अबीर जारु कात डारि-पातपर चीड़ै-चुनमुनी चहकए लागल। कोइली धीया-पूताकेँ मुँह दुसब सुरु कऽ देलक। आमक गाछ मंजरसँ महमह करए लागल। मुनगा फूल धरए लागल, राइ, तोड़ी, तीसी आ सरिसबमे पीअर-पीअर फूल सेहो लहलहाए लागल। वातावरण किछु दोसरे रंगक भऽ गेल। चारु कात महमह करैत। कथा-कुटमैती शुरु भऽ गेल। कथकिया सभ ठाम-ठाम जाए-आबए लगलाह।

कथा फरिछैला उत्तर लाल-पीअर धोती आ ताहिपर लाठी हुरबला लाल-लाल ठप्पा अपन मैथिल सभ्यताक परिचए दिअए लागल। नेना-भुटका सभ फगुनहरि गीत गाबए लागल- ''यै बड़की भौजी करियौ बिचार,
कतै दिन रहबै आब हम कुमार
दैखैत देखैत हमरा ई भऽ गेलै
अहाँ बहीनसँ हमरा लभ भऽ गेलै। हरबाहो-चरबाहो सभ फगुआसँ सम्बन्धित मैथिली आ भोजपुरी गीत गाबए लागल। बाध-बोनमे मालो-महिस चराबए आ घर-घसबहिनीकेँ देखैत ई गीत गाबए- ''तोहर लंहगा उठा देव रीमौटसँ....।'' घसबहिनीयो सभ उत्तारा देनाइ नइ बिसराए ओहो सभ गाबए ई गीत- ''रओ छोड़ा बज्जर खसतो....।'' बुझू जे जाड़क खुमारी लोक सभ फागुनेमे उताड़ए चाहैत। जिनका परिवारमे नव विआह भेल रहनि, बुझू तँ हुनकर छओ आंगुर घीएमे आखिर एहि समएसँ भला गोधनपुर गामक रामदेव बाबूक छोटका बचबा उगन किऐक ने लाभ उठबितथि। किएक तँ एहीबेर बाइस दिसम्बर 2009मे हुनक अग्रज दुर्गानन्द जीक विआह दरभंगा जिलाक बरुआरा गाममे सम्पन्न भेल छलनि। तँ भैयासँ तँ डर जरुर रहनि मुदा नवकि कनियाँ अर्थात लाल भौजीसँ खुब रंग-रभस होइत छलनि। उगनक भौजी सेहो करीब एक्कैस बर्खक छलीह। बीस बसन्त तँ सुखले-साखले बितौलनि मुदा एक्कैसम बंसन्त बुझू जे ओ तँ रससँ उगडुब करैत छलीह। बेस पाँच हाथ नमहर-छड़गर, देहो दशा बेस भरल-पुरल गाल तँ बुझू हाइ ब्रीड टमाटर जेकाँ लाल टरैस आ बेस गुदगर। आँखि ऐहन कटगर जे जेकरा दिशि एक बेर ताकि देथिन तँ बुझू सोनित एक्को ठोप नइ खसैत मुदा ओ बेचारे घाएल भऽ जाइत। हुनकर जुट्टी तँ बुझू सुच्चा गहुमन साँप जेकाँ फूफकार छौड़ैत छलनि। नव विवाहित भेलाक कारणे सदिखन भरि बाँहि चुड़ी आ भरि हाथ मेहदी, आरतसँ रंगल पएर, भरि आँखि काजर आ भरि माङ सेनुर लाल टुहटुह करैत। क्यो जँ धोखहुँसँ देखति तँ आँखि चोन्हरा जाइत। सभसँ सुन्दर हुनक वस्त्राभुषणक परिरव आ ओढ़ब छन्हि। एक तँ गोड़ि नारि ताहिपर सँ सुगा पंखी रंगक साड़ी आ बेलाउज आ ओहिक तरमे उज्जर धप-धप करैत ब्रेसिअर जे पहिरथि ओकर उज्जरका फिता, से देखि से देखि उगनकेँ तँ मौगति भऽ जाइत छलनि। ओ मने-मन बिचारथि जे एहि बेरि फगुआमे लाल भौजीकेँ सभ तरहेँ लाल कऽ कए देबनि। दिन बितैत कोनो कि देरी लगैत छै। संयोग एहन जे एहि बेर फगुओ पहिले मार्चमे छल। जेना-जेना फगुआ लगिचाइल जाए उगनक मना तेना-तेना लाल भौजीक जुआनीसँ बौराइल जाइत छलनि।
फगुआसँ एक दिन पहिने उगन दरभंगा अपना डिपटीपर सँ गाम अबैत छथि। किलो दुइ मधुर नेने किलो एक अंगुर, आसेर काजू आ दू पैटिक किशमीस आ

चारि-चारि पैटिक हरियर लाल रंग सेहो हाथमे टंगने आएल संग-संग दू शीशी रम सेहो नेने आएल। पीठपर एम.आर. बला बैग। उगन आंगनसँ ससरि ओसारपर जाइत छथि आ ओतैसँ हाक दै छथिन- ''भौजी, यै लाल भौजी कतए गेलौं, आउ-आउ लग आउ हम छी उगन।''

लाल भौजी पलंगपर सँ उठि बाहर अबैत छथि। तात उगन पीठपरक बैग निचाँ राखि एक हाथे मधुरक पैकित लाल भौजीक हाथमे दैत आ दहिना हाथमे पहिनेसँ धोरल लाल रंग लाल भौजीक बामा गालपर लगबैत आ दहिना गालमे चुम्मा लइत बाजि उठैत छथि- ''अधला नइ मानब फगुआ छी। भौजी यै भौजी आब कहू मन केहन लगैए?''

लाल भौजी चौबनियाँ मुस्की दैत बाजलि- ''धूर जाउ, हमरा अहाँक ई चालि नइ सोहाइए।'' बाजि लाल भौजी अपना पलंगपर चलि जाइत छथि। आ उगन अपन कोठलीमे। राति भरि उगनक आँखिमे नीन नै भेल। सुतलीयो रातिमे रहि-रहि मन पड़ि उठैत छन्हि भौजी, लाल भौजी........।

पारस



दुर्गानन्द मंडल

पारस

“शान्ति यै शान्ति कतए नुकाएल छी यै फूलकुम्मरि?”

शान्ति- “एलौं याए एलौं।” आंगनसँ शान्ति हाक दैत लग आिब सोझामे ठाढ़ि होइत पुन: बाजि उठैत छथि- “कथीले एतै जोर-जोरसँ हाक दैत छलौं? कोनो खास बात छै की?”

हम- “ऐह, अहाँकेँ तँ सदिखन मजाके सुझाइत अछि। खास बात की रहत, अहाँ छी तँ सब खासे बात बूझु। ओना आइ विद्यालयक छुट्टी समाप्त भऽ गेल तँ झब दऽ खाइले किछु बनाउ। जे हम समएसँ विद्यालय चल जाएब।”

शान्ति बजलीह- “ओ..., आब ने बुझलहुँ। अहाँ तँ सब दिन गोलहे गीतकेँ गबै छी। ओना हे, आइ बड्ड सखसँ अपनहि बाड़ीसँ सुआ आ लौफक साग काटि अनलहुँहेँ। तेँ आइ साग-भात आ आल्लुक सानाक संग भाटा-अदौरीक तीमन बनवितहुँ से निआरने रही। मुदा ताहिमे तँ देरी होएत। तावत अहाँ स्नान-पूजा करू आ हम जलखैक ओरिओन कऽ दैत छी।”

“बेस, बड्ड बढ़ियाँ। कने अंग-पोछा आ धोती-कुरता बहार कऽ दिअ।” हम धोलूकेँ हाक दैत छी- “धोलू हौ धोलू। कतऽ छह हौ?”

“ऐलौं, याए ऐलौं बावू जी, कने नदी फीरि रहल छी।”

“वेस, बड्ड बढ़ियाँ। आ वौआ, है सुनै छह? आइ हमरा विद्यालय जेवाक अछि। से जात हम स्नान करै छी। तात् तौं साइकिलकेँ बढ़ियाँ जेकाँ झारि-पोछि दाए।” ई कहैत हम स्नान करबाक लेल डोल-लोटा लऽ कलपर चलि जाइत छी। स्नानोपरान्त पूजा-पाठ कऽ धोती पहीरि तैयार होइते छी तात् शान्तिक आग्रह- “सुनै छी, अहाँले जलखै निकालि देने छी, कऽ लिअ।” ई कहैत आगाँमे सिकीक चंगेरी, जे रंग-विरंगक रंगसँ रंगल मुजसँ बनौल गेल रहए, ताहिमे मुरही-चूड़ा, दूटा चूड़लाइ आ गोर पाँचेक तीलक लाइ संगमे काँच मेरचाइ आ नोन परसल छल, आगाँ बढ़ौलनि। एक क्षणक लेल हम मिथिला, मैथिल, मैथिलक संस्कार आ स्भयतासँ बहुत बेसी आनन्दित भेलहुँ। मन गद्-गद् भऽ गेल। तात् शान्तिक मधुर आवाज- “कतए हेरा गेलहुँ? एखन यएह खा, विद्यालयसँ भऽ आउ, जखन आएव तँ गरमे-गरम साग, भात, अल्लुक साना आ भाँटा-अदौरीक तीमन भरि मन खाएव। ओना जाड़ मास छै यदि किछु आरो मनमे हुअए तँ कोनो हर्ज नहि।” कहैत, हँसैत सोझासँ अढ़ भऽ गेलीह। आ हम जलखै करैत एहि मादक अदाक मादे सोचए लगलहुँ। हमरो मनमे गुदगुदी लागए लागल। जलखै करैत एक बेरि पुन: हाक देलिऐनि- “शान्ति, यै शान्ति....।” नहि जानि जे हुनको मनमे कोनो बात उमरि रहल छलन्हि। ओ गुनगुनाइत ई गीत- “एगो चुम्मा दे दऽ राजा जी, बन जाइ जतरा....।”

आवि वाणभटक नायिका जेकाँ लगमे सटि कऽ ठाढ़ि होइत प्रेमानुरूप एकटा चुम्मा लऽ छथि आ मुस्की दैत घरसँ बहार भऽ जाइत छथि। हम लजा जाइत छी।

करीब चालीस मिनटक उपरान्त विद्यालय पहुँचैत छी। हाथ-पएर धोलाक वाद हाजरी बनवैत छी। प्राथनाक घंटी बजैत अछि आ धिया-पूताक संग हमहुँ एक पातिमे ठाढ़ भऽ जाइत छी। उपरान्त ऐकर नवम्-बी मे हमर वर्ग रहैत अछि। हाजरी बही लऽ वर्गमे प्रवेश करैत छी। वर्ग नवम बी जे एकछाहा लड़कीएक वर्ग रहैत अछि, स्वागतार्थ सभ बच्चिया उठि कऽ ठाढ़ि भऽ जाइत अछि। वैसबाक आदेश पावि यथास्थान सभ बैसि जाइत अछि। सबहक हाजरी लेब सम्पन्न होइत अछि। तखन किछु बच्चिया सभ बाजि उठैत अछि- “मा-साएब, आइ ललका पाग पढ़बियौ, क्यो कहति अछि जी नइ सर आइ ग्रेजुएत पुतोहू पढ़बियौ। मुदा किछु खास बच्चिया यथा- राखी, गीतांजली, खुसवू, बबिता, रिंकी आ पिंकी कहि उठैत अछि- “जी नै सर आइ अहाँ अपने लिखल कोना कथा कहियौ। आ हम ओहि

आग्रहकेँ नहि टारि पबैत छी। शुरू कऽ दैत छी अपन लिखल ई कथा-
.....पारस।"

माँ मिथिलाक गोद आ कमला महरानीक कछरिमे बसल एकटा गाम दीप-गोधनपुर। जाहिमे छल एकटा चाहबला ओकर नाम छल पारस पिता श्री सत्य नारायण जी। नामक अनुरूप दुनू बापूत विपरीत छल। पिता श्री सत्य नारायण जरूर मुदा, सब चीजले खगले रहैत छलाह। एकटा प्राइवेट स्कूलमे अध्यापण कार्य करथि आ कोनो तरहेँ बाल-बच्चाकेँ पोसथि-पालथि। हुनकेर बालकक नाम पारस। नामक अनुरूप एकदम विपरीत, मझौले कदक जवान देहो-हाथ सुखले-टटाएल कारी-झामर हाथ-पाएर एकदम सुखल-साखल मुदा, पेट जरूर कदीमा सन अलगल। देहो-वगेह ओहने, सदिखन जेना मुँससँ लेर चुविते छलै। फाटले-चिटले कोनो जूता-चप्पल पहिर ओही प्राइवेट स्कूलमे पढ़ैत छल। मुदा अकिलगल कम नहि।

सत्य नारायणजीक घर जरूर बान्हेँ कातक सौ फिट्टा अर्थात् सरकारी जमीनमे छल, मुदा संस्कार कोनो सुसभ्य समाजक प्रतिक छल। सत्य नारायण बावूकेँ हरलैन्हि ने फुरलैन्हि खेलवा देलखिन पारसकेँ एकटा एकचारी देल चाहक दोकान। अर्थाभावक कारणे पारस उधार-पैंच लऽ कीनि अनलक चाहक दोकानक लेल बरतन-वासन यथा केटली, ससपेन, चाहछन्नी, स्टोव, दूध राखक लेल दूटा टोकना आ दूआ माटिक मटकुरी छाल्ही राखक लेल। चाहक दोकान जे नित्य समएसँ खुलैत आ बन्द होइत छल। क्रमश: महिसिक अगब दूधक चाह, एक्को ठोप पानिक छुति नहि, बरतन-वासन खुब पवित्र आ संस्कारी होएवाक कारणे ग्राहककेँ सेहो उचित सम्मान भेटनि। चाहक दोकान खुब चलनि। क्रमश: पाँच सेर दूधक बदला आध-आध मन दूध खपत होमए लागल। आमदनी नीक होमए लगलैक।

किछु पुंजी जमा केलाक बाद ओ एकचारी छोड़ि लऽ लेलक पक्काबला एकटा घर दोकान खोलए लेल। बना लेलक एकटा काउन्टर आ बढ़ा लेलक दोकानक मेल। साझु पहरकेँ बनाबए लागल सिंहहारा आ गरमा-गरम जिलेबी बात एककानसँ दूकान होइत गेलै एकर दोकानक नाम भऽ गेलै दोकान खूब चलए लागल।

समए पाबि 26 जनवरी आ 15 अगस्तमे प्रसादक लेल विशेष आदर पावि बनाबए लागल मनक मन बुनियाँ आ भुजिया। अगल-बगलमे प्राइवेट कोचिंग चलौनिहार संचालक आ निदेशक महोदयक योगदान एहि दोकनकेँ चलाबएमे अहम

भूमिका रखलक। दिन दुना आ राति चौगुना उन्नति होमए लगलैक। मनक-मन दूध खपत होएवाक कारणे घी सेहो बनबाए आ नीक दाममे बेचाए। देखैत-देखैत चाहक दोकानक आमदनीसँ कीनि लेलक ओ तीन बीघा जमीन। मुदा एकर उपरान्तो ओ चाहो बेचाए आ पढ़बो करए। समए पाबि प्राइवेट स्कूलसँ सातमा पास कऽ ओ एकटा संस्कृत विद्यालयमे नाओ लिखा लेलक, आ मध्यमाक फारम भरि फस्ट डिविजनसँ पास केलक। आव तँ ओ किछु बेसिए खुश रहैत छल। मध्यमा पास केलाक बाद ओ अपन नाओ जनता काओलेजमे झंझारपुरमे लिखा लेलक। तखनो ओ वेचारा चाहो बेचए आ पढ़बो करए। आइ.ए. पास केलाक बादो ओकरामे कोनो परिवर्तन नहि। काओलेजसँ ऐलाक वाद चाहक दोकानपर ओ जमि जाए। यद्यपि चाह बेचब एकटा केहन काज मानल जएतैक ई विवादक विषए अछि। ओकरा एक्को पाइ लाज-संकोच नहि। किएक तँ कर्म कोनो खराप नहि होइत छैक। कमा कऽ खाइ एहिमे कोन लाज कोनो कि ककरोसँ भिख मंगबै जे लाज होएत। तँ चाह बेचब अधलाह काज नहि से मानि ओ खुब जतनसँ अपन कतर्व्यक निर्वहन करए।

बुझिनिहार मैथिलमे एकर चर्च होमए लागल, जे देखू पारस चाहो बेचैए आ पढ़बो करैए। देखिते-देखति ओ मैथिली औनर्ससँ बी.ए. पास केलक। परोपट्टामे नाम भऽ गेलैक जे एकटा चाहबला चाह बेचैत बी.ए. पास केलकहेँ। तखनो ओ चाह बेचब नहि छोड़लक। बात पसरैत गेल।

एकबेरि एकटा कथा गोष्ठीक मादे सुपौल जेबाक छल। चारि गोट मात्र कथाकार विदा भेलथि दिन अछैते मुदा, कोशी महरानीक अभिशापे नावसँ यात्रा करए पड़ल आ घंटा भरिक बाट मात्र चारि घंटामे तय भेल। सुपौलसँ पहिनहि झल अन्हार भऽ जरा सेहो गेल रही। तँ चारू कथाकार चाह पिबाक लाथे बैसलौं एकटा चाहक दोकानपर। दोकानदारसँ- ''हौ, चारि कप चाह दिहह।''

ओ बाजल- ''जी, श्रीमान् दै छी।'' कहैत ओ चाहक जोगार लगबए लगल।

तात् ओतए गप्प कियो तेसरे आदमी चलौलन्हि। जे गोधनपुर गाममे एकटा चाहबला अछि पारस बी.ए. पास। बी.ए. पास केलाक बादो ओ चाह बेचब अधला नहि बुझैत अछि। चाहो ततवेक सुन्दर आ व्यवहारो ओकर ततवेक सुन्दर छै।

वाह। हर्ष भेल जे समाजकँ एहि वातक नजरि जरूर छैन्हिह जे एकटा पढ़ल-लिखल लोक चाह बेचैत अछि। ओकर नजरिमे कोनो काज करबामे हर्ज नहि।

एम्हर देखु जे वर्तमान सरकारमे नगर-पंचायत, जिला परिषद, टेन पलस टू विद्यालयमे नियोजनक भेकेन्सी भेल। तात पारस मैथिलीसँ एम.ए. सेहो कऽ लेलक।

भैकेन्सीक अनुसार विभिन्न जिलामे आवेदन केलक। समए तँ जरूर लागल। मधुबनी जिलाक मेघा सुचीक प्रकाशित भेल उपरहिमे ओकर नाम छलै। नियोजनक निमित्त सभ आवश्यक कागजात, मूल प्रमाण पत्र एवं शपथ पत्र देलाक वाद ओकर चयन इच्छानुकूल परियोजना विद्यालय मनसापुरमे मैथिलीक लेल भेल।

समाजक सभ वर्गकँ एहि बातसँ हर्ष भेल जे सत्यनारायण जीक बालक पारस आइ टेन पलस टू विद्यालयमे मैथिली पद्पर नियोजित भेलाह। साझखन सभ ओही चाहक दोकानपर उपस्थित भऽ पारस आ हुनक पिता सत्य नारायणजीकँ सभ शुभकामना आ बधाइ दैत कहलकनि- ''सत्य नारायण आव ओना काज नहि चतल, आव भोज-भातक आयोजन कएल जाउ। भोज लागत।''

सत्य नारायण आरो अह्लादित होइत बजलाह- ''सभ एहि समाजक आशीर्वाद थिक। अहीं सबहक अशीर्वाद थिक जे आइ पारस चाह बेचैत-बेचैत एकटा टेन-पलस टू विद्यालयक शिक्षक भेल। हम एहि समाजक ॠणी थिकहूँ। आइ जे समाज नहि तँ हमर कोनो अस्तित्व नहि। आइ हमहूँ गौरवान्वित भऽ रहल छी जे हमर बेटा हमरे बेटा नहि एहि समाजोक बेटा। जे एहि समाजमे सिर उठा कऽ जिवक, एकटा अलग स्वाभिमान देलक। एकटा आदर्श देलक। तँ हम भोज देवेटा करब। भोज जरूर करब।''

समए सुअवसर पावि सत्यनारायण बावू केलनि बड़का भोजक आयोजन। लगुआ-भगुआ हित अपेक्षित मित्र-बन्धु आदि एहि भोजमे नहि छुटथि आ हुनकर उचित सम्मान हुअए एहि बातक सदिखन खियाल रखलनि।

दुनू तरहक आयोजन छल, शाकाहारी आ मांसाहारी। निमंत्रित व्यक्ति सभ समएसँ उपस्थित भऽ आ स्वरूचि भोजन केलनि। शाकाहारीक लेल आयोजन छल। पुरान तीन-सलिया बासमती चाउरक भात, राहरीक दालि आमिल देल, पालक पूड़ी, पालक पनीर, आमक चटनी, सलाद, तरल मिरचाइ, मटर-आलू-परोर देल

डलना, बड़ी अदौड़ी, सकरौड़ी ताहिपर डब्बूक डब्बूक घी। महीसीक अगव दूधक तौलाक-तौला दही, तरहत्थी सन मोट छाल्ही बुझु तँ खेनिहार तर आ भोजेतक व्यवस्था उपर। दहीक तँ कथा नहि पुछू खेनिहार कम आ तौले बेशी। सभ क्यो गद्-गद् भऽ गेलाह।

एम्हर मांसाहरी लोकनिकेँ लेल अरवा चाउरक भात आ आध-आध मनक जुआएल खस्सीक लद-वद करैत मांस। किसिम-किसिमक मश्साला देल गम-गम करैत एकहक टा पीस बुझू जे सए-डेढ़ सए ग्रामक। ऐह अजोध खस्सी, माउस। बनलौ ततवेक सनगर। सभ भरि मन खएलाह। आ उपरसँ सेरक सेर दही फी आदमीपर। तर-बत्तर छलाह, भोज तँ जस-जस भऽ भेल।

सभ कियो भोजनो करथि आ पारसक चर्चो करथि। जे पारस तँ पारसे अछि। वस्तुत: पारस आब ओ पारस नहि रहल जे चाह मात्र बेचै छल। चाहे बेचेत ओ पारस तँ आव समाजक लेल ओ पारस भऽ गेल। जेकर गुणसँ कतेको नेना-भूटका आव चाहेटा नहि बेच समाजक बीच शिक्षाक ज्योति जगाओता। जाहिसँ अपना समाजमे पारस, पारस मणि गुणसँ प्रभावित होएत आ पारसक गुणसँ अपना समाजक कतेको बच्चा पारस बनताह।

अन्तत: बाउ लोकनि अहीं सभ कहू जे अहाँ सभ घर आंगनाक काज करैत पढ़ि लिखि की बनए चाहैत छी?''

एक स्वरमे उत्तर भेटैत अछि मास्सैव हमहूँ पारस बनवै पारस। कहैत सभ बच्चियाक संग राखी, गीतांजली, खुशवू, बवीता, रिंकू, पिकूक नोरसँ भरल ऑंखिमे एकटा विशेष आत्म विश्वास हमरा वुझना जाइत अछि। जेना ओ प्रखर ज्योति बहराएल हुअए अनमोल मोती पारससँ।

दुर्गानन्द मण्डल

स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर किछु स्वतंत्र भरास-

आइ भारतीय स्वतंत्राक 65म वर्षगॉठ मना रहल छथि। अनेरे प्रसन्न! सरकारी किंवा गैर सरकारी कार्यालय आजुक दिन स्वतंत्रता दिवसक रूपमे मना रहल अछि। विद्यालय सभमे सरकारी चिट्ठी पठा देल गेल जे फी विद्यालयक एक गोट मासाएब अमुख महादलित टोलमे झंडा फहराबथि, अन्यथा दण्डक भागीक हेता। कहक लेल सभ किछु अनसोहाते बुझना जाइत अछि। कि खादीक नम्हर कुर्ता, ठेहुनसँ निच्चा धरि, माथपर गॉधी टोपी, डॉरमे खदीक धोती पहिर राष्ट्रध्वजक समक्ष सभटा झुट्ठठे भाषण देल जा रहल अछि। सुनैत-सुनैत देहमे आगि लागि जाइत अछि। मोन कोना ने कोनादन करए लगैत अछि। झुट्ठा लोक सबहक झुट्ठ भाषण सुनैत-सुनैत पचास बर्खक भऽ गेलौं मुदा झुट्ठे बाजि अपने सन आनो जनकेँ परतारब कते अधलाह बात भेल! जँ हार-मौसक देह अछि तँ कनियो लाज हेबाक चाही, कि बाजि रहल छी, कि कऽ रहल छी? कि सभ दिन झुट्ठे बाजि भारतक स्वतंत्रताकेँ अक्षुन्न राखि सकै छी? ई हमरा लोकनिक बीच एकटा यक्ष प्रश्नक सदृश्य राखल अछि।

चारू कात देश भक्ति गीत बाजि रहल अछि। गीत सुनैत-सुनैत खुन खौलए लगैत अछि, ऐ सफेद पोस झुट्ठा सभकेँ देख कऽ जे समस्त भारतीय भाय-बहिन, माइ लोकनिकेँ सालो-सालसँ ठकैत आएल अछि। राष्ट्रध्वजक सामने बाजब किछु आ

करब किछु, हिनका सभक जन्म सिद्ध अधिकार भऽ गेल अछि। धिक्कार अछि एहेन भारतीय ओइ सन्तान सभकेँ जे भारत माताक संग झुठक बेपार करैत अछि। सवाल ई उठैत अछि, देशमे जखन चारूकात भ्रष्टाचार, बेबिचार, हत्या, बालात्कार, अपहरणक बेपार भऽ रहल अछि, तखन भारतीय कोन रूपेँ स्वतंत्र छथि? देशक शीर्षस्थ नेता लोकनिक करतुत प्रात होइते अखबारमे पढ़बामे अबैत अछि। भारतीय संविधानक ऊँचसँ ऊँच पदपर आसीन मत्रीगण क्यो बेदाग नै छथि। सबहक चद्दैरमे दाग लागल छन्हि। एकटा जहलसँ बहराइ छथि, तँ दोसर जेबाक लेल ततबाए आतुर! कथी खातीर? देशक रक्षा खातीर? कखनो नै। अपितु ई आरो स्पष्ट भऽ जाइत अछि, जे अहाँ कतेक पघि भीतरघाती छी। आइ खगता अछि ऐ बातक जे अपना-अपना भीतर झाँकि कऽ देखू जे अहाँ गॉधी, नेहरू, लोहिया, जे.पी.क भारतक कि दुदर्शा केलिऐ? कि अही कुकर्मक निर्वहनक लेल अहाँक भारतीय राजनीतिक क्षितिजपर बैसाओल गेल?

आइ जँ कियो सही आबाज उठबै छथि तँ ओकर ओधि उखारि अहाँ अपनाकेँ सुरक्षित राखए चाही छी। मुदा आब ओ दिन दुर नै जे अहाँ कखनो नाङट भऽ सकै छी आ अरबो-अरब भारतीय अहाँकेँ नाङटे-उघारे टी.भी.क पर्दापर देखत। तँए समए पूर्व चेतू हे मानव चेतू। अन्यथा ने सिर्फ भारतीय वल्कि अरबो-अरब जनसंख्या अहाँकेँ धुर छी! धुर छी! करत। कतेक दुखक बात अछि जे अहाँ सन सपूत भारत माताकेँ खोइछ खाली कऽ सभटा धन नुकाए कऽ आनठाम रखने छी। मुदा से ककराले?अपनेकेँ बूझक चाही जे ओ धन किसान-मदूरक खुन-पसेनाक कमाइ छी। ओ धन अहाँकेँ पचि नै सकैए। ओहि धनसँ ने तँ अहाँ अपन श्राध कऽ सकब आ ने बेटा-बेटीक वियाह। तखन ओ धन भोगत के?

ऐठाम आप्त चिंतनक खगता अछि। सोचू, कने विचारू, कोन तरहक कुकर्म आ केकरा लेल करै छी। जागू, जागू हे भारतक सपूत अखनो जागू। भारतक अखण्डता आ एकता लेल जागू। भारत सबहक माता थिकीह। माताकेँ सद्विचारसँ सजाउ। आउ, अपन तियाग, निष्ठा, लोभ, मोह, अहंकारकेँ तियागि भारतकेँ माता बुझि अपन खून-पसीना स्वच्छ वुद्धि विवेकसँ माताकेँ बचाउ। बचाउ अपन मानवताकेँ, नैतिकताकेँ आदि सनातन धर्मकेँ आ राजनीतिकेँ। देशमे जरूर प्रजातंत्रक शासन अछि। किन्तु सबहक आत्मामे रावणक शासन। तँए, आइ पन्द्रह अगस्तक अवसरपर आबि ओइ रावणकेँ खतम कऽ देबाक सप्पत खाउ। सप्पत खाउ जे अपन भारतकेँ रामराज्य बना अपने राम कहाउ।

धन्यवाद...,



दुर्गानन्द मंडल
सहायक शिक्षक,
उ. वि. झिटकी-बनगावाँ, मधुबनी (बिहार)।

बकलेल

गर्मीक समय, जेठक दुपहरिया, प्रचण्ड रौद, बिजली लापत्ता। ऐहन बुझना जाइत छल, जेना दाता-दीनानाथ आइ मनुखक परीक्षा लेमए चाहैत छथि। कतौसँ वसातक कोनो आश नहि। नेना-भुटका सभ एमहर भँए तँ ओम्हर भैंह, एम्हर कँ तँ ओम्हर कें करैत छल। बुझना जाइत छल जेना मखना तेलीक पहरा होअए। माल-जाल गर्मी सँ परेशान भऽ एकहक हाथ जीभ बवैत छल। लेडू आ परडुक तँ तेरहो

करम भऽ गेल छल। कोनो तरहें चंडलवा रौद आ दुपहरिया झुकल, मन कनेक थिर भेल मुदा राति खन उएह हाल, जतवे गर्मीसँ परेशानी ततवेक मच्छड़ आ उड़ीसक उपद्रव। ओकरा सभमे एकता ततेक जँ हाँ-हाँ नहि करियोक तँ सोझे उठालेत आ नेने-नेने सकरी चीनी मील लग रखि आओत। कतहुँ चैन नहि...। भोजनोपरांत देह-हाथ सोझ करवाक लेल विछाउनपर गेलौं, मुदा चैन नहि। कछमछ-कछमछ कऽ रहल छलौं। कती राति गुजारलाक वाद कने जा कि ऑखि लागल, आ कि ध्यान किछु आर-आर विषय दिस चल गेल। ऑखि यधपि बन्न मुदा चेतनामे अनेकानेक तरहक बात धुमए लगैत अछि। पड़ल छी विछौनपर मुदा मन जीनगीक चैबट्टीपर ठढ़ वर्तमानक अधरपर भूतसँ भविष्यक, भविष्यकँ विषयमे सोचए लगैत अछि।

सरकारी सेवामे रहवाक करणें कमे-काल गाम जेवाक मौका लगैत अछि। पावनियो तिहार जतै छी ततै करए पड़ैत अछि। तखनो अस्सी बर्खक बुढ़ि माए आ करीब सय वर्खक बुढ़ बावूजीकँ देखए लेल गाम जरुरे चल जाइ छी। टोला-पड़ोसाक सभकँ भेंट कऽ सबहक कुशल छेम जानि अपना कऽ धन्य बुझैत छी। एहि प्रकारे विभिन्न प्रकारक लोकक चारित्रिक विश्लेषण करबाक सेहो मौका लागि जाइत अछि। संभवतः ऐहने स्थितिमे मोन पड़ैत छथि एकटा सज्जन सरोज बावू। ओ ऐहेन व्यक्ति जे कोनो सुरतमे अपने कऽ किनकोसँ कम मानक लेल तैयार नहि होइत छथि।

माए-बापक एक मात्र वेटा नान्हिएटा सँ पढ़ै-लिखैमे तेजगर मुदा ततवेक थेथरलोजीमे सेहो निपुण। विषय कोनो किएक नहि हो मुदा एक चैखड़ि थेथरलोजी जरुर करताह। जेना की ओ सर्वज्ञ होथि। तँ हुनकर किछु संगी-साथी हुनका ‘‘मिस्टर नो ऑल’’ सेहो कहैत छलनि। लोक सभ बकलेल सेहो कहथिन्ह। परुकँ साल अगहन मासमे हुनकर विआह झंझारपुरक बगलहि महरैल गाममे सम्पनन भेल।

विआहक मादे एकोटा सर-कुटुम नहि छुटथि एहि लेल ओ एकटा बही अलगसँ बना आ क्रमवद्ध सभकँ नत-लिऔन आ हकार पठाएव नहि विसरलाह। विआहोत्सवमे सभ उपस्थित भऽ बराती गेलाह। जाहिसँ एक बात स्पष्ट भऽ गेल जे लड़का कोनो नीके समाजसँ जुड़ल छथि। गौवा-धरुआ आति प्रसन्न भऽ बढ़ि-चढ़ि कऽ बारातीक स्वागत-बात कएलैन्हि। ममिऔत-पिसिऔत सभ एहिसँ प्रसन्न जे बर-आ कनियाँ दुनूक जोड़ी सीता-रामक जोड़ी लगैत अछि। भगवानक असीम कृपासँ अनुगृहित भऽ नीके कथा सम्पन्न भेल।

असली कथा आव एहि ठामसँ शुरु होइत अछि। विआहोपरांत कनियाँ कनिया विदागरी भऽ सासुर ऐलीह। दाइ-माइ लोकनि अरधि-परधि कनियाँ घर केलैन्हि। आ अइहव-सुहव होथू अशीरवाद दैत अपन-अपन घर चल गेलीह।

कनियाँ तऽ कनिए दिनमे अपन सासु-ननदिक दिल जीत लेलैन्हि। बर-कनियाँ समर्थ रहवाक कारणें विदागरी चैठारी दिन नहि भऽ साओन-भादोमे भेल। पहिल साओन-भादो नवकी कनियाँ नैहरमे मनवैत छथि, एहि तरहक मिथिलाक आ मैथिलक एकय मान्यता छैक।
नीक दिन तका कनियाँ विदागरी भऽ सासुरसँ नैहर चल गेलीह। आव तँ भेल पहपटि। सरोज बावू जे एते दिन सदिखन घरेमे धुसल रहथि आ सदिखन कनियाँए कऽ निंधारैत आ गवैत छलाह ई गीत ''मन होइए अहाँ कँ हम देखते रही, किछु बाजी अहाँ हम सुनिते रही, मन होइए अहाँकँ........।
आठ मास कोना वितल से नहि बुझि सकलाह आ कनियाँ आठे मासक फला-फलक रुपमे नौ मासक सनेश लऽ नैहर चल गलीह। से तँ, एको दिन, एको पहर, वितव सरोज बावूक लेल पहाड़ सन बुझना जाइत छलैन्हि। कोनो वातक सुधए-बुधिए नहि रहैन्हि। सदिखन एकदम बकलेल जँका करथि। एहन सन वुझना जाइत छलैन्हि जे शरीर गाममे होइन्हि आ आत्मा सासुरमे। भोजनक प्रति अरुची जागए लगलैन्हि। समएसँ स्नान-भोजन करब सेहो सुधि-बुधि नहि। लोक सभ अपनेमे बाजथि जे सरोज बावू ऐना किएक करैत छथि- एकदम बकलेले जेकाँ
जहिना अपना गाम बेरमामे सरोज बावू तहिना अपना नैहर महरैलमे सरोजनी दुनू व्यक्ति एक दोसराक विरहाग्निमे जरैत। दिनो-दिन मुरझायल जाइत छलाह। स्वाभाविके थिक। किएक तँ बड़-कनियाँ समर्थ रहवाक कारण जीवनक अपूर्व आनन्द जे उठौने रहथि। एकय पूर्ण पति पत्नीक रुपमे।
एक-एक दिन पहाड़ भेल चल जाइत छलैन्हि। नहि तँ ऐम्हरे आँखिमे निन्न आ ने ओम्हरे एको मिन्टक चैन। माए-बापक डरे नहि तँ कनियाँ करैन्हि आ ने बावूजीक डरे सरोज सासुर जेवाक साहस कऽ पबथि। किएक तँ एखनो कतउ-कतउ ऐहन प्रथा छे जे विना दिन-दूरागमनक बर-सासूर नहि जाइत छथि। तँ सरोज बावूक डेग सासुर जेवाक लेल नहि उठैन्हि।
समय बीतेत देरी नहि लगैत छैक देखैत-देखैत चैठ-चन्द्र पावनि आएल....... चल गेल। जीतीआ बीतल आवि गेल आषीण मास.... सगरो दुर्गापूजाक तैयारी शुरु भऽ गेल। ओम्हर सरोजनीक नैहरमे जोड़ा करिआ छागर बलि-प्रदानक लेल राखल छल। जकरा ओ लोकनि खुब जतनसँ दाना-पानि खुआवथि-पिआवैथि। देखते-देखते दुनू छागर, सवाइयासँ डोढ़ा भऽ गेल। जँ जँ दूर्गापूजा लग आएल जाइत, सरोज बावू आ सरोजनीक हृदयक धड़कन हृदयागंम हेवाक लेल मचलए लागलि। देखते-देखते कलश स्थापन भेल। पहिल पूजा बीतल दोसर बीतल आवि गेल पंचमी। मुदा एखन धरि सासुरसँ सरोज बावूक लेल कोनो खोज-खवरि नहि कएल गेल! एकदिन माए पुछलथिन्ह- ''बौआ, कनिआक खोज खवरि नहि केलहक? कोनो फोनो-तौनो नहि अवै छह? बेचारे की बजताह अपन हारल आ वहूक मारल क्यो

की बजै छै? हारि-थाकि पंचमी राति फोन लगौलन्हि। घंटी भेल, फोन उठौलथिन्ह हुनकर शारि- कमलनी, ओम्हरसँ अवाज अवैत अछि- ''हेलो.... हम महरैलसँ वजै छी?

''हम छी सरोज बेरमासँ। कनी...... दीदी.......कँ फोन .....। कमलनी माँ दिस तकैत बाजि उठैत अछि- ''माए गे माए जीजा जीकँ फौन छिए। एम्हरसँ हेलौ-हेलौ होइत रहैत अछि। कमलनी फोन लऽ कऽ दैत छैक अपन दीदी सरोजनीकँ।

सरोजनी फोन लइत- ''परनाम करै छी। अहाँ नीके छी की नै? माँ बावूजी कोना छथि? अपना शरीरपर ध्यान दैत छी की नै? मन लगैए की ने? मेला देखऽ कहिआ ऐवै? कमलनी आ अजय, विजय अहाँक विषयमे पुछैत रहैए। दीदी गै दीदी, जीजा जी कहिया ऐतौ?''

सरोज बावूक जवाव छल एको राति मन नहि लगैत अछि। संभवतः दूर्गापूजामे नहि आवि सकब। धिया-पूताकँ मेला देखक लेल दस-दसटा टाका दऽ देवई। तामसे टीक ठाढ़ केने फोन काटि दैत छथि।

सरोज बावूक लेल असमंजसक स्थिति रहनि, जे जकरा घरमे जोड़ा छागर बलि प्रदान हेतै, से एखन धरि एको बेर अएवाक लेल नहि कहलैन्हि। ऐहेन कोन सासुर, कोन सासु आ ससुर, केहेन सारि आ शरहोजि। तामसे मन अधोड़ आ टीक ठाढ़। की करी आ की नहि करी? ई द्वन्द्वात्मक स्थिति बनल रहैन्हि। किछु नहि फुरैन्हि। मुदा अष्टमी अवैत-अवैत- ये दिल है कि मानता नहीं

ये वेकरारी क्यों हो रही है,

ये जानता नहीं....। अपना कऽ नहि रोकि सकलाह। आ चलि गेला अपन सासुर महरैल। भगवती दर्शन कऽ जहाँ की पानक दोकानपर जाए छथि, पान खेवाक लेल, आकि मेला देखक लेल आएल सारि-शरहोजिक नजरि हुनकापर पड़ैत अछि आ ओ सभ पकड़ि लैत अछि हिनकर गट्टा। जीजा जी, जीजा जी अहाँकँ गामपर चलए पड़त। दीदीयो कहने छलि, सप्पत दऽ कऽ। मुदा सासु ससुरक आग्रह नहि तँ एखनो धरि हिनक टीक ठाढ़े।

अन्ततः थाकि-हारि एक किलो मधुर लऽ सारि-शरहोजिक संग चललाह सरोज बावू सासुर। पहिल-पहिल बेर सासुर गेल छलाह तँ स्वागत बातमे कोनो कमी नहि रहल। चाह-पान बढ़ियासँ भेल। मुदा खेवा काल ओ पसारलैन्हि बड़का नाटक, जे हम नहि खाएब। हम खाऽ आएल छी, भुख नहि अछि। सासु आग्रह केलथिन

कोनो असर नहि, ससुर हाथ पकड़लथिन्ह, कोनो फरक नहि, बड़का सार सेहो खुशामद् केलथिन्ह मुदा कोनो असर नहि। एकहि ठाम जे हम खा कऽ आएल छी, भूख नहि अछि। आ ओ भोजन नहिए केलैन्हि।

ओम्हर दुनू छागर जे बनल ओकर सुगन्धसँ टोला-पड़ोसा गम-गम करैत। टोलाक निमंत्रित सज्जन सभ आबि माउस-भात अर्थात छागर रुपी प्रसाद पावथि आ ओकर स्वादक सविस्तार चर्चा करथि। ऐह छागर जे जुआएल छल, चर्वी केहेन तरहथ्थी सन छलै आ प्रसाद बनल कतेक सुन्दर अछि! वाह मन तँ भीतरसँ प्रसन्न भऽ गेल, चर्चा करैत बाँका सीक्कीसँ खैरका करैत कुकुर कऽ पान खा ओ लोकनि तृप्तिक ढेकार लैत चल जाइ गेला।

एम्हर सरोज बावूक पेटमे बिलाड़ि कुदऽ लागल। ओत भुखे लहालोट। राति खसल जाए, बहरवैआक बाद घरवैयो सभ खा कऽ सुतए गेलाह। मुदा किछु लिऔन वाली सभ एखनो जगले, ओ लोकनि पाँछा काल कऽ भोजन करथि, फैलसँ पलथा मारि माउस आ भात, खाथि आ ओहि छागरक माउसक चर्चा करथि। आग्रह अलग जे दीदी कलेजी दू पीस लिअ। हे यै फल्लाँ गाम वाली हे ई चुस्ता लिअ। हे यै दाय, हे, ई हड्डी वाला दूटा पीस लिअ। आग्रहपर आग्रह। आ ओ लोकनि बड़ी काल धरि गप्प-सप्प करति, भोजन करए गेली।

एम्हर सरोज बावू जठराग्नि आओर तेज भेल चल जा रहल छल। आव होएत छलैन्हि जे क्यो आवि आग्रह करितथि तऽ भरि पेट माउस-भात खइतौं। मुदा से तऽ आव सभ क्यो सुतऽ चल गेल छल। धियो-पूता माउस-भात खा फोफ कटैत छल। आव तँ हिनका किदुन- “जे अपने करनी गै मुसहरनीक परि भऽ गेल छल। थाकि हारि किछु कालक वाद हरलैन्हि ने फूरलैन्हि सरोज विदाह भेलाह भनसा घर दिस। आ अपनहिसँ मॉस-भात भरि थारी निकालि आ चुपे-चाप भोकसए लगलाह। किनको एहि बातक पत्तो नहि। जागल जे सभ रहथि से सभ हिनका खोजए लागल जे पाहुन कतए, पाहून कतए। आ पाहून तऽ भनसा घरकँ केवाड़ तर नुका कऽ गुप-गुप माउस-भात दऽ रहल छथिन्ह। तात गणेश जीक वाहन एहि कोठीसँ ओहि कोठी जा कि छरपल आ कि कोठीपर राखल खापड़ि पाहूनक कपारपर खसल। अवाज सुनतहि लोक सभ ओहि घर दिस दोगल। देखलक जे पाहून तऽ केवाड़क दोगमे नुका कऽ माउस-भात भोकसि रहल छथि। परल बड़का पिहकारी, शारि-शरहोजि मारलक ताली खुब जोरसँ शोर-गुल सुनि सुतलहो लोक सभ जागि गेल। ताली आ पिहकारी पड़ि रहल अछि। पाहून तऽ लाजे कठौत भऽ गेलाह।

रति जखन सुतए घर गेलाह तँ कनियाँक कटू व्यंग वाणक वर्षा होमए लागल। पाहूनक तँ मने शांत। किछु नहि फूरैन। सोचलाह जे अन्हरोखे गाम चल जाएव। विदाहो भैलाह, मुदा अन्हार वेशी रहवाक कारणे कुकुर सभ झाँउ-झाँउ करए लागल। लोक सभ जागि गेल देखलक जे आँगा-आँगा पाहून आ पाछाँ-पाछाँ कुकुर हिनका खिहारने जाइत अछि। लोक सभ दोड़र महरैलिक हाटपर आवि हिनका पकड़लक। धुरि जएवाक आग्रह कयलक। मुदा हिनकर मन तँ तामसे अधोड़ छल। किनको वातक मोजर नहि, दऽ हाक दैत दैत धोती पकड़लक से हुनकर ढेका खुजि गेल, धरफरा खसलाह, मुदा ओ तइयो नहि रुकि लटपटाइत धोती खोलि फेकेत गारि दैत परात होइत-होइत अपन घर पहुँचलाह।

कहू तँ ऐतेक पढ़ल-लिखल लोकक ई काज कोनो वकलेल जेकाँ काज केलैन्हि। सरिपों जँ अधलाह नहि लागए तँ हुनका बकलेले न कहवैन्हि।

दुर्गानन्द मंडल

लघुकथा-

किसना मुट्ठी

मरनी भिनसुरके पहर बेलाराही चौरीसँ एक गैलन काकोड़ बीछि अनने रहए। मेला-ठेलाक समए रहै तैं, कोठीसँ दू मुजेला काटू निकालि अंगनामे सुखैले देलकै। ओकर वाद नहा-सोनाह आ खाए कऽ सुतैले खेन्हरा लऽ डेढ़ियापर चल गेल। पुरबा हलफी दैत छले, नित्र टुटलै। आँखि मिड़ते उठल आ हाँइ-हाँइ कऽ काँटू डेंगाबऽ लागल। डेंगा-ठठा लेलाक बाद सुपसँ फटकि माएक तहवनमे बान्हि माएसँ नुका कऽ धऽ आएल कोठिक दोगमे। झल अन्हार भेलै तँ भगबत्ता दोकानसँ बेच अनलक। तीन सेर भेलै। आठ अने दरसँ डेढ़ गो टाका भेलै। ओ भगवतेसँ कहि सुनि कऽ चारि गो चौवन्नी आ दू गो अठन्नी भजोखा लऽ चुपे-चाप आंगन चल गेली।

विहान भेने मेला छलै 'किसना मुट्ठी'। मरनी तरे-तर हिसाव लगोने जे चारि-चारि आना पाइ दुनू छोटकी बहीन अभेलिया आ सुगियाकेँ देवे। चारि आनामे बौआले एकटा कठपुतरी किन लेब आ एकटा फूका। चारि आनाक कचौरी आ चप कीनि लेब। ओकर तँ मने छलै चप-चप।

आठ आनामे एकटा अलता आ फीता लऽ लेब। घुरती काल आठ आनाक जिलेवी कीनि लेब।

भोरे विहान फेर ओ अपन गैलेन लऽ चलि गेल चौरि आ विछि लेलक एक गैलेन काँकोड़। आंगन आबि बकरी घरमे गैलेन राखि ओ नहाइ-सोनाइले चलि गेल आ नाहा-सोना, खा-पी कऽ सुति रहल।

एम्हर नेहेवा काल ओकरा माएकँ तहबन नहि भेटलै तँ औना कऽ एम्हर-ओम्हर तकलक तँ देखलक, ओ तँ कोठी दोगमे फेकल अछि- आ मडुआक किछु दाना लागल छलै। कोठी मुन्ना से फूटल। से देखि ओकरा आगि लेस देलकै। ओकरा हरलै ने फुरलै सुतलैमे मरनीकँ गट्टा पकड़ि लात्ते-मुक्के धुनि देलकै। गाड़ि पढ़ि-पढ़ि पूछए लगलै-"बाज सौतीन बाज की केलही पाइ मरूआ बेच कऽ?"

अबोध बच्चा कनैत बाजल- "माए गै माए मेला देखैले जेबै बलवा परतीपर मेला।"

माए तामसे अघोड़ रहबे करै फेर बाजलि- "बाज सौतीन बाज कथीक मेला।"

माए, गै माए, मेला देखैले जेबइ मेला- किसना मुट्ठीक मेला।

दुर्गानन्द मण्डल

कविता-

हम हिन्दुस्तानी छी

हम हिन्दुस्तानी छी
नै ककरोसँ डरै छी
देश-विदेशक बात करै छी
अपने देशपर मरै छी।

कथा पूर्वजक नै पुछू
ओ सभ छथि सभसँ महान
खेती-बाड़ी जिनकर धंधा
जिनकासँ निखरल हिन्दुस्तान।।

हमर रक्षक हमर भक्षक
हमरेसँ करै छथि आश
कवि बनू वा कलाम बनू
पूर्ण करू अभिलाषा।

बूढ़क सहारा बनि हम
देशक रखबाला बनि हम
नाओं हमर जेना दिवाकर
जगमे एहन काम करी।।

दुर्गा नन्द मंडल

बुढ़िया फूसि

किछु कहैत संकोच नहि, लाजो नहि होइत अछि जेना निर्लज्ज भऽ गेल छी। आँखिक पानि जेना सुखि पड़ल हो। एहन बुझना जाइत अछि जेना द्वापरेसँ अथार्थ ६३जन्म पहिनहिसँ फूसिक खेती करैत आिव रहल छी, निश्तुकी बाप-पुरखा सेहो एहेने सिद्धस्त खेतिहर हेताह। मुदा उपजा ताहि समएमे कम होइत छल, आ आइ बुझू जे बोड़े कट्ठा फूसि सभठाँ उपजि रहल अछि। आ सभ सभ दिन सभठाम फूसिये फूसि बाजि रहल हो। यर्थातोमे २६जनवरी हो या १५अगस्त, एहनो राष्ट्रीय पावनिक सुअवसरोपर बाजव हमरा लोकनि अपन जन्म सिद्ध अधिकार बुझैत छी। सरकारी वा कोनो गैर सरकारी कार्यालय किएक ने हो, राष्ट्रक सम्मानक अढ़मे

अपमान करब हमरा लोकनि नहि विसरि पवैत छी। सिया लैत छी बेस नम्हर-चारि मीटर खादीक एकटा डलगर कुर्त्ता, एक गोट पैजामा आ एकटा गाँधी टोपी। आध सेर सुतरी दू जिस्ता सभ रंगक कागत आ कागतेक बनल प्लेट। उज्जर आ ईंटा रंगक बुकनी, पुरने झंडाकेँ साफ-सुथरा कऽ किछु फूल लऽ सए-पचास झूठाक समक्ष झंडोतोलनक वाद छोड़ए लगैत छी, फूसिक गपौड़ी। अनेने व्यर्थ- किएक तँ आत्मासँ एहेन कोनो गप्प नहि जे स्वीकार करैत हो,मुदा अनेरे ठोर पटपटा-पटपटा अपनाकेँ सूच्चा देश भक्त, कर्मठ, सुयोग्य, इमानदार पदाधिकारी वा कर्मचारी सावित करए लगैत छी- फूसिक बखारी खोलि दैत छी। एकसँ बढ़ि कऽ एक फूसि बजैत छी झुट्ठा सभ थोपड़ी बजवैत अछि। उहो थपड़ी पारए लगैत अछि। फूसिए चन्द्रशेखर आजाद, गाँधी, नेहरू, भगत सिंह, उधम सिंह, सुभाष आदिक नाम लऽ बच्चा सभकेँ फूसलाबए चाहैत छी। फूसिये राष्ट्रक विकासक लेल छिट्टाक-छिट्टा सप्पत किरिया खाइत छी। किरिया खाइत-खाइत ने तँ पेट भरैत अछि आ ने मुँह दुखाइत अछि। एकरो एकटा कारण अछि जे हमरा लोकनि पुस्तैनी झुट्टा छी। सालमे तीन-चारिटा एहेन पावनि तँ जरूर अबैत अछि जे भरि मन फूसि बजैत छी से कोनो की चोरा कऽ नै यौ चिकरि-चिकरि फूसि बजैत छी। आ फूसियाही सभ सुनैत रहैत अछि।

मुदा जखन सेबै-बुनियाँ रूपी प्रसादक तलक लगैत अछि तखने फूसिक सप्पत खा विराम लैत अछि। तत्पश्चात बुनियाँ-भुजिया खा तृप्तिक ढेकार लऽ उगरलाहा बुनियाँ-भुजिया रूमालमे बान्हि अपन-अपन जन्म स्थानपर अबैत छी।

कहूँ जे एहेन तरहक जे व्यर्थ बातक संभाषण करब कहाँ तक उचित? राष्ट्रकेँ ठकब कि अपने ठकाएव नहि थिक। कि फूसि बाजि अपने आपकेँ नहि परतारि रहल छी? राष्ट्र ध्वजक समक्ष लेल यएह सभटा सप्पत साँच अछि आकि बुढ़िया फूसि?सत्ते- ई थिक बुढ़िया फूसि।

दुर्गानन्द मंडल, निर्मली

शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द-

कथा पढ़ल चिन्तन कएल, बुझना गेल कथा यथार्त परख अछि जेना कथाकार अपनहि एहि स्थितिसँ गुजरल होनि। यदि अनुभव हमर सत्य तँ सार्थकता शत्-प्रतिशत।

एक कात कथाकार विद्यापतिक भूमिकामे छथि मनमे सिनेह छन्हि जे माए कने ओ भूमिका देख लेती तँ हमरा नीक लागत। एम्हर माए ओलतीमे गुम-सुम बैसल छलीह कारण महाअष्टमीक राति एक टूक अखड़ साड़ी नहि रहलाक कारणे ओ भगवतीक खोंइछ कोना भरती? ई जानि बालक मातृत्व प्रेमवश बावूजीक साखपर कपड़ाबला महाजनक दोकानसँ एकटूक साड़ीक पन्नी माएक हाथमे थमा दैत छथिन। माएक टूटैत विश्वास मायक रूपमे नहि अपितु बेगुसरायक बेटी रूपमे स्पष्ट होइत अछि। हाथक चुड़ी टूटव, काँचक किछु कण माएक हाथमे गड़ब आ टप-टप शोनितक आपादान- कविजीक साखपर दाग सदृश्य बुझना गेल। मुदा सत्य जानि अपन अपराध बोधक अनुभव कऽ माए बैस बालककेँ कोरामे लऽ कऽ सिनेह सागर अविरल धारा प्रवाहित केलनि। सारत्व स्वरूप स्वामीक अर्थात कथाकारक बावूजीक आनल लाल रंगक सिफनक सोहनगर साड़ी नहि पहिर बालकक आनल सुती साड़ीसँ भगवतीक खोंइछ भरब, प्रभु प्रेमक एकटा अलग पराकास्ठाक परिचएकेँ पाठक बन्धु नहि बिसरि सकताह। कथाक सार्थकतापर इजोत छोड़ैत अछि। जे निश्तुकी एकटा माजल कथाकारक कथा बुझना जाइछ। मुदा जँ माँ.... क जगह कोनो आन उपयुक्त, समुचित शब्दसँ सजवितथि तँ कथामे मैथिली समृद्धता आरो स्पष्ट होइत। शेष सभ चिकनहि चिक्कन। धन्यवाद- ।

दुर्गानन्द मण्डल

नेना लेल सुन्दर चित्रकथा

श्रीमती प्रीति ठाकुरक दू गोट चित्रकथा)पहिल गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा, दोसर मैथिली चित्रकथा (मैथिली साहित्यमे पहिल बेर श्रुति प्रकाशन नई दिल्लीसँ प्रकाशित भेल। दुनू चित्रकथा एक संग श्री उमेश मण्डल जीक माध्यमे भेटल। एक-आधटा पन्ना उनटैबिते मन गद्-गद भऽ गेल। लागल जे आब हम मैथिल दरिद्र नै सभ कथुसँ सम्पन्न भऽ रहल छी। साहित्यक तँ अनेको विधा होइ अछि जइमे कथा एक विधा थिक तहूमे चित्रकथा तँ बाल साहित्य लेल प्रमुख। चित्रकथाक माध्यमसँ अपन भूलल-बिसरल संस्कृतिक झलक सेहो भेटैत अछि। निश्चित रूपे मैथिली साहित्यमे एकर अभाव बहुत दिनसँ खटैक रहल छल। जेकरा श्रीमती प्रीति ठाकुर अपन चित्र कथा मैथिल समाजक बीच राखि एकटा असीम प्रतिभाक परिचय देलनि अछि।
बुझना जाइ छल जेना हम अपनेकेँ स्वयं विसरि गेल छी। विसरि गेल रही ओइ समैकेँ जइ समैमे मैयाँ अपन पोता-पोती लऽ जा कऽ घूड़ लग बैसि गोनू झाक खिस्सा सुनबैत छलीह जे अति मनोरंजक आ गोनूक तीव्र बुधिक परिचायक छल। तहिना आनो आनो कथा जेकरा प्रीति जी चित्रवत् कऽ हमरा लोकनिक सोझामे रखलीह। जइमे रेशमा-चूहरमल, नैका बनिजारा, ज्योति पंजियार, महुआ घटवारिन, राजा सलहेस, छेछण महराज आ कालिदास छथि। जे कहियो आम छल, आब लुप्त प्राय :भेल जा रहल छल, ओकरा एकबेर पुन :परिचित करौलनि। जइमे लोक जनलक जे रेशमा के आ चूहड़मल के?
एतबे नै, प्रेमक पराकाष्ठाक परिचयक रूपमे जे लोकक ठोरपर हीर-रांझा वा लैला-मजनू रहैत छल, की ओकरासँ कम निस्वार्थ प्रेम रेशमा आ चूहड़मलक छल ई देखेबाकमे साकांक्ष रहलीह। जतए चुहड़मल दुधवंशी दुसाध जातिक तँ दोसर तरफ

रेशमा भुमिहार ब्राह्मण जातिक बेटी। जखन जुहड़मलकेँ दंगल जीत कऽ अबैत देखलक तँ दुनूक भेँट गंगाक तटपर, ओतहि प्रेमकथाक प्रारम्भ भेल। अर्थात् प्रेममे जाति-पातिसँ कोनो लेन-देन नै अपितु प्रेम तँ प्रेम थिक। प्रेम कएल नै जाइ छै अपने भऽ जाइ छै। तहिना नैका बनिजारा सेहो प्रेमेक पराकाष्ठाक परिचायक छी। भगता ज्योति पंजियार अपन वीरता आ पराक्रमक कारणे पूजित भेल। आइ जँ धर्मराजक पूजा तँ ज्योति पंजियार सेहो पूजित छथि। धर्मराजक भक्त ज्योति घर एलाह। माइक क बाद कंचन काया लऽ कऽ घूमियार बारह बर्खक तपस्यापंजि सँ जनमल।त्र भेल। जे एहेन पैघ भगता ओकरा कोखिपवि कोखि तहिना महुआ घटवारिन सेहो अपन इज्जत बचाबए खातिर कौशिकी धारमे जान गमा अपन सतीत्वकेँ अकिंचन बना कऽ रखलीह। राज सलहेसक कथा तँ नाचो रूपमे प्रसिद्ध अछि। जेकरा प्रीतिजी चित्रवत् कऽ इतिहास बना देलनि। एकटा धरोहरक रूप दऽ देलथि। अनचिन्हार जकाँ छेछन महराज कथाक संग कालिदासक चित्र कथा आ हुनक यादव कुलमे जन्म हएब, हुनक यर्थाथ परिचए भेल। बहुतोकेँ ई बूझल हेतनि जे कालिदास तँ कर्ण-कायस्थ छलाह। ऐ लेल सेहो प्रीति जीकेँ धन्यवाद।

प्रीति जीक दोसर रचना मैथिली चित्रकथामे कुल दस गोट कथा वर्णित अछि। जइमे राजा सलहेस, बोधि कायस्थ, दीना-भदरी, नैका-बनिजारा, विद्यापतिक आयु अवसान प्रमुख अछि। ऐ प्रकारे दुनू चित्रकथा पढ़लापर एहेन लागल जे ई कथा सभ ऐतिहासिक महत पाओत। ऐ प्रकारक रचनाक सर्वथा अभाव सन छल। जेकरा प्रीतिजी हमरा सबहक समक्ष राखि एकरा धरोहरि स्वरूप महत देलनि। ऐ पोथीकेँ नैना-भुटुकाक पहिल पसिन कहल जा सकैत अछि। खास कऽ जे बच्चा नंदन, वालहंश, वा अन्य पोथी पढ़बाक हिस्सक लगौने छल आब ओ लेखिका द्वारा रचित रचनासँ लाभ उठाओत। पोथीक प्रत्येक चित्र तथ्यात्मक आ उद्देश्यपरक अछि। चित्रकथाक माध्यमसँ प्रीतिजी मिथिलाक विलुप्त प्राय भेल विषय-वस्तुकेँ कथाक रूप दऽ जीवंत कऽ देलनि। मैथिली प्रेमी ऐ तरहक रचनाकेँ नजरअंदाज नै कऽ सकैत छथि। आबैबला पीढ़ीक लेल ऐ प्रकारक रचना नै मात्र मनोरंजक अपितु प्रेरणादायक सेहो सिद्ध हएत। पोथीक सभसँ पैघ बात ई अछि जे प्रत्येक चित्र एकटा विशेष अंदाज आ दशाकेँ प्रस्तुत करबामे सफल भेल अछि जे लिखल गेल पाँतिक भाव स्पष्ट कऽ रहल अछि। प्राय :सभ जातिक लोकक चित्रण ऐ चित्रकथामे समाएल अछि। जे प्रीति जीक समन्वयवादी सोचक परिचायक अछि। प्रगतिशील विचार तँ सहजहि। मिथिला सभ दिनसँ उदारक परिचायक रहल मुदा किछु लोक बेवसायिक एवं जातिवादी सोचक लाड़नि बीचमे चलौलनि आ चलाइयो रहल छथि। हमरा हर्ख भऽ रहल अछि ऐ चित्रकथाक लेखिकापर जे एतेक सुन्दर, सुगम, आ प्रगतिशील डेग बढ़ा मैथिली साहित्यक विकासमे एकटा बेछप

स्थान बनौलनि अछि। हमर शुभकामना सतत रहत जे प्रीतिजी ऐ प्रकारक रचना करैत रहती आ श्रुति प्रकाशन प्रकाशित करैत रहत तँ निश्चित रूपेँ मिथिला, मैथिली आ मैथिलामे रहनिहार सभ पूर्णत :समृद्ध भऽ जेताह।

**दुर्गानन्द मण्डल**

सहायक शिक्षक-

उ.वि.झिटकी बनगामा (मधुबनी)

पोथी समीक्षा-

मौलाइल गाछक फूल

जेना लगातार पाँच-सात सालक प्रचंड रौदी भेलाक बाद जौं रोहनि नक्षत्रमे एकटा कसगर अछार हुअए तँ गिरहत सभहक मोन फूलकोका जकाँ खिल उठैत छैक। सभ कियो खेत-पथार जोति, तामि-कोरि, खढ़-पतार सभ बाले-बच्चा मिल ओलि-पालि कऽ देबे सेबे बिहनि खसबैत छैक। गोर दसे दिनक पछाति हरिअरकंच बिहैनक टेम बिरारमे निकलए लगैत अछि। गिरहत सभ पोखरि-झाखरि दिस दिसा-मैदान करैत बॉसक उभ्भीबला दतमनि करैत लोटा नेनहि बिरार दिस चल जाइत छथि। बिरारमे उपजल हरियरकंच बिहैन देख आत्मा जुड़बैत छथि। देखते-देखते बिहैन पैघ भऽ जाइत अछि। गिरहत सभ ऐ आशामे पाँच-सात सालसँ बर्खो नै भेल जौं ऐबेर समए संग देत तँ बाले-बच्चा मिल खूब जतनसँ खेती करब आ ऐ रौदीसँ छुटकारा भेट जाएत।

दिन दसे-पनरेहक बाद आरदारा चढ़िते खूब कसगर बर्खा भेल। आ गिरहत सभक आत्मा गूलाबक फूल जकाँ खिल उठल। किनको खुशीक कोनो सिमा नै। सभ बाले-बच्चे लाठी-बहिंगा (पटै), हर-कोदारि, चौकी आदि लऽ खेती करए लेल खेत दिस चललाह। आ कृपा महादेवक जे ऐ साल समए नीक रहल, संग देलक आ मनसंम्फे उपजा भेल। सभ आनंदित छथि। एकटा नव उत्साह आ आनंदक संग दोहाइ दै छथिन परमपिता परमात्माकेँ।

ठीक तहिना उपन्यासकार जगदीश प्रसाद मंडल जीक द्वारा लिखल उपन्यास ‘‘मौलाइल गाछक फूल’’सँ पाप्त भेल खुशी आत्माकेँ तृप्ति कऽ देलक। प्रो. हरिमोहन झा जीक बाद बुझू जे मैथिली साहित्याकासमे बड़का रौदी नै अपितु अकाल पड़ि गेल छल। पाठक-बन्धु हक्कोपरास छलाह, उपन्यास नामक वस्तु

पाठककेँ हेरने नै भेटैत छलनि। आत्मा तँ उपन्यास पढ़ए लेल सदिखन व्याकुल रहैत छल। जइ कमीकेँ मण्डलजी दूर कऽ देलनि। लगातार एक-सँ-एक चिक्कन-चूनमुन उपन्यास लिख ने मात्र भारते उपितु आनो-आन देशमे रहएबला मैथिली भाषीक नजरिमे ख्याति पौलन्हि। अपन देशक कथे कोन नेपालक जनकपुरसँ लऽ तराइ क्षेत्रमे सेहो हिनक लिखल पोथी, उपन्यास, कथा संग्रह, कविता संग्रह, नाटक, एकांकी इत्यादि साहित्यक सभ विधा केर पोथी सहजताक संग उपलब्ध अइ। पोथी उपलब्ध सेहो मैथिली साहित्य लेल एक नवीन बात थिक। ओना ऐ लेल हम श्रुति प्रकाशनकेँ अलगसँ धन्यवाद देत छियन्हि।

प्रस्तुत उपन्यासमे अपने अपना अनुसारे कतौ कोनो तरहक कोनो तरहक कमी नै रखने छी। अपितु सागरमे गागर भरि समाजक सभ वर्ग, सभ जाति, स्त्री-पुरूष, ऊँच-नीच, छोट-पैघ, नीक-बेजाए, धनीक-गरीब, नेना-भुटका, जवान-जुआनक लेल एकटा अलग संदेस छोड़एमे कतौ कमी नै रखलनि। जे पाठककेँ एक सांसमे उपन्यास पढ़ि जेबाक लेल बाध्य कऽ दैत अछि। हमरा अनुसारे ई एकटा बड़ड पैघ उपन्यासकारक सार्थकता सिद्ध भऽ रहल अछि। यर्थाथवादी रूपमे गाममे रहितौं उपन्यास पढ़ए काल एहन लगैत अछि जे हम गाम नै अपितु मद्रासमे छी। मुदा मद्रासक चालि-वाणि, रहब-सुतब, लोक सबहक बाजब-भुकब, पैघ-पैघ कोठा-सोफा, अतिआधुनिक पैखाना घर आदि रहलाक बादो अपने अपना गामक माटिक यादि नै बिसरि सकलौं। जे रामाकान्त बाबू अपन गामक सोन्हगर माटिक सुगंधक सिनेहकेँ स्पष्ट करैत कहैत छथि- ''हौ जुगे, बिना माटिये हाथ कोना मटियाएब?''

उपन्यासक पात्रक नामक अनुसार गुणक विलक्षण समाबेस करब अपने कतौ नै बिसरलौं। नामक अनुसारे कामकेँ अपने स्पष्ट देखौने छी। समाजक जे जेहन लोक जेहन पदपर पदस्थापित छथि। ओइ कार्यक लेल समर्पण उपन्यासक विशेषता बतबैत अछि। ठाम-ठाम अध्यात्म, दर्शन, अपना संस्कृति आदिकेँ दर्शादा देब सभ पाठकक लेल मोन राखक योग्य बुझना गेल। यथा- ''ई भूमि जनकक राज

मिथिला थिक। तेँ मिथिलावासीकेँ जनकक रास्ता पकड़ि हमरा लोकनिकेँ चलक चाही, जाहिसँ प्रतिष्ठा सभ दिन बरकरार रहत।''

ऐ उपन्यासक प्राय: सभ पात्रक चरित्र अति पवित्र, सामजिक समरसतासँ भरल बुझना जाइत अछि। हुनका लोकनिक सहज सज्जनता प्रकृत प्रदत्त बुझाइत अछि। समाज सुधारक जौं कोनो कथा हुअए तँ प्राय: सभ एक-दोसराक प्रति ओतबे जिम्मेवार स्वभावत: बुझना गेल जे एकटा सुसभ्य समाजक सामाजिक चिंतनक प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ बुझना जाइत छथि। उपन्यासक केन्द्रीय पात्र रामाकान्त बाबू छथि। जे एकटा नीक जमीनदार होइतो सामाजिक कर्त्तव्यपरायणता, इमानदारी, समाजक सभ जातिक प्रति सिनेह, उदारचित्त विचारधारा, वास्तविक मानवतावादक चित्र, मानवक प्रति कर्त्तव्य ओकर दुख-सुख, मरनी-हरनीमे संग पुरब, हिनक चारित्रिक विशिष्टता स्पष्ट देखबा योग्य अछि।

उपन्यासक आरम्भहिंमे जखन कि गाममे अकाल पड़ि जाइत छैक। लोक सभ अन्न बेतरे मरए लगैत अछि। जनकेँ काज कतौ नै भेटैत छै, खेती-खोलाक कतौ थाह-पथाह नै, लोकक घरमे दिनक-दिन चुल्हि नै पजरै छै। इनारोक पानि ससरि ततेक निचाँ चल गेलैक जे उगहनियो सभ छोट भऽ गेलैक। आ एम्हर बौएलालक प्राण भुखसँ छुटै-छुटैपर छल। तेहने दुरूह समैमे रामाकान्त बाबू द्वारा बड़की पोखरि उराहब, समाजक प्रति साहानुभूति हुनक हृदैक महानता देखल जाइत अछि। ऐ तरहेँ एक तँ लोककेँ विभिन्न प्रकारक अकर्मणयतासँ बचा कऽ दोसर दिस, अन्नाभावसँ ग्रस्त लोकक मरबासँ सेहो बचबैत छथि। रमाकान्तबाबूक अवधारणा ई जे 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग भवेत्'क ''अथवा सबए भूमि गोपाल की'' सपष्ट कऽ दैत अछि। तँए रामाकान्तबाबू सामाजिक समरसता लेल तियागक मिशाल स्वरूप अपन दू सय विधा जमीन गामक भूमिहीन परिवारक बीच वितरण करबा दैत छथिन। ठीक ओहिना जहिना चीम राजा चेन्पौ कएने रहथि। जइसँ गामक सभ व्यक्ति सुखी भऽ जाइ छथि, आ गाधीवादी विचारधारकेँ आरो मजगूती भेट जाइत अछि। अर्थात् व्यक्तिगत

खुशी वा सुख-शांतिसँ एकटा समाज सुखी नै भऽ सकैत अछि। बल्कि सामाजिक सुख-शांतिक लेल व्यक्तिगत सुख-शांतिक तियाग करब मनुष्यक अहम कर्त्तव्य थिक। स्पष्ट अछि।

मनुष्य एक समाजिक प्राणी थिक, जे सोनेलाककेँ विपति पड़लापर फुदिया द्वारा कहल गपसँ स्पष्ट होइत अछि। जे "भाय, तोरा जे हमर खूनक काज हेतह, हम सेहो देबह।" स्पष्ट अछि जे समाजमे एहिना सबहक काज सभकेँ होइत छैक। उपन्यासक मध्यमे मण्डलजी गाम-घरमे पसरल धर्मभिरूताक चित्रण करब सेहो नै बिसरलाह। जे सोनेलालक आंगनवालीकेँ बिमारीसँ ठीक भेलापर आयोजित भंडारामे दू साधू दलक द्वारा जे एकटा वैष्णम आ कबीरपंथसँ सोनेलाल कोना लुटल जाइत अछि। उपन्यासकार एहन समस्याक प्रति समाजकेँ सचेत करै छथि।

आजुक मशीनक युग हमरा समाजकेँ कोन तरहेँ जोंक जकाँ पकड़ने अछि जे तरे-तर शोणित पीब रहल अछि मुदा पता तक नै चलै छै। ई स्पष्ट करबामे शत-प्रतिशत सफल छथि। कोन तरहेँ खून अपना खूनकेँ चिन्हबामे असमर्थ अछि एकदम स्पष्ट अछि जे महिन्द्रक पुत्र रमेश होस्टलसँ आबि अपन पिताकेँ गोड़ लागि ठकुआ कऽ आगाँमे ठाढ़ भऽ जाइत अछि, बाबा-दादीकेँ नै चिन्हैत अछि। बादमे पिताक कहलापर रमेश तीनू गोटेकेँ गोड़ लगलकनि। ऐ तरहेँ संयुक्त परिवारक महत्व जे मिथिलाक धरोहरि छल। ओकरा एकल परिवार बूझु जे झकझौरि कऽ राखि देलक। जे मानवीय सिनेहक नष्ट होइत स्वरूप थिक।

ऐ प्रकारेँ उपन्यास "मौलाइल गाछक फूल"मे सामाजिक जिनगीक विभिन्न प्रकारक समस्या आ ओकर समुचित समाधान तकबाक पूर्ण प्रयत्न केलनि अछि। "मनुष्यसँ परिवार बनैत अछि आ परिवारसँ समाज। जँ परिवार ठाढ़ भऽ जाए तँ समाज स्वत: आगू बढ़ए लागत।" मण्डलजीक सामाजिक भावना आदर्शवादी भावनाक रूपमे परिलक्षित होइत अछि। जकरा धियानमे रखैत मद्रासमे डाक्टरी करैत डॉ. महेन्द्रकेँ

गाममे एकटा स्वास्थ्य केन्द्रक स्थापनाक विचार गामवासीक सेवा लेल देखाओल गेल अछि। उपन्यासमे जाति-पाति, धर्म-सम्प्रादयमे खंडित भेल गाम-समाजमे छूआ-छूत, ऊँच-नीचक खाधिकेँ रामाकान्तबाबू द्वारा भजुआ डोमक ऐठाम जा कऽ भोजन करब समाजक बीच समरसता स्थापना आ छूआ-छूतक अंत कऽ एकटा आदर्शवादी पूर्ण समाधान देखौलनि अछि। जेकरा अशिक्षासँ उत्पन्न लाइलाज बिमारीकेँ विचार मात्रमे परिवर्त्तन कऽ एकसूत्रमे बन्हबाक प्रयास, वरदान सावित भेल अछि।

उपन्यासक समस्त नारी पात्र यथा- रधिया, श्यामा, सुगिया, सोनेलालक बहिन आदिमे पतिपरायणता सुख-दुखमे संग साथ देब। भारतीय नारीक मर्यादा स्पष्ट चित्र उपस्थित करबामे पूर्णत: सफल भेल छथि। सुमित्राक पढ़ि-लिख नीक नर्स बनब आ सुजाताकेँ पढ़ि-लिख नीक डाक्टर बनब, नारीक अबला नै अपितु सबला रूप देखबामे अबैत अछि। एतबे नै, उपन्यासक मादे मण्डलजी स्पष्ट दर्शा देलनि अछि जे गरीबो-गुरबामे ओ क्षमता छै जेकरा जँ कनिको सहयोग भेट जाए तँ ओ बहुत आगाँ बढ़ि सकैत अछि। नारीक एकटा अलग स्वरूप काली-दुगाँ आदि शक्तिक रूप सितिया केर चरित्र देखेबामे सफल रहलाह अछि। जखन आवारा छौड़ा ललबा ओकरा इज्जति लुटए चाहै छै तखन सितिया ललबाकेँ लाते-मुक्के थुरि-थारि कऽ राखि दैत छै। बात ओतइ नै खतम होइछ अपितु जखन ललबाक गौआँ सभ हसेरी बान्हि सितिया गामपर हमला करैत अछि तखन सितिया झांसीक रानी बनि सभकेँ परास्त कऽ दैत छै।

ऐ तरहेँ मौलाइल गाछक फूल उपन्यासमे सहजता, समरसता, यथार्थवाद, आदर्शवाद, धर्मभिरूता, एकल एवं संयुक्त परिवारक रूप-रेखा खिंच एकटा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण रूपमे उपन्यासकार हमरा लोकनिक मध्य उपस्थित छथि। हुनक ई विधासँ उपन्यास जगतमे एक्केठाम सभ तरहक सुख, आनंदक अनुभव होइत छन्हि। आजुक समाज जे सभ तरहेँ मौलाएल अछि। अपना उपन्यासक मादे उपन्यासकार मात्र एक आदमी रामाकान्तबाबू हृदए परिवर्त्तन कऽ समाजमे एकटा नवका फूल खिलेबामे सश-प्रतिशत सफल भेला अछि। रामाकान्त बाबू द्वारा अपन दू सए बीघा

जमीन- सबहक माथपर एकहक बीघा खेत अर्थात् जेकरा सात गो बेटा ओकरा सात बीघा दऽ सभकेँ एकटा नव जिनगी प्रदान करैत छथि। एक नव जिनगी जे पूर्णत: मौलाएल छल ओइमे फूल खीला दैत छथि। हमरा आशा नै अपितु विश्वास अछि जे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी सन उपन्यासकार होथि आ रामाकान्तबाबू सन नायक तँ अपन समाज रूपी मौलाएल गाछ मौलाएल नै अपितु डगडगीसँ भल गाछ बनि फूलसँ लदि सकैत अछि।

दुर्गानन्द मंडल

गोधनपुर (निरमली) , दुर्गानन्द मंडलक

समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना-

ओना तँ अपन देश सभ दिनेसँ पावनिये तिहारक देश रहल अछि। जतए सभ दिन कोनो ने कोनो पावनि-तिहार मनाओल जाइत अछि। आइ होली, तँ काल्हि दीवाली, परसू दुर्गापुजा, तँ तरसू कालीपूजा। आइ अनन्त चतुरदशी तँ काल्हि नरक-नरावन चतुरदशी। आइ भ्रातृ द्वितिया तँ काल्हि जितिया, आइ शनियाही घड़ी, तँ काल्हि बुधवारि घड़ी। कहियो सिर पंचमी, कहियो वसन्त पंचमी। तातपर्य सालो भरि सभ दिन पावनिए-पावनि। जहिमे सभ पावनिकेँ एकटा अलग महत्व होइत अछि।

कोनो पावनि रंग-अबीरसँ जुड़ल होइत अछि तँ कोनो अटूट भक्तिसँ। कोनो पावनि साँए-बेटासँ जुड़ल अछि तँ कोनो भाए-भतीजासँ, ओहि पावनिमे अपना देशमे रक्षा बन्धनक एकटा खास लौकिक तथा अलौकिक दुनू तरहक महत्व होइत अछि। तँ भारतक पावन पावनिमे रक्षा बन्धन अति पावन मानल गेल अछि। जहि पावनिमे कलाइपर धागा बान्हव भृकूटिक बीचमे टीका लगाएव आ मुँह मीठ कराएव देखल जाइत अछि। औझके दिन बहीन अपन भायक गट्टापर राखीक धागा बान्हि अपन रक्षाक दान लैत अछि। एकटा समए छलै जे युद्धक समएमे एकटा बहीन मुसलमान भाइक गट्टापर राखी बान्हि अपनाकेँ सुरक्षित बुझैत छल। किएक तँ एक भाय अपन बहीनक सतीत्वक ओकर मान-मर्यादाक रक्षा जरूर करत।

परन्च मनुक्ख तँ पूर्ण समर्थ छथि नहि। नहि जानि जे एकर बादो कतेको माए-बहीनक लाज लुटल गेल हएत। आ लुटल जाइए।

वास्तवमे एहि अपवित्र वृति, दृष्टि आ कृतिकेँ पवित्र बनाबए पड़त। आर मन, वचन, कर्मसँ पवित्र रहि सभसँ अपन बहीनक समान बर्ताव करए पड़त।

रक्षा बन्धनक रहस्यकेँ जानए पड़त, मानए पड़त। आजूक तारीखमे एहि बातक खगता अछि जे बहीनो आइक तारीखमे अपन भायसँ कोन प्रकारक रक्षा चाहैत छथि? तनक रक्षा, धर्मक रक्षा, सतीत्वक रक्षा आदि महत्वपूर्ण तत्व अछि।

आइ एकपेरिया धेने, चूप-चाप चलैत एसगरूआ बहीनकेँ एहि बातक सदिखन आशंका बनल रहैत छैक जे क्यो आसूरी प्रवृतिबला लोक रावण बनि ओकर लोक-लाजकेँ समाप्त ने कऽ दै। एहि लेल सभ बहीनक तरफसँ हम राखीक शुभ अवसरपर सभ भाइसँ दान स्वरूप ई लेबए चाहैत छी जे ओ अपन आसूरी प्रवृति, क्रोध, लोभ, मोह आदि दान कऽ दथि। जाहिसँ हम अवला बहीनकेँ ई बुझना जाएत जे हमर पवित्रता, हमर सतीत्व, हमर मान-मर्यादा सदिखन सुरक्षित अछि। आ हमरा एक-आधटा नहि अपितु संसारक सभ पुरूष भाय बनि हमर रक्षकक रूपमे सभठाम ठाढ़ छथि।

ओना परम-पिता परमात्मा सभ आत्माक पिता छथि। सबहक रक्षक पालक वएह छथि। हुनका समक्ष स्त्री-पुरूषक देहकेँ कोनो भेद नहि छै। एहि हेतु हम समस्त मैथिल आ मैथिली प्रेमीसँ हमर रक्षा-सिनेह रूपी बन्धन स्वीकार करू। परमात्मा अहाँक जीवनमे, शांति, शुभभावना, सिनेह, सहानुभूति, मधुरता पवित्रता आदि गुणसँ भरने रहथि। ई हमर शुभभावना अछि।

आऊ एहि अमुल्य पावनिमे आत्मीक राखी अपन-अपन गट्टापर बान्हि, आत्म चेतनाक टीका लगा आ मीठ-मीठ बोलक मधुरसँ अपन मन आ आत्माकेँ मीठ राखी।



ल मण्डदुर्गानन्द ::

टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने

तारीख 10/6/न रविदि 2012, निरमलीसँ पटना जेबाक हेतु, स्थानिय मिलानपथसँ संध्या पीतरकँ सुमरि-बजे सरकारी बस द्वारा गोसाइ 8, आरक्षित जगहपर बैसल। मनमे सदिखन देवपी-तरक यादि, ताकि यात्रा शुभ हुअए। निर्धारित समैसँ बस खुजल। भुतहा, नरहिया, फुलपरास होइत चनौरागंजमे काका श्री जगदीश प्रसाद) आदरक संग बैसाओल। हुनका छोड़क हेतु बेरमा गामक कँ गोर लागि (लमण्ड लेश्वर राउतकतौक लोक जेना कपि, लक्ष्मी दास, शिवकुमार मिश्रा, अखिलेश, सुरेश, मिथिलेश आदि आएल छलन्हि। राति भरि देवपीतरकँ सुमरैत तीन बजे -बैसलौं। पलेटफार्मकँ गमछासँ झारि भोरमे दुनू बापुत पटना पहुँचलौं। बससँ उतरि मुनलौं आकि आँखि सन आ रंग अरहुल सन। जाकि-डोका सन ओंघीसँ आँखि उठु प्रात-जे उठु काका उठौलन्हि भऽ गेल। से ने तँ नदीअ। तदी तरगरे फीर लि-र लगाबए पड़त। सएह कएल। आँखि भेलासँ सुलभ शौचालाइयोमे नम्मफरीच्छ रलौं। गामक बेरी दुनू बापुत नदी फि-बढ़ौल। बेरी सिड़ैत डेग शौचालय दिमि बनाओल दतमनि, जेकर अगिला मुँह थकुचल आ पछिला भाग चीरल। मुँहमे दऽ चारिये घुस्सा ऐ कातसँ ओइ कात धरि दऽ कुरूरकऽ आगू बढ़लौं। आचमनि-हक -ने एकर छैक। जे पहियासै छलाह जे चाहक दोकान केम्हर काका अखिएम्ह कातमे लास चाह पीब लैतौं तखन जे होइतै से होइतै। गाँधीमैदानक उत्तरवारिगि कऽ लग गेलौं। चुल् ऐ। तखन भरोस भेल। सहटिधुआँ होइत देखलिहि पजारनहि छल। ब्रेंचपर बैसेत दू गिलास चाहक आग्रह केलौं। समए साफ भऽ गेल रहैक। काका कहलनि जे से नै तँ कोनो टेक्सीबलाकँ ताबत भाँजि ने लिअ, जे ओ हवाइ अड्डा जाएत जौं जाएत तँ पाइ कत्ते लेत? एकटा मुँहसच्च आदमीकँ देखि हाक देलिऐ। आबि गछलक। भाड़ा एक साए लेत सेहो कहलक। चाह पीब दुनू बापूत टेक्सीमे बैसलौं, बैसिते विदा भेल। दुनू बापूत अनभुआरे रही। नै जानि हमरा कहैमे गलती भेल आकि ओकरा सुनैमे। ओ तँ हवाइ अड्डाक बदला मिठापुर बस अड्डा लऽ अनलक। आब तँ भेल तीतम्हा, ओ कहए जे नै सर हमरा तँ अहाँ बस अड्डा कहलौं, हवाइ अड्डा नै। से ने तँ हमरा भाड़ा दिअ आ हम जाएब। कनी काल तँ केनादन लागल, मुदा फेर ओकरे कहलिऐ बरनी जे लेबह से लिहह मुदा हमरा सभकँ हवाइ अड्डा उतारह। ओ कहलक ओतए जेबइ तँ और एक साए टाका लेब। ऐ तरहेँ दू साए रूपैआमे हवाइ अड्डा पहुँचलौं।

हवाइ अड्डामे जइठाम परम सिनेही श्रीमान् गजेन्द्र बाबूसँ साक्षात् दर्शन भेल। नमस्कार पाती भेलाक बाद बहुत बेसी उत्साहक संग हमरा लोकनिकेँ अपना गाड़ीसँ हवाइ अड्डाक भीतर लऽ गेलाह। लऽ जाइत जनौलन्हि जे हवाइ जहाजक यात्राक की केना निअम होइत छैक। गाड़ीसँ उतरलाक बाद गजेन्द्र बाबू हमरा दुनू बापुतक पाँच । हमहूँ हुनक फोटो अपना कैमरामे लेलौं। सात गोट फोटो खिचलन्हि-

मोबाइलक घड़ीमे सात बाजि गेल छल। हमरा लोकनि एकदोसरासँ फराक होबक - - बाबू अपना बासापर गेलाह आ हम दुनू बापूत अपन। गजेन्द्र.....मे आबितिस्थि अपन पहिचान पत्र लऽ नीक लोक जकाँ लाइनमे ठाढ़ भऽ गेलौं। जनीजाति जकाँ मोटरीयो जकाँ गरमि (पंजाब कमाइबला) याचोंटरी तँ बेसी छल नै आ ने पंजबि- परताल करा लेलाक -ये भेल। जाँचतो नहिक्कलक मोटा। तँए कोनो दिमासमे कम्म लौं। काकाकेँ कने चाहकबाद प्रतीक्षालय जा आरामसँ बैसि खगता बूझि आग्रह करैत अपनो सुतारलौं। ओना आदति भलहिं काकाकेँ छन्हि आ से नित्य दू बजे स्वयं बना कऽ पीबक, मुदा हमरा से नै, पहिनहि कहि आएल छी जे भरि रातुक जगरना छल। तँए प्रति कप चालिस टाका देबामे अखरल नै। ऐ तरहें किछु कालक पछाति पुन घोषणा भेल :आ फेर दुनू बापूत लाइनमे लागि हवाइ अड्डाक भीतर मैदानमे गेलौं। दुइयो डेग तँ ने होइतै तइले अनेरे एकटा बड़का बस छल। जइपर चढ़ि हवाइकऽ गहारिनि-गहारिमन नि ले भरिजहाज लग गेलौं। पहि- भीतर गेलौं। जहाजक सीढ़ीपर चढ़ि-हवा पीतरकेँ सुमरि-अपना देवता :देखलौं। पुन मुँहेपर सिलेब रंगक चारिटा बच्चिया नाक गतमे हाथ जोड़िचमका स्वा-भौह चमका- देलक जेना पढ़ौल सुगा म सर। आ भभा कऽ हँसिवेल्क -अंग्रेजीमे कहलक ने दुनू बापूत पहि हुअए। हवाइ जहाजमे सीट दुनू बापूतक एक्केठाम छल। सीट हेरि जहाजक भीतरक वातावरणक अवलोकन कएल। ए-हबाना लगए जेना भरि जहाजमे बरफ खसि रहल होइ आ तइपरसँ गमगम से करैत। बाहरमे जत्ते गर्मी भीतर - भऽ गेल। तेकर बाद दूटा ये कालक बाद मन एकदम्म शान्तओतबए ठंढा कनि मे दोहरौलक। जेकर भाव न्दीहि कहाँदन कहि-दैनअंग्रेजीमे कि बालक आबिवयस्क सँ आग्रहछल जे हमरा लोकनिकरैत कहल गेल जे आब ई हाबाजहाज अपना - नटक भीतर इ लेल उड़ान भरत। कुल तीन घंटा तीस मिनसँ ससमए मुम्बस्था अपना सीटपर राखल -अपना नपर पहुँचत। तँए अपने अपने लोकनिअपना स्था जहाज गुड़कए लगल। करीब -ली। सएह करइ गेलौं। हवाइ सँ डाँढ़ बान्हिबेल्ट

बीघा दसे गुड़कलाक बाद वाया मुँहे घूमि अपन दिशा आ दशा बना बड़ी जोरसँ गुड़कए लगल। गुड़कैत जहाज साफे कऽ धरतीकेँ छोड़ि-गुड़कैत एक्केबर हबा-र छु कालक बाद स्थिगेल। मुदा कि अकासमे उड़ए लगल। जी तँ सन् रहि ऐ।छु कतौ ने देखिया ई तँ किरे बल्लै तकलौं। आहिच्चाँभेल। खिड़कीसँ निसौंसे उज्जर जहाज उड़ल जा रहल छल।-उज्जर बादलेटा। बादलक संग हबा-

हबा। खएर ..जलखै भेटैत रहल मुदा बड़ मगह-टेमपर चाह-जहाजक भीतर टेम-अड़्डापर -इ हवाइसमे मुम्बपैंति-जहाज खुलल ओ एक-छोडू। नअ पाँचमे जे हबा पा-नटक बाद लोक सभ उतरए लगलाह। पाछूपहुँचलौं। करीब पनरह मिछू हमहूँ दुनू बापूत उतरलौं। उतरिते मुम्बइ हवाइगेल। सभटा दोर लगिचकबि अड़्डा देखि-करबाक लेल एकटा होटल कल्लौ ये। काकाक सह पाबितँ देखलो सुनलो नहि सामान लाइनमे लागि अड़्डापर आबि-हवाइ घूमि :साजन कऽ पुन-पहुँचलौं। भोजन चाक करा टीकट लऽ भीतर प्रवेश कएल-चेकौं। काकाक चाह पीबाक समए सेहो भऽ गेल रहनि। ई हमरा बूझल छल जे गाममे अपनेसँ बना साढ़े तीन बजेक लबधब पीबै छथिन। जहाज तँ चारि चालिसमे छल। हाथमे एक घंटा समए देखि एकये कालक न दुनू बापूत पीबलौं। कनिबीस दस टाकामे कि कप कौफी चारि-घोषणा भेल पटने जकाँ पछातिलाइनमे लागि मुम्बइसँ कोच्चि लेल भीतर जा बैसलौं। बैसिते अपन घरक गोसाइ आ देवमनमे आबए पीतरकेँ सुमरब सहजहि-पहुँचलौं समए होइत रहै छह लगल। पहुलके जकाँ सभ अनुभव करैत कोच्चि स। मोबाइलक सुइच ऑन केलौं होइते एकटा संदेश आएल जे अंग्रेजीमे छल चालि लीजेकर मैथि रहएल्लीत रावत दिहम प्रवीन कुमार सहयोगी मोहि -, उज्जर आ नील रंगक कमीज पहिर निकास द्वार लग ठाढ़ छी। हमरा दुनू बापूतकेँ धोतीकुर्ता --ओ पुछलनि देखि“अपने जगदीश प्रसाद मण्डल? हम प्रवीण कुमार। आउ अपनेक लोकनिक गाड़ी ठाढ़ अछि जे होटल छोड़ि देत।”

गाड़ीक चालक आगू बढ़ि दुनू बैंग लऽ सम्हारि कऽ रखलनि। दुनू बापूत गाड़ीमे बैसलौं आ गाड़ी आगाँ ससरल। करीब चालिस मिनटक उपरान्त एकटा दस मंजिला मकान पूर्णततवातानुकुलि :, गोकुलम पार्क होटल कोच्चि, लग रूकल। यूनीफार्ममे सजल दरमान होटलक दरबज्जा खोलि ठाढ़ छल। गाड़ीक ड्राइवर

बाहरक दरबज्जा खोललक। दुनू बापूत बहर भेलौं। दरमान झुकि कऽ स्वागत केलनि। भीतर गेलौं आकि नजरि एकटा अठारह बर्खक नवयौवना अति विलक्षण स्वभाववाली हिन्दी आ अंग्रेजीमे नीपुण अपन परिचए अंग्रेजीमे देलक। जेकर भाव छल, हम पूर्णिमा सैमसंग कम्पनीक तरफसँ सेवामे ठाढ़ छी। कहू हम अपनेक की मदति कऽ सकैत छी? पूर्णिमाक दुनू हाथ जोड़ब, निच्चा उज्जर तंग जीन्स आ ऊपर सुगापाखि रंगक टीसर्ट, नम्हरना छु लट दहिर कारी भौर केशक किनम्ह-लकोरक फड़ सनक दुनू ठोर लाल टुहटुह। भरिकातक छातीपर खसल। ति काजर। आँखि खूब नम्हरपोरगर ओगरी सभ जे कोनो नीक -र हाथ आ पोरगरनम्ह-मूर्ति जकाँ ठाढ़ छल। नीक चमकीबला नहरंगासँ रँगल। दुनू हाथ जोड़िकम्प का एतेक शालीन वालिवयस्क ते मन गद्‌गद् भऽ गेल। जे एहिदेखि! हमरा अपनो भाग्यपर गौरव भेल जे धनि हमर मिथिला, धनि हम मैथिल आ धन्य हमर मैथिली। जइ प्रतापे हम दुनू बापूत टैगोर साहित्य पुरस्कार प्राप्त करबाक हेतु मिथिलाक गाम बेरमा, भाया तमुरिया, जिला मधुबनीसँ चलि कोच्चि पहुँचलौं।

रिसेप्सनपर उचित आदरसाए छह केर कुंजी जे र चारि रूममे नम्बभावोपरान्त-एम कार्ड जका.टी.एँ छल। पूर्णिमा हमरा सबहक संग आइ ओइ कुंजीसँ रूम खोलल। संगे ओही कार्ड रूपी कुंजीकेँ एकटा दोसर खोह्लियामे पैसौलक तँ भरि घर इजोत पसरि गेल। दू बेडक रूप। उज्जर धप् या आदितोसक तकि-धप् गद्दा-डी.सी.क छल। सामने टेबुलपर एकटा एलधुनिअत्या, फोन आ चाह बनेबाक सभ सरमजाम छल। चाहक सरमजान देखिते काका तँ गद्‌गद् भऽ गेलाह कहलनि - “दुर्गानन्दजी, सभसँ पहिले एकटा चाह पीबू।” सएह कएल।

चाह पीबैत टीबी खोलि कने काल देखलौं। तात् पूर्णिमा मन पड़लीह हुनकासँ हमरा एकटा बेगरतो छल। ओ अपन नम्बर देने छलीह डायल केलौं पाँचे मिनटक पछातिजे यनिभीतर एलीह ओही अदाक संग। आग्रहपर बैसलीह। खगता कहलनि कने चार्ज होइतए। पूर्णिमा हर्षक संग हमर कैमराक बेटरी डॉन भऽ गेल अछि। आ ई कहैत बाहर जेबाक षयमे सेहो बता देलनिबेटरी लऽ रातुक भोजनक वि साए दूमे र चारिजे हम अही फ्लोरपर रूप नम्ब चाहलनि अनुमतिछी। अपने लोकनिकेँ कोनो खगता हुअए तँ निसंकोच बजा लेब। हम अहीं सबहक सेवार्थ :

हुँसबैत पूर्णिमा रूमसँ बाहर भेलीह। वाद कहैत दुनू ठोरकँ विआएल छी। धन्य
गुज भऽ गेल हुअए। -र गुजजली चल गेल हुअए आ रूम अन्हालागल एना जेना बि
थोड़ेकालक पछाति, काका मोन पाड़लनि जे भोजनो करबै? हम कहलियनि -
की।श्तुनि

अपनतीय तलपर पहुँचलौं। एक र दुनू बापूत भोजनक लेल द्विअपन कुर्ता पहि-
अलग टेबुल आ कुर्सी लागल। सभ -घुमा चारू कात देखलौं। अलग नजरि
याटा तोलि-ये टाटेबुलपर कनि, प्लेट, उज्जर धप्लासधप् गि-, पानिक बोतल आ
काँटा चम्मच राखल छल। कने काल धरि दुनू बापूत गुमसुम रहलौं। जे पूछि पूछि-
साब छल। खाइबला हि अपने परसि-खुआओत। मुदा ओतए तँ अपने परसि-परसि
बौस -ट लऽ दुनू बापूत आगाँ बढ़लौं। जे चीजबड़नी बड़ बेस। एकहक टा प्ले
टमे राखी आउठा अपनो प्ले-ऐ ओ एकाधटा टुकड़ी उठा छेलिन्हैचिकक्वोकँ
दियनि। मुदा जे अनचिन्हार चीजमे नै न्दीवौस छल तइमे पूछए पड़ए। सेहो हि-
लो आब ली कथे कोन जे मैथियो बुझबे ने करए। मैथि तँ किन्दीएक तँ हिकि
नक सभ सामग्री लऽ भोजन अपन पसि-अपन पाछि-बाइ करैए। तखन पूछि-बाइ-टाटा
पूछू से जुनिन्याकेलौं। भोजनक तँ वि, उत्तर भारतसँ लऽ दक्षिन भारतक सभ
किथुक पूर्ण बेवस्था छल। भरि पोख भोजन दऽ दुनू बापूत आगाँ बढ़लौं देखलौं जे
एकटा कराहीमे खीर सन किछु खाद्य पदार्थ छलैक। अपना जोगरक लेलौं। खाइते
मन गद्‌गद् भऽ गेल। तत्पश्चात आइसक्रीम लऽ भोजन सम्पन्न करिते रही ताबत्
मोहित रावत जी हमरा लोकनिक खोजचाल -करैत लग पहुँचलाह। हाल पुछाड़ि-
भेल। आराम करए गेलौं।



भीनसर तरगरे उठि नहा धो कऽ तैयार भेलौं। जलपान केलाक बाद दुनू बापूत होटलक निचला तलपर आबि सामाचार पत्र आदि देखि रहल छलौं तखने रेणुका वातरा जी एलीह। सबहक कुशलछेम- जानि आनन्दित भेलीह। एकदोसरक - मन दा भेलौं। हॉल देखिजे हॉलक लेल वि.ए पात भेल। आ हमरा लोकनि-चएपरि -त बैस पैघ हॉल। जइमे हजारकवातानुकुलि :हॉल पूर्णत.जे.गद्‌गद्‌ भऽ गेल। ए नासँ चढ़क । बेस ऊँचगर मंच। जइपर दहिबैस सकैत छथि द्वान लोकन्हिजार वि लेल आ वायसँ उतरक हेतु सीढ़ी बनल छल।

कथाकारक बैसैक बेवस्थाकार लोकनित्यसाहि-, मिडियाबलाक आ आमंत्रित अतिथिक सबहक अलगक नक तीन बजे पत्रकार लोकनि छल। दिअलग बेवस्था-

द्वानसंग भेँटवार्ता छल। एक कात सातो वि, कथाकार, उपन्यासकार आ कवि लोकनि आदिक बैसैक बेवस्था छल जिनका आगाँ नाओं लिखल नेमप्लेट छल। आही दीर्घामे रेणुका वात्रा सेहो बैसलीह। बेराबरी सभ विद्वान लोकनि अपनअपन - काका अपन पोथी संबंधी । तकर पछातिपोथीक एक झलक अंग्रेजीमे रखलनि न्न प्रकारक कैमराक फ्लैशसँभि। पूरा कक्ष विलीमे रखलनिचार मातृभाषा मैथिवि चमकि रहल छल जेना साओनजलोका चमकैत रहैत। बि रहि-भादवक बद्रीमे रहि- न्न प्रकारक प्रश्न लऽ लऽ पत्रकार भिसँ विद्वान लोकनिचार रखलाक बाद सभ विवि काक सह क पत्रिदेह प्रथम ई पाक्षिसँ हमहुँ विपड़ला। सौभाग्य लूझि लोकनि करबाक हेतत्वधिनिदकक प्रतिसम्पु उपस्थिति रही। आ पत्रकार लोकनिकेँ मैथिलीसँ हिन्दी आ अंग्रेजीमे भरि पोख संतोष प्रदान कएल। पाँच केम्हर दऽ कऽ बजलै सेहो नै बूझि पेलौं। सभ कियो एहॉलक सभाकक्षमे प्रवेश कएल। .जे. टरेचर अवार्डक कार्यक्रमन ग्रहण केलौं। आ शुरू भेल टैगोर लिअपन स्था-अपन। ई तेसर पुरस्कार समारोह छल जेकर आयोजन ऐबेर कोच्चिमे भेल रहए। जइमे विभिन्न भाषामे साहित्यक योगदान हेतु सातटा भारतीय भाषाकेँ चुनल गेल, अंग्रेजी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, नेपाली आ सिन्धी रहए। जे पुरस्कृत कएल गेल। कोच्चिक बारह जूनक संध्या सैमसंग इण्डिया आ साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्यमे स्वोत्तम योगदानक लेल सातो भाषाक लेखककेँ पुरस्कृत करबाक लेल तैयार छल। जेकर चयन साहित्य अकादेमीक पंचपरमेश्वर द्वारा भेल छल। एक - -छलाह तिऐ तरहँ उपस्थि :क लेल जे क्रमशभूतिझलक ओइ महान वि1श् .री अमिताभ घोष, अंग्रेजी, सी ऑफ पॉपिज, 2. श्रीमती शीलाकोलम्बकर, कोंकणी गैर्र, 3. श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, मैथिली, गामक जिनगी, 4. श्री ॲकिथम अच्युतम् नामबुदरी, मलयालममानाकालमअंथि -, 5. श्री एनहंकुंजमोहन सि ., मणिपुरी, एना कैंगे केनवा माटे, 6. श्रीमती इंद्रमणि दरनाल, नेपाली, कृष्णा कृष्णा आ म श्री 7 अर्जन हसीद, सिंधी, ना अएना ना।

ऐ कार्यक्रमक मुख्य अतिथि, डॉरापा मोइलीवि .एम ., ओभी कुरूप.एन., एम .पी. कुमाररेन्द्रवि, श्री अग्रहारा कृष्णमूर्ति, सचिव साहित्य अकादेमी दिल्ली आ श्री बीया एसिवेस्ट-साउथ .ओ.ई. सी एण्डपार्क प्रेसीडेन्ट .डी., मुख्य कार्यालय एचक्यू., सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स छलाह। कार्यक्रमक दौरान नोवेल पुरस्कारसँ पुरस्कृत

महाकवि रविन्द्रनाथ टैगोर केर संबंधमे अपन। चार रखलनि विअपन बहुमुल्य-कघोषि-कार्यक्रमक उद्‌ाक रूपमे साहित्य एवं कलाक दुनियाँक प्रसिद्ध टीएंकर .भी., मॉडल रजनी हरिदास द्वारा जबर्दस्त प्रस्तुति सबहक मनकेँ मोहि लेलक।

TAGORE LITERATURE AWARDS

HONOURING LITERARY EXCELLENCE

2011 Winner Profiles

MS. SHEELA KOLAMBKAR

Awarded for *Geera*

Language – Konkani

Genre – Short Stories

Ms. Sheela Kolambkar is a renowned writer, who has written several short stories, poem which have been translated in various languages such as English, Portuguese, French, M Telugu and Malayalam. She has been bestowed with Sahitya Akademi Award for 'Bhuin 'Bhangarachen Sukne' in the year 1997 and 2007 respectively. Ms Kolambkar's collection c is an eloquent display of the agonies faced by women in a male dominated socie demonstrates her prowess in describing the finer nuances of a woman's relationships with come in her life – a child, husband, friends, and even acquaintances and well-wishers. As female Konkani writers; Ms Kolambkar's path breaking writing has contributed immensely of the Konkani literature. Geera collection covers literary work of the author spanning over 2

MR. K. KUNJAMOHAN SINGH

Awarded for *Eina Kenge Kenba Natte*

Language – Manipuri

Genre – Short Stories

Mr. Kunjamohan's book containing 16 short stories and spread over 108 pages, displays the art of storytelling. In almost all the stories featured in the book, the contemporary situatio are beautifully portrayed in a language familiar to common people. N. Kunjamohan Singh is as a writer of short stories and he has also translated from Bangla into Manipuri, Rabindra famous novel 'Gora'.

MR. JAGDISH PRASAD MANDAL

Awarded for *Gaamak Jingi*

Language – Maithili

Genre – Short Stories

Mr. Jagdish Prasad Mandal is a well known writer with a Masters in Arts. His work sp novels, short stories, seed stories, long stories or poems that present vivid description o initiating resurgence in Maithili literature. First published in 2009, Gaamak Jingi is a colle short stories which depict different facets of village life. The stories here represent the joy pleasures and pain, agony and ecstasies of the life of people of these villages. The wa capture the nuances of language of men and women of different castes and classes makes this collection worthy of this award. Some of his other famous works includes r Maulail Gachhak Phool, Jingik Jeet, and Uthan Patan, anthology of poems like Indradha Gitanjali and Raiit Din & plays such as Compromise and Jhameliya Biyah.

कार्यक्रममे पुरस्कार वितरण हेतु उद्घोषणक पछाति विजेता विद्वान लोकनि मंचासीन होथि आ पुरस्कृत भऽ अपननपर आपअपन स्था-स आबथि। पुरस्कारक रूपमे गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोरक एकटा बेस किमती मूर्ति, एकटा चिक्कन साल एवं एकानबे हजार रूपैयाक चेक प्रदान कएल गेल। बीचयाक कैमरा डिबीच मि-लजी अपन श्री जगदीश प्रसाद मण्ड र पाबिजलोका जकाँ लौकैत रहल। पुरस्काबिनखल पोथी गामक जिलिगीक विषयसँ पूर्व पोथी प्रकाशक श्रुति प्रकाशनकेँ धन्यवाद दैत विस्तारसँ मातृभाषामे अपन वानगी प्रस्तुत कऽ मिथिला आ मैथिलीक मर्यादाकेँ बढ़ौलनि।

कार्यक्रमक समापन भरत नाट्यमक प्रसिद्ध नरर्तकी, कलाकार पद्मश्री शोभनाचन्द्र कुमार द्वारा भयंकर उत्साहपूर्ण स्तरीय नृत्यक संग भेल। पाँच बजे संध्यासँ दस बजे राति धरि बूझू जे छओ आंगुर घीऐमे छल जकर सफलताक श्रेय सुश्री रूचिका बत्ता, रेणुका भान, सैमसंग इण्डिया, बी । जे समस्तकेँ छन्हिपार्क आदि.डी. र/नम् रूपमे रहला आ बकोध्याकार्यक्रमक दौरान काग चेष्टाहलीह।

ऐ सबहक पश्चात हमरा लोकनि होटल आबि स्वरूचि भोजन कऽ आराम केलौं। प्रातलबैत गाड़ीमे बैसलौं। मुदा वादनक संग हाथ हिभने चारि बजे भोरमे अभि : नअड्डाक लेल प्रस्था-हवाइ । ताबत गाड़ी कोच्चि......अखनो ओ हमरा मने अछि बजैत यात-बजैत-दस कऽ चुकल छल। रात्रिाक सम्पूर्ण आनन्द लैत दुनू बापूत गाम बेरमागेलौं। गोधनपुर आबि-

दुर्गानंद मण्डल

२ टा विहनि कथा

१

पोस्टमार्टम

रामेश्वरबाबू गामक लब्धप्रतिष्ठित व्यक्ति, सभ तरहेँ सुखी-समपन्न, कथुक कमी नै। कनियाँ गामक प्राइमरी स्कूलमे शिक्षिका। छठम बेतन भेने दरमोहो बढ़ियाँ। अपने एकटा उच्च विद्यालयमे प्रधानाध्यापक पदपर वर्तमान कार्यरत। कुल मिला कऽ मासिक आमदनी लाखोसँ ऊपर! लहना-पातीसँ आमदनी अलगे। स्वयं जतए-कतौ रहलाह। प्रधानाध्यापक रहबाक कारणेँ औटी आमदनीक जोगार सदिखन लगौने रहैत छलाह। आन-आन काज करबाक लेल आरो शिक्षकगण। मुदा आरम-फारम भर्ती-काल शुल्कादिसँ उपरी आदमनी अपनहि जेबीमे। सहयोगी शिक्षक आ छात्रो सभसँ बननि नै। हप्ता दस दिनपर किछु-ने-किछु रमन-चमन होइते रहैत छलनि। तखने हुनकर मन ठीक-ठाक रहैत छलनि। कएक बेर कौमनरूम,शौचालय, बोड आदिक लेल तोड़फोर भेल, मुदा हुनका लेल धैनसन! एक दिनक समए छल। समैसँ घंटी लागल, प्रार्थना भेल, शिक्षक लोकनि अपन-अपन वर्गमे गेला।

रामेश्वरबाबूक सेहो कक्षा दसमे वर्ग छलनि। बच्चा सबहक आग्रहोपर वर्ग दसमे जेबाक लेल तैयार नै भेलाह तँ सभ बच्चा वर्गसँ निकलि हिनका ऑफिससँ खीचि बाहर आनि कहा-सुनीक बाद, लाते-मुक्के गत्र-गत्र फोड़ि देलकनि। आब कहबी परि...... 'अपने करनी, गै मुसहरनी' भऽ गेलनि।

प्रात भने गारजियन सभ बजाओल गेलाह। स्कूलपर बैसार भेल। मनधनबाबा मास्सैबसँ पुछलखिन-''मास्सैब, किएक हमरा लोकनिकेँ बैसौलौं अछि?''

रामेश्वरबाबू सभ बात कहलकनि। मनधनबाबा आँखि मुनने निचेनसँ सुनि उत्तर देलकनि- ''अहाँ अपने गुरू छी बच्चासँ समाज धरि शिक्षा देबक अधिकारी छी ओहो मात्र समाजे नहि सरकारोक नजरिमे। तखन....?''

२

प्रदूषण

आजुक भैतिकवादी युगमे विभिन्न प्रकारक संसाधनादिक उपभोगसँ मानव जीवन त्रस्त अइ। कतौ मिनटो भरिक लेल चैन नै। बढ़ैत जनसंख्या, गाड़ी-घोड़ा, रिक्शा-तांगा, जर-जनरेटरक आवाजसँ कान बहीर!शांतिपूर्ण ढंगसँ कम मीठ आवाजमे बाजब, स्वच्छ हवा लेब कठिन! फलस्वरूप नाना प्रकारक रोग-व्याधिक साम्राज्य पसरल अछि। घरे-घर नेना-भुटका सभ कोनो-ने-कोनो प्रकारक रोग-व्याधिसँ ग्रसित अछि। तात्पर्य, सुख लेल एतेक संसाधन होइतो कियो सुख-चैनसँ जीब नै रहल छथि।
दोसर दिस सहोदर होइतो सहोदराक संग भैयारी नै निभा दुश्मनी राखब, प्रेमसँ नै रहि झग्गर-झाटीमे फसि जाएब। ने सुखसँ अपने रहब आ ने दोसरकेँ रहए देब।

रोगहु पुछलक मोल्हुसँ- ‘‘भाय, तों तँ पढ़ल लिखल लोक छह। एकटा बात कहह औझका मनुखमे एतेक अलगाउ किएक?’’
मोल्हु बाजलाह- ‘‘से नै बुझहक, ऐ सबहक जड़ि बाहरी प्रदूषण नै, अपितु मनुखक भितरी प्रदूषण थिक।’’